महामति प्राणनाथ कृत कुलजम स्वरूप और इस्लाम धर्म

डॉ. अन्सारुल हक़ अन्सारी

डॉ० अन्सारुल हक़ अन्सारी द्वारा लिखित पुस्तक 'महामति प्राणनाथ कृत कुलजम स्वरूप और इस्लाम धर्म' हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में सर्वथा एक नूतन प्रयास है। इस संघर्षशील युग में मध्यकालीन समाज-सुधारकों में अग्रणी महामति प्राणनाथ जैसे संत कवि के विचारों के प्रचार और प्रसार की बड़ी आवश्यकता है जिससे 'वसुधैव कुटुम्बकम् की धारणा साकार हो सके।

—डॉ० रामकुमार वर्मा

डॉ० अन्सारी ने हिन्दू धर्म और इस्लाम धर्म की विश्व-धारणा के आधार पर महामति के इस विराट समन्वय को स्पष्ट करने में अपनी अथक शोध-साधना का परिचय दिया है और इस प्रकार वेद एवं कतेब का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए विश्व-धर्म—विश्व-मानवता—विश्व-संस्कृति के मार्ग को प्रशस्त किया है जो कि आज के युग की चरम आवश्यकता है। यही युगधर्म है।

—डॉ० माताबदल जायसवाल

मध्यकाल में सर्वधर्म-समभाव के सन्देशवाहक महामति प्राणनाथ के विचारों की आज के संघर्षशील युग में अत्यन्त उपादेयता है। उनके विचारों को प्रसारित करने वाला यह ग्रंथ हिन्दी-जगत् के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा।

— डॉ० नजीर मोहम्मद

महामति प्राणनाथ कृत कुलजम स्वरूप
और
इस्लाम धर्म

डॉ० अन्सारुल हक़ अन्सारी
एम० ए० (हिन्दी, अंग्रेज़ी), डी० फिल०

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

बाबा साहब डॉ० भीमराव अम्बेडकर

एवं

डॉ० राममनोहर लोहिया

को

श्रद्धांजलि सहित समर्पित

प्रकाशकीय

डॉ० अन्सारुलहक़ अन्सारी प्रणीत 'कुलजम स्वरूप और इस्लाम धर्म' एक ऐसा ग्रंथ है जिसमें सम्पूर्ण विश्व से धर्म, जाति, भाषा में अलगाव उत्पन्न करने वाले सभी प्रकार के बन्धनों को तोड़कर एक विश्व धर्म, विश्व संस्कृति तथा वसुधैव कुटुम्बकम् का मार्ग प्रशस्त करने का सन्देश निहित है।

मध्यकाल में सभी धर्मों के संदेशवाहक महामति प्राणनाथ के विराट ग्रंथ 'कुलजम स्वरूप' में हिन्दू, बौद्ध, इस्लाम और ईसाई धर्म आदि समस्त परम्पराओं को आत्मसात् करके सबका समन्वय बड़े अनूठे ढंग से किया गया है। इस महाग्रंथ और इस्लाम धर्म की विशेषताओं का अध्ययन करके डॉ० अन्सारी ने मानव-जगत् को भक्ति, ज्ञान एवं कर्म के मार्ग का जो वास्तविक सन्देश है, उसे शोधदृष्टि से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उदात्तता एवं सहिष्णुता के सन्देशों के फलस्वरूप मानव सामाजिक कुरीतियों से निष्कृति पाकर सामासिक संस्कृति का संवर्द्धन और सामाजिक सौहार्द के प्रसरण का प्रयास कर सकता है।

इस प्रकार यह ग्रंथ आज के युग की पुकार के अनुरूप है और डॉ० अन्सारुलहक़ अन्सारी का प्रयास सराहनीय है।

इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में जिन विद्वानों ने उदारतापूर्वक सहयोग प्रदान किया है, हिन्दुस्तानी एकेडेमी उनके प्रति आभारी है।

विश्वास है, इस ग्रन्थ से साम्प्रदायिक एकता और सर्वधर्म समभाव के मूल मंत्र को समझने की दिशा-दृष्टि प्राप्त होगी।

हरिमोहन मालवीय
सचिव

६ जून, १९९४
हिन्दुस्तानी एकेडेमी,
१२-डी, कमला नेहरू रोड,
इलाहाबाद-२११००१

सम्मति—१

डॉ० अन्सारुलहक़ अंसारी द्वारा लिखित पुस्तक 'महामति प्राणनाथ कृत कुलजम स्वरूप और इस्लाम धर्म' हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में सर्वथा एक नूतन प्रयास है। इस संघर्षशील युग में मध्यकालीन समाज-सुधारकों में अग्रणी महामति प्राणनाथ जैसे सन्त कवि के विचारों के प्रचार और प्रसार की बड़ी आवश्यकता है जिससे वसुधैव कुटुम्बकम् की धारणा साकार हो सके।

इस विचार को ध्यान में रखते हुए डॉ० अंसारी ने रेल-सेवा में रहते हुए भी अत्यन्त योग्यतापूर्ण शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया है जो इलाहाबाद विश्वविद्यालय के डी० फिल्० परीक्षकों द्वारा प्रशंसापूर्ण शब्दों में प्रस्तुत हुआ है तथा इस पर इन्हें डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि प्राप्त हुई है।

मुझे इस बात से हार्दिक प्रसन्नता है कि इन्होंने मेरे सुझावों को अपनी पुस्तक में विशेष महत्त्व दिया है।

डॉ० अन्सारुलहक़ अन्सारी बड़े मेधावी एवं परिश्रमी हैं। मेरा अनुरोध है कि इन्हें इनके रेल विभाग द्वारा समुचित सम्मान एवं प्रोत्साहन प्रदान किया जाय जिससे आगे भी हिन्दी साहित्य को डॉ० अन्सारी का योगदान प्राप्त होता रहे।

मैं इनके उज्ज्वल भविष्य की हृदय से कामना करता हूँ।

४, प्रयाग स्ट्रीट
इलाहाबाद–२११००२
दिनांक १६–३–६०

डॉ० रामकुमार वर्मा
अध्यक्ष
हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद

सम्मति—२

डॉ० अन्सारुलहक़ अन्सारी ने मेरे निर्देशन में "महामति प्राणनाथ कृत कुलजम स्वरूप और इस्लाम धर्म" नामक महत्त्वपूर्ण विषय पर इलाहाबाद वि० वि० से डी० फिल्० की उपाधि अर्जित की है। समन्वय भारतीय संस्कृति की आत्मा रहा है। मध्यकालीन भारतीय इतिहास के औरंगजेब-युग में अवतरित महामति प्राणनाथ ने हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई सभी जातियों, धर्मों एवं संस्कृतियों में समन्वय स्थापित किया। महामति प्राणनाथ ने वेद-उपनिषद्, गीता, बाइबिल तथा कुरान के अध्ययन के आधार पर इन धार्मिक ग्रंथों की मौलिक एकता का प्रयास किया।

डॉ० अन्सारी ने हिन्दू धर्म और इस्लाम धर्म की विश्व-धारणा के आधार पर महामति के इस विराट समन्वय को स्पष्ट करने में अपनी अथक शोध-साधना का परिचय दिया है और इस प्रकार वेद एवं कतेब का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए विश्व-धर्म—विश्व-मानवता—विश्व-संस्कृति के मार्ग को प्रशस्त किया है जो कि आज के युग की चरम आवश्यकता है। यही युगधर्म है।

केन्द्र सरकार में कार्यरत होते हुए भी डॉ० अन्सारी ने जितना अथक एवं मौलिक परिश्रम किया है, वह दुर्लभ एवं अद्वितीय है। मेरी कामना है कि हिन्दी जगत् एवं इनका विभाग इनके शोधकार्य का समुचित मूल्यांकन करें और भविष्य में इनका उत्साह-वर्धन करें।

मैं हृदय से डॉ० अन्सारी के सुखी जीवन एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

२५ बी., सी. वाई. चिंतामणि रोड
दरभंगा कालोनी, इलाहाबाद

डॉ० माताबदल जायसवाल
पूर्व प्रोफेसर
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
अध्यक्ष
महामति प्राणनाथ महाविद्यालय
बाँदा

सम्मति—३

डॉ० अन्सारुलहक़ अन्सारी द्वारा प्रस्तुत ग्रंथ 'महामति प्राणनाथ कृत कुलजम स्वरूप और इस्लाम धर्म' के प्रकाशित होने के सम्बन्ध में जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

मध्काल में सर्वधर्म-सम्भाव के संदेशवाहक महामति प्राणनाथ के विचारों की आज के संघर्षशील युग में अत्यन्त उपादेयता है। उनके विचारों को प्रसारित करने वाला यह ग्रंथ हिन्दी-जगत् के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा।

डॉ० अन्सारी द्वारा प्रणीत 'कुलजम स्वरूप और इस्लाम धर्म' के तुलनात्मक अध्ययन से देश में स्नेह, समता और सौहार्द्र का वातावरण बनने में यह ग्रंथ अत्यन्त सहायक होगा।

मैं डॉ० अन्सारुलहक़ अन्सारी के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूँ।

डॉ० नज़ीर मुहम्मद
पूर्व प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़

प्राक्कथन

सम्पूर्ण जगत् के इतिहास में भारत के मध्यकालीन युग का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अनेक सूफी सन्त एवं कवियों ने भारत के मध्यकालीन इतिहास में रचनात्मक योगदान प्रस्तुत किया है। सामाजिक एवं साहित्यिक अनुशीलन में इन्हीं महापुरुषों का विशिष्ट योगदान समाहित है।

भक्ति आन्दोलन, सूफी मतवाद—इस्लाम धर्म की विशिष्ट उत्तेजना तथा ईसाई धर्म की प्रेम-साधना ने मध्ययुगीन भारत में सर्वथा उथल-पुथल की विचित्र स्थिति उत्पन्न कर दी थी।

महामति प्राणनाथ का आविर्भाव ऐसे ही समय में हुआ जब दिल्ली के सिंहासन पर मुगल सम्राट औरंगजेब की हुकूमत अपनी चरम सीमा को पार कर रही थी। धार्मिक कट्टरता, जाति-पाँति तथा ऊँच-नीच का भेद साधारण बात हो गयी थी।

सम्पूर्ण मानव जाति को संकुचित विचारधारा की सीमा से आगे निकाल कर सर्वधर्म-समानता का नारा महामति प्राणनाथ ने ही सर्वप्रथम बुलन्द किया तथा मनुष्य को सामाजिक प्राणी होने के नाते सभी को एक ही परमात्मा की सन्तान बतलाकर उसे बराबरी का दर्जा (स्थान) प्रदान किया।

इस प्रकार राष्ट्रीय चेतना की भावना आज से ३०० वर्ष पूर्व ही महामति प्राणनाथ ने जगाई जबकि औरंगजेब के विरुद्ध बोलना अपनी मृत्यु को दावत देने के समान कार्य था।

सर्वप्रथम मस्जिद से अज़ान की आवाज सुन कर महामति प्राणनाथ चौंक पड़े और 'लाइलाह इल्लल्लाह' की वाणी में, आप को समस्त मानव जाति का एक ही 'इलाह' (पूज्य) दिखाई दिया और आप कुरान शरीफ का गहन अध्ययन करने में तल्लीन हो गये।

कुरान शरीफ के अन्तर्गत इस्लाम धर्म की सभी प्रमुख विशेषताएँ सुस्पष्ट हैं और समस्त मानव जाति को एक सूत्र में बाँध लेने की पूर्ण क्षमता भी है। कुरान शरीफ का गहन अवलोकन कर लेने के पश्चात् महामति प्राणनाथ से औरंगजेब प्रभावित भी हुआ। परन्तु तत्कालीन काज़ी-मुल्ला तथा चाटुकार पदाधिकारियों ने तब महामति प्राणनाथ से साक्षात्कार करने से रोक दिया। विक्षिप्त होकर महामति प्राणनाथ ने एक दूसरी योजना बनाई और वेद-कतेब का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए **"कुलजम स्वरूप"** की रचना करने में लीन हो गये।

कबीर ग्रन्थावली; गुरु ग्रन्थ साहिब तथा अन्य साहित्यिक ग्रंथों की अपेक्षा महामति प्राणनाथ कृत कुलजम स्वरूप में काव्य-तत्त्व अधिक मुखरित हुए हैं।

इस महाग्रंथ के अन्तर्गत **'सनन्ध'**, **'खुलासा एवं कयामतनामा'** जैसे उपग्रंथ में वेद और कतेब के मार्मिक एवं सारगर्भित काव्य तत्त्व-विद्यमान हैं। हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई तथा संसार के सभी मानव-जाति के लिए कुलजम-स्वरूप मार्ग प्रशस्त करता है और वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को साकार करता है।

प्रणामी सम्प्रदाय तथा प्राणनाथ मिशन द्वारा अनेक विद्वान् महामति प्राणनाथ पर अनेक प्रकार के रचनात्मक एवं शोध कार्य कर रहे हैं।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत शोध विषय (**महामति प्राणनाथ कृत कुलजम स्वरूप और इस्लाम धर्म**) अत्यन्त नवीन है। डॉ० माताबदल जायसवाल के निर्देशन में प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध अमन; शान्ति तथा धार्मिक एकता के मार्ग में एक नई उपलब्धि है। यदि साहित्य के मर्मज्ञ एवं विद्वान् पाठक हमारे इस प्रयास से सन्तुष्ट होंगे तो हम अपना परिश्रम सार्थक समझेंगे।

शोध-प्रबन्ध की सामग्री दस अध्यायों में विभक्त है जो अग्रलिखित है—

प्रथम अध्याय : महामति प्राणनाथ : जीवन-वृत्त और व्यक्तित्व ।

द्वितीय अध्याय : कुलजम स्वरूप और उसकी प्रमुख विशेषताएँ ।

तृतीय अध्याय : इस्लाम धर्म और उसकी प्रमुख विशेषताएँ ।

चतुर्थ अध्याय : इस्लाम धर्म के जन्मदाता ह० मु० सल्ल०: जीवन-वृत्त, व्यक्तित्व एवं कृतित्व ।

पंचम अध्याय : कुरान शरीफ और उसकी विशेषताएँ ।

षष्ठ अध्याय : कुलजम स्वरूप और इस्लाम धर्म : पारस्परिक अध्ययन (उपास्य, नाम प्रकृति, स्वरूप गुण तथा कार्य के अनुसार)

सप्तम अध्याय : उपासना या इबादत का स्वरूप (भक्ति-ज्ञान-कर्म के अनुसार)

अष्टम अध्याय : नैतिक एवं सामाजिक दर्शन (माया और इब्लीस)

नवम अध्याय : मोक्ष अथवा नजात तथा जागनी का स्वरूप ।

दशम अध्याय : उपसंहार ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को पूर्ण करने में जो सफलता मुझे मिली है, उसका पूर्ण श्रेय हमारे गुरु एवं शोध-निर्देशक डॉ० माताबदल जायसवाल को है जिन्होंने अपने व्यस्त जीवन का बहुमूल्य समय प्रदान किया। मैं आजीवन उनका आभारी रहूँगा।

हज़रत मौलाना मुश्ताक अहमद निज़ामी व हज़रत मौलाना हसन निज़ामी का मैं शुक्रगुज़ार हूँ जिन्होंने इस्लाम धर्म की विशिष्ट पुस्तकों का अवलोकन करने में मेरी सहायता की। डॉ० रणजीत कुमार साहा, श्रीमती विमला मेहता (नई दिल्ली) के साहित्य से लिये गये सहयोग के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ। डॉ० रामकुमार वर्मा तथा डॉ० हरदेव बाहरी जी के प्रति मैं विशेष आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर हमारा उत्साहवर्धन एवं मार्ग-दर्शन किया। प्रारम्भिक शिक्षा के दौरान गोमती इण्टर कालेज, फूलपुर के तत्कालीन प्रधानाचार्य श्री रमेशकुमार श्रीवास्तव तथा श्रद्धेय श्री बजरंग बहादुर सिंह (पाली) जी का में आजीवन ऋणी रहूँगा जिन्होंने मेरी उच्च शिक्षा का मार्ग प्रत्येक रूप से प्रशस्त किया। श्री अज़ीज़ अख्तर

प्रधानाचार्य, श्री हसीन अहमद उप-प्रधानाचार्य तथा स्व० मुहम्मद इदरीस अन्सारी भूतपूर्व प्रधानाचार्य, विजयलक्ष्मी पण्डित इण्टर कालेज, फूलपुर का स्नेह विशेष स्मरणीय है।

इनके अतिरिक्त मण्डल रेल प्रबन्धक कार्यालय के उन सभी अधिकारियों एवं सहयोगी भाइयों के प्रति मैं अपना विशेष आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से मेरी सहायता की है।

तत्पश्चात् अपने पिता स्व० रहमत उल्ला अन्सारी का आजीवन ऋणी रहूँगा जिन्होंने अपने अथक परिश्रम से मुझे शिक्षा दिलाई और उच्च शिक्षा ग्रहण करने की प्रेरणा प्रदान की। ७ अगस्त, सन् १६८८ को एक बस-दुर्घटना में अचानक उनकी मृत्यु हो गयी, खुदा उन्हें जन्नत का अधिकारी बनायें —आमीन !

विशेषकर मैं अपनी माता "स्वर्गीया आमना खातून" का उल्लेख करना चाहता हूँ जिन्होंने प्रत्येक समय में हमें प्रोत्साहन प्रदान किया और तमाम कठिनाइयों का सामना करते हुए लक्ष्य तक पहुँचने में मेरी असाधारण सहायता की जिससे मुझे आत्मिक एवं वास्तविक प्रेरणा मिलती रही। उनके जीवन-काल में हमारा शोध-प्रबध पूर्ण नहीं हो सका, इसका मुझे आजीवन खेद रहेगा। २६ मई, सन् १६८७ को उनका स्वर्गवास हुआ, खुदा उन्हें जन्नत में जगह दें—आमीन !

विशिष्ट शिक्षा-ग्रहण के सम्बन्ध में मेरे बड़े भाई डॉ० अब्दुल हई अन्सारी तथा मास्टर अब्दुल हक़ अन्सारी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। मैं अपने दोनों भ्राताओं का आजीवन आभारी एवं ऋणी रहूँगा जिन्होंने हर सम्भव तरीके से मेरा मनोबल बढ़ाया तथा आर्थिक, मानसिक एवं शारीरिक सभी रूप में मेरी सहायता की तथा पुत्रवत् स्नेह प्रदान करके बड़े भाई होने का पूर्णतया फर्ज अदा कर दिया जो अपने आप में अद्वितीय एवं बेजोड़ है। उन्हीं के प्यार एवं दुलार ने मुझे शोधकार्य की ओर प्रेरित किया। अतः मेरी सफलता का सम्पूर्ण श्रेय मेरे बड़े भाइयों को ही प्राप्त होगा।

जीवन के समग्र धर्म का निर्वाह करने हेतु एक साथी के रूप में 'पत्नी'

का विशिष्ट स्थान होता है जिसका अनुपालन हमारी सहधर्मिणी श्रीमती ज़ुबैदा बेगम अन्सारी ने भी भली-भाँति किया तथा मेरे शोधकार्य में उनका भी योगदान सराहनीय है।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपने परिवार के समस्त सदस्यों के प्रति आभार सहित धन्यवाद प्रकट करता हूँ जिन्होंने प्रत्येक स्थल पर मेरी सफलता की कामना की है।

अन्त के पूर्व, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद के अध्यक्ष डॉ० जगदीश गुप्त, सचिव श्री हरिमोहन मालवीय, स० स० डॉ० रामजी पाण्डेय एवं श्री कैलाश कल्पित जी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिनसे पुस्तक-प्रकाशन में विशेष सहायता मिली।

२६ ज़िलहिज्जा १४१४ हिजरी — अन्सारुलहक़ अन्सारी

सौर २७ ज्येष्ठ, वि० स० २०५१

तदनुसार १० जून, १६६४ ई०

विषय-सूची

महामति प्राणनाथ--जीवन-वृत्त और व्यक्तित्व

अध्याय १

महामति प्राणनाथ–जीवन वृत्त और व्यक्तित्व

मध्य युग की साधारण धर्म-प्राण जनता को सिद्धादि की विविध वीभत्स साधनाओं के दलदल से तथा नाथों की नीरस यौगिक प्रक्रियाओं के पंकिल गर्त से बाहर निकालकर समस्त मानव-जाति को एक ही मार्ग पर चलने, एवं निःस्वार्थ भक्ति की अलौकिक एवं पावन पयस्विनी में अवगाहन कराने का पूर्ण श्रेय, **महामति प्राणनाथ जी** को है।

निष्पक्ष एवं निःस्वार्थ एकता की भावना, उनके अन्तर्जगत की अन्यतम विभूति थी, तथा गुरु श्री **देव चन्द** जी की दिव्य देन थी।

इस अद्वितीय तथ्य को पाकर १२ वर्षीय **मिहिर राज** श्री मेहेराज से परिवर्तित होकर **महामति प्राणनाथ** के भव्य रूप में सुशोभित हुए।

भारत में भक्ति की अलौकिक धारा अनादिकाल से बह रही है, मध्यकाल में तो मानो वह उच्छृंखल होकर उमड़ चली थी।

सम्भवतः उसे मर्यादित करने के लिए ही उनके आचार्यों ने विविध **दार्शनिक वादों** की प्रतिष्ठा की थी। ऐसे ही आचार्यों में श्री देव चन्द जी के प्रमुख शिष्य श्री **प्राणनाथ** का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

प्राणनाथ जी ने समस्त धर्मावलम्बियों को एक सूत्र में बांधने का कार्य इस सरलता से किया जो साधारण मानव जाति का सदैव मार्ग दर्शन करता रहेगा।

एकेश्वरवाद में अटूट विश्वास प्रकट करते हुए **वेद** और **कतेब** दोनों को एक सूत्र में पिरो देने वाली मधुर **तारतम वाणी** महामति प्राणनाथ द्वारा लिखित "कुलजम स्वरूप" महाग्रंथ में विभिन्न अलौकिक छवि धारण किए हुए हमारे सम्मुख दृष्टिगोचर होती है।

कुलजम स्वरूप द्वारा "**मानव धर्म**" की सुदृढ़ नींव डालने में प्राणनाथ पूर्णतः सक्षम प्रतीत होते हैं।

जन्मस्थल एवं जन्मतिथि

विभिन्न प्रमाणों एवं साक्ष्यों के अनुसार महामति प्राणनाथ जी का जन्मस्थल हल्लारपुर नामक जनपद के नवतनपुरी नगर में माना गया है जो कि वर्तमान समय में जामनगर काठियावाड़ के नाम से प्रसिद्ध है।

जन्मतिथि के विषय में श्री लालदास जी की "बीतक" तथा अन्य 'बीतकों' से महामति प्राणनाथ की वास्तविक जन्मतिथि पर प्रकाश डाला गया है।

कृष्ण चतुर्दशी विक्रम सम्वत् १६७५ भाद्रपद रविवार ६ सितम्बर १६१८ ई० को दोपहर के समय आप इस अंधकारमय संसार को ज्ञान के प्रकाश से प्रज्जवलित करने हेतु अवतरित हुए। जैसा कि निम्न दोहे से विदित है।

संवत् सोले से पंचहत्तरा, भादों बदी चौदस नाम।
पो होंर दिन बार रबी-प्रकटे धनी श्री धाम।।

लाल दास बीतक प्रकरण ७—७१

बाल्यावस्था एवं पारिवारिक जीवन

महामति प्राणनाथ के सम्बन्ध में भारतीय संस्कृति एवं इतिहास मौन सा दिखाई पड़ता है। यह एक विचित्र विडम्बना है। ऐसे युग पुरुष के बाल्यकाल एवं उनकी छवि को दर्शाने का समय तत्कालीन इतिहासकारों के पास नहीं था। श्री लाल दास जी कृत "बीतक" एवं श्री मुकुन्द दास कृत "बीतक" से महामति प्राणनाथ की बाल्यावस्था का कुछ ज्ञान होता है।

महामति प्राणनाथ के पिता का नाम श्री केशव ठाकुर था जो लोहड़ा जाति के क्षत्रिय थे तथा जाम नगर के तत्कालीन प्रधानमंत्री थे। माता का नाम श्रीमती धनबाई था जिनका असमय ही देहान्त हो गया था।

प्राणनाथ जी का प्रारम्भिक नाम मेहेराज अथवा मिहिरराज ठाकुर था। भाइयों में क्रमशः स्यामल, गोबरधन तथा हरवंश बड़े थे तथा ऊधव आप से छोटे थे। गोबरधन जी श्री मेहेराज को अधिक प्रेम करते थे तथा अपने साथ उन्हें विभिन्न अनुष्ठानों में भी ले जाया करते थे। गोबरधन जी श्री देवचन्द जी के अनन्य भक्त थे।

एक बार उन्हीं के साथ श्री मेहेराज जी नौतनपुरी (जामनगर) में श्री देवचन्द जी के दर्शन हेतु गये। उस समय श्री मेहराज जी की आयु केवल १२ वर्ष २ मास की थी। प्रथम मिलन में ही बालक श्री मेहराज ठाकुर ने गुरु के दिव्य प्रकाश में एक अनोखे सुख का अनुभव प्राप्त किया। साथ ही श्री देवचन्द जी भी श्री मेहेराज ठाकुर के अन्त:करण की विशेषताओं से अवगत हुए।

आपसी आकर्षण के विकास में गुरु-शिष्य का रूप धारण किया तथा श्री देवचन्द जी ने श्री मेहराज ठाकुर को अपने आश्रम में तारतम्य की दीक्षा दी।

तत्पश्चात् श्री मेहेराज ठाकुर गुरु श्री देवचन्द जी के अनन्य भक्त बन गये तथा उन्हीं के साथ रहने में सुख का अनुभव करने लगे।

गुरु श्री देवचन्द जी एवं दीक्षा

महामति प्राणनाथ के दीक्षा गुरु का नाम श्री देवचन्द था। उनका जन्म सिन्ध में "उमरकोट" नामक स्थान पर ११ अक्टूबर सन् १५८१ में हुआ था। आप एक सम्पन्न कश्चप (विवादास्पद कायस्थ) परिवार में उत्पन्न हुए थे। श्री देवचन्द जी के पिता का नाम श्री मतू मेहता और माता का नाम सुश्रीमती कुँवरीबाई था। श्री देवचन्द माता-पिता के इकलौते पुत्र थे। इसी कारण वे पूजा-पाठ में भी माता-पिता के साथ-साथ उपस्थित रहते थे।

साधारण बालकों की भांति खेल-कूद में श्री देवचन्द की रुचि बहुत कम थी; माता जी आपकी वैराग्यवृत्ति से अत्यधिक चिन्तित रहती थीं। ५ वर्ष की आयु में ही श्री देवचन्द एक दार्शनिक की भांति कार्यव्यवहार करने लगे थे।

"मैं कौन हूँ ? यह संसार क्या है ? हम कहाँ से आये हैं ? परमेश्वर का निवास कहाँ है ?" इत्यादि गूढ़ विषयों के प्रति वे गहराई से चिन्तन करने लगे थे। १३ वर्ष की आयु में श्री देवचन्द जी अपने पिता श्री मतू मेहता के साथ व्यापार के सिलसिले में भोज नगर गये। पिता अपने व्यापारिक उलझनों में व्यस्त रहे, परन्तु बालक देवचन्द विभिन्न मन्दिरों में अपने प्रश्नों का उत्तर ढूंढ़ते रहे।

कुछ ही समय के पश्चात् पिता के साथ वे उमरकोट लौट आये। परन्तु आपका मन भोजनगर के प्रति आकर्षित हो गया तथा वे पुनः भोजनगर जाने के लिए उत्सुक हो गये। १६ वर्ष की अल्पायु में वह स्वयं भोजनगर जाने के लिए अकेले तैयार हुए। परन्तु कार्य बड़ा कठिन एवं दुर्लभ था। उस समय प्रायः लोग काफ़िले के रूप में ही दूर की यात्रा किया करते थे।

श्री देवचन्द एक काफ़िले के सरदार से मिले, उससे अनुनय-विनय भी किया, परन्तु सरदार उन्हें साथ ले जाने में सहमत नहीं हुआ। परन्तु वे निराश नहीं हुए तथा अकेले ही भोजनगर जाने की ठान ली। काफ़िला तो बहुत आगे निकल गया था, और उनके निशान (चिह्न) तक का मिलना दुर्लभ हो रहा था।

बालक देवचन्द का मन बैठने लगा और वह तेजी से आगे की ओर बढ़ते जा रहे थे—सहसा, बालक देवचन्द को एक हथियारबन्द व्यक्ति दिखाई पड़ा, डाकू समझकर वे भयभीत हो गये। इससे पहले कि वे कुछ बोलते, बालक देवचन्द के पेट में भयंकर दर्द हुआ और वे सहम कर रुक गये। आगन्तुक ने समीप आते हुए पूछा—तुम कौन हो ? और कहाँ जा रहे हो ? बालक देवचन्द ने उन्हें अपने गन्तव्य से अवगत कराया तथा सारी व्यथा सुना दी। उस व्यक्ति ने बालक देवचन्द को एक पिछौड़ी पर लेट जाने को कहा और उनके पैरों के शूल (दर्द) को तत्काल समाप्त कर उन्हें अपने साथ-साथ चलने को कहा।

सत्गुरु की विशिष्टता का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा "तुम जिस काफ़िले के लिए जल्दी-जल्दी भागते हुए जा रहे थे, वह देखो, सामने दिखाई पड़ रहा है।" इतना कह कर वह विशिष्ट व्यक्ति शून्य में अन्तर्धान हो गया।

सामने वास्तव में वही काफ़िला था। जो बारात उमरकोट से चली थी, वह अभी रास्ते में ही भोजन बनाने आदि की तैयारी कर रहे थे। अन्तर्धान होने वाले व्यक्ति के विषय में बालक देवचन्द सोचने लगे। उन्हें स्वतः आभास हुआ कि "मेरी गठरी उठाकर चल रहा व्यक्ति विशेष और कोई नहीं। वह तो मेरे परमेश्वर ही हो सकते हैं। जिन्होंने इस विषम परिस्थिति में मेरी सहायता और रक्षा करके इस दुर्लभ कार्य को अति सरल बना दिया। वह तो मेरे अंग-अंग में समाये हैं। वह इतने भावुक हुए कि फूट-फूट कर रोने लगे।

परमात्मा की असीम कृपा तथा उनके प्रगाढ़ प्रेम पर बालक देवचन्द का दृढ़ विश्वास हो गया। इस प्रकार बारात के साथ अब देवचन्द जी भी हो गये तथा भोजनगर में प्रवेश किया। परन्तु बारात के साथ वह उमरकोट नहीं लौटे।

श्री देवचन्द अब असंख्य साधुजन, विशाल मन्दिर और मठों के बीच इतने रम गये कि भोजनगर उनका निवास स्थान हो गया। वे रूढ़ियों तथा अन्धविश्वासों के बीच बहुत समय तक संघर्ष करते रहे और मन की शान्ति का मार्ग खोजते रहे, अनेक महापुरुषों से वे प्रश्न करते—

"मैं कौन हूँ ? जीवन का उद्देश्य क्या है ?"

"परमात्मा को किसने देखा है ?" तथा "उसे प्राप्त करने का उपाय क्या है ?"

उक्त प्रश्नों के उत्तर अत्यन्त कठिन थे। श्री देवचन्द भटकते हुए एक दिन स्वामी हरिदासजी से जा मिले। स्वामी हरिदास जी ने उन्हें प्रेमपूर्वक अपने पास रख लिया तथा माता-पिता के पास श्री देवचन्द की उपस्थिति की सूचना भेजी। श्री मतू मेहता और कुँवरी बाई जी अपने प्रिय लाडले पुत्र के बिना **मृत-शैया** पर जा पहुँचे थे।

श्री देवचन्द की उपस्थिति का समाचार पाकर वे अपना सर्वस्व इकट्ठा कर सदैव के लिए उमरकोट छोड़ने का निश्चय कर लिया और भोजनगर आ गये।

श्री देवजन्द जी की माधुर्य-भक्ति और घोर लगन को देख कर **स्वामी हरिदास जी** ने उन्हें दीक्षा देने का निश्चय कर लिया। उस समय श्री देवचन्द की आयु २० वर्ष छः मास थी। राधाबल्लभी सम्प्रदाय के अन्तर्गत दीक्षा के समय सिर मुंड़ाना आवश्यक होता है। संयोग से उसी दिन उनके माता-पिता उनके विवाह का मुहूर्त भी निकाल चुके थे। उसी दिन पुत्र को भद्र भेष में देखकर माता-पिता को बहुत दुःख हुआ। श्री देवचन्द जी अपने विवाह के विषय में सुनकर हँसने लगे। उन्होंने कहा—

"मेरा विवाह तो '**माधव**' से हो चुका है, आप लोग अब किससे मेरा विवाह करेंगे ?" परन्तु इन बातों के पश्चात् भी उन का विवाह लीला बाई नामक सुयोग्य कन्या के साथ सम्पन्न हो गया। जो श्री देवचन्द

की सदैव सहायक सिद्ध हुईं, और परमात्मा के प्रेम में कभी बाधक नहीं बनीं ।

श्री देवचन्द जी स्वामी हरिदास जी के पास जाते रहे तथा निःस्वार्थ भक्तिभाव का परिचय भी देते रहे । स्वामी हरिदास जी ने अपनी अलौकिक प्रतिभा के आधार पर श्री देवचन्द जी को परखा, और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि श्री देवचन्द एक असाधारण प्रतिभा वाले महापुरुष हैं ।

मन्त्र और विवाह के बीच श्री देवचन्द की साधना अधिक बढ़ती गयी, उनके नित्य प्रति के कष्टों को देखकर स्वामी जी अत्यधिक प्रभावित हुए तथा बाल मुकुन्द जी की मूर्ति को श्री देवचन्द जी के निवासस्थान पर ही प्रतिष्ठित करने का निश्चय कर लिया । उसी रात श्री बाल मुकुन्द जी ने दर्शन दिया और कहा "तुम श्री देवचन्द की महानता से अनभिज्ञ हो, उन्हें रास के स्वरूप बाँके बिहारी के वस्त्र सेवा के लिए दे दो ।"

दर्शन की इस अद्भुत घटना से प्रभावित होकर श्री हरिदास स्वामी श्री देवचन्द से मिलने चल पड़े, परन्तु राह में स्वयं उन्हें आते हुए देखकर स्वामी जी ने श्री देवचन्द के पैर पकड़ लिए। इस अप्रत्याशित कार्य से श्री देवचन्द अचरज में पड़ गये ।

"स्वामी जी, यह आप क्या कर रहे हैं ?"

स्वामी हरिदास ने कहा, "बाल मुकुन्द ने हमें आपका परिचय दिया है तथा आपके कारण ही हमें श्री बाल मुकुन्द जी के दर्शन हुए हैं । आप साधारण व्यक्ति नहीं हैं ।"

गुरु के वचन सुनकर वे स्तब्ध रह गये, तथा उनकी आज्ञा शिरोधार्य कर श्री देवचन्द जी श्री बाँके बिहारी के वस्त्र को घर लाए, और भक्ति भाव से उनकी सेवा में तल्लीन हो गये । ध्यानावस्था में एक दिन ग्वालबालों के संग श्री कृष्ण के साथ बैठकर घुघरी खाई, तथा प्रथम बार श्री कृष्ण के बाल्यावस्था का दर्शन किया, परन्तु मन की शान्ति अब भी नहीं प्राप्त हो सकीं ।

इसके पश्चात् श्री देवचन्द भोजनगर से जामनगर को प्रस्थान कर दिये । वहाँ पहुँचकर कान्ह भट्ट नामक महामुनि से श्याम के मन्दिर में श्रीमद्भागवत् कथा निरन्तर १४ वर्षों तक सुनते रहे, तथा परमात्मा के साक्षात् दर्शन करने के लिए प्रयत्न करते रहे ।

परमात्मा के दर्शन

ईश्वर के प्रति अनन्य भक्ति, प्रेम-भावना, कड़ी तपस्या, तथा मन की पवित्रता को परख लेने के पश्चात् श्री कृष्ण उनके समक्ष प्रकट हुए, तो सब संताप मिट गये। बाल्यावस्था से ही मन में उमड़ रहे प्रश्नों का समाधान स्वयं श्री कृष्ण ने कर दिया। उन्हें तारतम मन्त्र प्रदान किया, यह संस्कृत शव्द है, जो तर और तम का बोधक है—अर्थात् जो दिखाई पड़ता है उससे उच्चतर और उच्चतम सत्ता है। उसको पहचानने की निर्णायिक बुद्धि और उनमें समन्वय देखने का अद्भुत ज्ञान श्री देवचन्द को प्राप्त हो गया, जो अंधकार से निकाल कर चेतन प्रकाश में प्रवेश दिलाता है।

श्री कृष्ण ने कहा "तुम मेरी अर्द्धांगनी आनन्द अंग श्यामा" हो, तथा सांसारिकता के मायाजाल में उलझी हुई आत्माओं को जगाने का कार्य श्री देवचन्द को सौंप दिया। परम धाम की स्मृति और सुमति प्रदान कर श्री कृष्ण उनके मन मन्दिर में विराजमान हो गये। सम्पूर्ण तन-मन प्रकाशमय हो गया, सभी प्रश्नों के उत्तर स्वयं स्पष्ट होने लगे।

आत्मानन्द का दिव्य प्रकाश प्राप्त हुआ तो देवचन्द "निजानन्द स्वामी" बन गये। श्री देवचन्द कथा सुनने वालों को "सुन्दरमाथ" कहा करते थे। आश्चर्य की बात तो यह है कि स्वामी हरिदास जी स्वयं आकर उनके शिष्य बन गये, तथा आपकी ओजस्वी बातों को सुनने दूर-दूर से विद्वान आते तो पुनः अन्यत्र जाने की इच्छा कभी न करते।

श्री देवचन्द जी जब परमधाम का वर्णन करते तो लोगों को साक्षात परम धाम के दर्शन प्राप्त होते थे। श्रोता आत्मविभोर होकर परमधाम, बृज लीला तथा रास लीला का वर्णन सुनते रहते और उन्हें अपने घर जाने की भी सुधि नहीं रहती थी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि श्री देवचन्द जी सर्वगुण सम्पन्न एक अलौकिक एवं असाधारण व्यक्ति थे, जिनके सम्पर्क में आकर मेहराज ठाकुर महामति प्राणनाथ बन गये, और गुरु श्री देवचन्द के दिव्य प्रकाश में अद्भुत सुख का आनन्द प्राप्त करने लगे थे।

वैवाहिक एवं गृहस्थ जीवन

गुरु श्री देवचन्द जी से तारतम्य की शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात्

महामति प्राणनाथ प्रणामी सम्प्रदाय के प्रवर्तक बने। यह दीक्षा, उन्हें प्रणामियों के सुप्रसिद्ध "खिजड़ा मन्दिर" में प्राप्त हुई। तत्पश्चात् किशोरावस्था में ही आपका विवाह फूलबाई नामक सुयोग्य युवती से सम्पन्न हुआ। प्रायः लोग उनको बाई जी के ही नामक से पुकारते थे। बाई जी सदैव अपने स्वामी श्री प्राणनाथ की सेवा में लीन रहा करती थीं, तथा धार्मिक अनुष्ठानों में प्राणनाथ जी के साथ-साथ सहयोग देती रहीं। गृहस्थ जीवन में भी पत्नी के इस सहयोग से प्राणनाथ जी ईश्वर-भक्ति तथा तारतम्य की शिक्षा का प्रचार सुचारु रूप से करते रहे।

अल्प आयु में ही आप के बड़े एवं प्रिय भ्राता श्री गोबरधन जी की मृत्यु हो गयी, उस समय महामति प्राणनाथ की आयु मात्र २५ वर्ष की थी। भाई का विक्षोभ आपको इस सांसारिकता से और भी दूर ले गया अब एकमात्र ईश्वर की साधना ही उनका लक्ष्य बन गया। परन्तु अकस्मात् पत्नी फूलवाई का निधन हो गया। कुछ विद्वानों का मत है कि फूलबाई अधिक समय तक प्राणनाथ का साथ नहीं दे सकीं और उनका देहान्त अतिशीघ्र हो गया था। माता धनबाई का देहान्त तो बाल्यावस्था में ही हो गया था, जिससे आपका मन पहले ही विरक्त हो गया था, परन्तु प्रियवर गोबरधन की मृत्यु के पश्चात् उनका मन अधीर हो गया और जब फूलमती उनको अकेला छोड़ कर चल बसीं तो प्राणनाथ जी को बहुत दुःख हुआ, कुछ समय तक अकेले ही जीवन की नाव को कठिनाई के मार्ग पर चलाते रहे और जब ईश्वर की इच्छा हुई तो प्राणनाथ ने पुनः विवाह करने का निश्चय किया। विद्वानों के मतानुसार वीरमाण की सुपुत्री तेज बाई के साथ महामति प्राणनाथ का दूसरा विवाह सम्पन्न हुआ। कुछ लोगों का कथन है कि फूलबाई और तेज बाई एक ही स्त्री के नाम हैं परन्तु अन्त में 'बाई' शब्द के उच्चारण से ही प्रायः लोगों को यह भ्रम है। वास्तविक रूप में तेजबाई महामति प्राणनाथ के साथ बहुत दिनों तक रहीं और सुयोग्य पत्नी की भांति अपना उत्तरदायित्व पूर्णरूपेण निभाती रहीं।

अरब देश की यात्रा

२५ वर्ष की आयु में परम गुरु श्री देवचन्द जी की आज्ञानुसार सम्वत् १७०३ में महामति प्राणनाथ को अरब देश की यात्रा पर जाना पड़ा। अनेक कठिनायों को देखते हुए जल मार्ग द्वारा अनुमानतः ४० दिनों के

पश्चात् महामति प्राणनाथ सकुशल अरब पहुँच गये। वहाँ की भाषा एवं संस्कृति से वे अत्यन्त प्रभावित हुए। परन्तु कट्टर धर्म अनुयाइयों ने उन्हें परखने में अपनी भूल का परिचय दिया, महामति प्राणनाथ ने वहाँ के तत्कालीन सुल्तान शेख सल्ला से भी परिचय किया तथा वहाँ पर जिज्ञासु मुसलमानों को भारतीय संस्कृति एवं धार्मिक नीतियों के गूढ़ विषयों से परिचय कराया। वास्तविक धर्म प्रचार से वहाँ पर कुछ कट्टर धार्मिक लोगों ने प्राणनाथ जी का विरोध किया, और उन्हें अपमानित भी किया, परन्तु जैसे ही उन्हें अपनी भूल का आभास हुआ, वे बहुत लज्जित हुए। तत्कालीन शासक "शेख सल्ला" ने उम्हें पुनः बुलाकर सम्मानित किया, परन्तु संकुचित विचारधारा की अवहेलना करते हुए महामति प्राणनाथ १६५१ ई० में स्वदेश "काठियावाड़" लौट आये।

प्रधान मन्त्री पद एवं अवकाश

सम्वत् १७१० (१६५३ ई०) में महामति प्राणनाथ नौतनपुरी (जामनगर) के प्रधान मन्त्री बने। उस समय आपकी आयु ३५ वर्ष थी।

समाज सेवा एवं विश्व बन्धुत्व की भावना को अपना कर्तव्य मानकर एकता का दीपक जलाया, परन्तु २ वर्ष ८ मास के उपरान्त सम्वत् १७१२ (१६५५ ई०) में आपके परम गुरू श्री देवचन्द जी गम्भीर रूप से अस्वस्थ हो गये। ऐसी स्थिति में श्री देवचन्द जी ने महामति प्राण को अपनी अस्वस्थता से अवगत कराया। बीमारी का संदेश पाते ही प्राणनाथ विह्वल हो उठे; अपनी समस्त व्यस्तता के उपरान्त वह गुरू की सेवा में उपस्थित हो गये। और प्रधान मन्त्री का पद त्याग कर गुरू श्री देवचन्द की अटूट सेबा करने में व्यस्त हो गये। परन्तु यह शुभ कार्य अधिक दिनों तक नहीं चला। लगभग एक माह के पश्चात् ही सम्वत् १७१२ बुद्धवार ५ सितम्बर १६५५ ई० भाद्रपद सुदीं १४ को श्री देवचन्द जी ने प्राणनाथ को अपने अधिक समीप बुलाया तथा कुछ आवश्यक एवं गुप्त निर्देश देने के पश्चात् सत्य धर्म का प्रचार निरन्तर जारी रखने का आदेश दिया; और देखते ही देखते सदैव के लिए अपनी आँखों को बन्द कर लिया।

कुछ समय तक उसी स्थान पर रहकर गुरू के कार्यों को आगे बढ़ाया तथा श्री देवचन्द जी के पुत्र श्री बिहारी जी को धर्म प्रचार के लिए प्रेरित किया।

धार्मिक कार्यों में रूचि के कारण प्राणनाथ जी ने उन्हें पिता के रिक्त स्थान की पूर्ति हेतु धर्म गद्दी पर आसीन कराया और थोड़े समय के पश्चात् जामनगर पुनः चले गये।

अब राज्य कार्य के साथ-साथ प्राणनाथ जी धर्म प्रचार का भी काम करने लगे। राज्य कोष का धन अपव्यय करने के आरोप में जामनगर के तत्कालीन संकुचित विचारधारा वाले शासक ने उन्हें दोषी ठहराते हुए कारागार में डाल दिया।

इसी समय सूबेदार कुतुब ख़ाँ ने जामनगर पर चढ़ाई कर दी और जाम वीर आपको इसी अवस्था (कारागार) में छोड़कर अहमदाबाद चला गया। परन्तु यहीं पर प्राणनाथ की आत्मा सांसारिकता से विरक्त होकर अन्तर्मुखी हो गयी तथा कारागार में ही दिव्यवाणी प्रस्फुटित हुई।

अपने छोटे भाई ऊद्धव, जो प्राणनाथ के साथ ही कारागार में थे, की सहायता से तारतम बानी को लिखना प्रारम्भ किया। कोयले से दीवारों पर लिखते हुए जब रानियों ने उन्हें देखा तो वे बहुत प्रभावित हुईं तथा कलम एवं कुछ काग़ज़ का प्रबन्ध उन्हें शीघ्र करा दिया। फलतः प्राणनाथ जी ने अपनी प्रथम रचना 'रास' को जन्म दिया। कुछ समय के पश्चात् जाम वीर ने अपनी भूल को स्वीकार किया और महामति प्राणनाथ से क्षमा माँगते हुए आपको मुक्त कर दिया।

परन्तु अब प्राणनाथ जी की लगन किसी दूसरी ओर हो गयी थी, संसार को मिथ्या मानते हुए उन्होंने पुनः अपना पद ग्रहण करने से इन्कार (मना) कर दिया, तथा अपने परम गुरू श्री देवचन्द जी के आदेशानुसार धर्म प्रचार में स्वयं को समर्पित कर दिया।

धर्म प्रचार का कार्य

महामति प्राणनाथ धर्म प्रचार हेतु सम्वत् १७२२ ई० में जामनगर अहमदाबाद से होते हुए पोरबन्दर तथा भोजनगर होते हुए पोरबन्दर ठठ्ठानगर पहुँचे, जहाँ कबीरदास के एक अनन्य भक्त "चिन्तामन" को को शास्त्रार्थ में परास्त किया। फलतः वह आपका परम शिष्य बन गया। तथा लाल दास नामक संत ने भी प्रभावित होकर सपत्नीक महामति प्राण से दीक्षा ग्रहण की एवं आपके सहयोगी बन गये। इस घटना के पश्चात् अनेक

व्यक्ति सहर्ष महामति प्राणनाथ के भक्त एवं शिष्य बन गये, और प्राणनाथ जी धर्म प्रचार के संदर्भ में अरब तक का भ्रमण करते हुए पुनः ठठ्ठानगर वापस आ गये।

इसी समय महामति प्राणनाथ के परम शुभचिन्तक श्री बिहारी जी से आपसी मतभेद हो गया जिसका कारण था धर्म-प्रचार की नीति में असा-मान्यता। इसके पश्चात् महामति प्राणनाथ सम्वत् १७२९ ई० में सूरत पहुंचे जहाँ आपका भव्य स्वागत किया गया और राजगद्दी पर आसीन कराया गया।

आपसी भेद-भाव, ऊँच-नीच, जातिवाद एवं बहुदेववाद को समाप्त कर सत्य धर्म के प्रचार का व्रत धारण करने के पश्चात् महामति प्राणनाथ अपने साथियों के साथ सम्वत् १७२१ (१६६४ ई०) में मेड़ते नामक स्थान (राजस्थान) पहुंचे। वहाँ पर जैन संत "लाभाचन्द" को अपनी विद्वता से शास्त्रार्थ में परास्त किया। परिणामस्वरूप प्रभावित होकर लाभाचन्द भी आपका शिष्य बन गया।

परन्तु यहाँ का तत्कालीन शासक जसवन्त सिंह राठौर प्रभावित न हो सका।

अपने विशिष्ट धर्मानुयायियों के साथ आगे बढ़ने का विचार कर ही रहे थे कि अचानक एक मस्जिद से 'अजान, सुनाई पड़ा।

"अल्लाहो अकबर—अल्लाहो अकबर।....।

"अशहदोअल्लाइलाह इल्लल्लाह।....।

"अशहदो अन्ना मोहम्मदुर्रसूलल्लाह !! सुनकर प्राणनाथ जी आत्म विभोर हो गये, तथा कुरान के इस कलमा से आपका हृदय प्रकाशमय हो गया। इसके अन्तर्गत तारतम्य बाणी की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ी। और प्राणनाथ जी अन्य सोये हुए व्यक्तियों को जगाने का प्रण उसी समय करते हुए आगे बढ़े।

राजस्थान से मथुरा एवं आगरा होते हुए प्राणनाथ सम्वत् १७३५ (१६७८ ई०) में अपने शिष्यों सहित दिल्ली पहुँचे। जहाँ तत्कालीन कट्टर धर्मान्ध शासक औरंगज़ेब पर सर्वप्रथम उनकी दृष्टि गयी, जो दिल्ली की गद्दी पर बैठकर कहर ढा रहा था। औरंगज़ेब को जागृत करने का दृढ़ निश्चय लेकर वे अपने सुन्दरसाथ सहित कई मास तक दिल्ली में रहे।

औरंगज़ेब से धार्मिक साक्षात्कार

सुन्दरसाथ सहित प्राणनाथ कई मास तक दिल्ली में रहने के पश्चात् औरंगज़ेब के दर्शन न हुए तो साक्षात्कार के उद्देश्य हेतु आपने एक चिट्ठी तैयार की। परन्तु विश्वस्त सूत्रों से प्राणनाथ को जानकारी प्राप्त हुई कि कट्टर धर्म अनुयायी शासक औरंगज़ेब इतना शुष्क है कि धर्म के नाम पर धर्म विरोधी भाषा से भी नफ़रत करता है।

यहाँ तक कि वह इस्लाम धर्म के हित में हिन्दू तथा उनकी भाषा हिन्दी को अपने कानों में प्रवेश करना भी वर्जित समझता है। ऐसी विषम परिस्थिति में औरंगज़ेब से धर्म-युद्ध एवं उसको जागृत करने की बात सोचना ही आश्चर्यजनक प्रतीत होता है। परन्तु प्राणनाथ जी अपनी बात पर अड़े रहे ! उन्होंने स्वयं कुरान का अध्ययन किया, तब इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि वेद एवं कतेब में अधिक अन्तर नहीं है। इसी ध्येय से उन्होंने पत्रों को फ़ारसी लिपि में परिवर्तित कर औरंगज़ेब के पास भेजना चाहा। परन्तु उच्च राज कर्मचारी पत्रों को औरंगज़ेब तक पहुँचाने में बाधक सिद्ध हुए।

प्रतिकूल परिस्थिति को देखकर प्राणनाथ क्षुब्ध हो गये तथा सुन्दर-साथ सहित आप हरिद्वार के लिए चल पड़े जहाँ विशाल संत समूह एवं विद्वान पहले से ही उपस्थित थे।

हरिद्वार में कुम्भ पर्व एवं शास्त्रार्थ

हरिद्वार में कुम्भ पर्व के अवसर पर लगभग ३०० वर्ष पूर्व सम्वत् १७३५ ई० में महामति प्राणनाथ सुन्दरसाथ सहित सकुशल पहुँचे। वहाँ पर कई विद्वानों ने प्राणनाथ से शास्त्रार्थ की इच्छा प्रकट की, और उन्हें अवहेलना की दृष्टि से प्रताड़ित भी किया।

प्रभु की लीला वास्तविकता में परिणत हुई, सभी को मुँहकी खानी पड़ी, वे बारी-बारी परास्त होते गये, सभी उपस्थित विद्वानों ने हर्ष ध्वनि से प्राणनाथ की श्रेष्ठता को स्वीकार किया तथा "निष्कलंक बुद्ध" की उपाधि से आपका सम्मान किया।

लगभग ३ मास से अधिक हरिद्वार में रहकर प्राणनाथ धर्म का प्रचार करते रहे, तथा औरंगज़ेब से साक्षात्कार की पुनः लालसा प्रबल होते ही वह दिल्ली के लिए चल पड़े।

दिल्ली में पुनः आगमन

दिल्ली पहुँचकर प्राणनाथ अब औरंगज़ेब से सीधा सम्पर्क स्थापित करना चाहते थे। इसी उद्देश्य से औरंगज़ेब के निजी सचिव से भी उन्होंने मिलने की चेष्टा की, परन्तु असफल रहे। अन्त में निराश होकर औरंगज़ेब के नाम एक पाती भेजी, परन्तु उत्तर नहीं आया। इसके पश्चात् प्राणनाथ जी अपने शिष्यों सहित अनूप नगर चले गये।

अनूप नगर में रहकर प्राणनाथ जी ने कुरान-शरीफ़ का अध्ययन किया तथा श्रीमद्भागवत की सहायता से खड़ी बोली की रूप-रेखा तैयार की, तत्पश्चात् अपने एक मुस्लिम परम शिष्य को, इस नवीन ग्रन्थ (सनंध) को लेकर औरंगज़ेव के पास भेजा। परन्तु इस कार्य से भी कोई लाभ न हो सका।

कुछ समय तक प्रतीक्षारत रहने के पश्चात् प्राणनाथ जी पुनः दिल्ली लौट आये, तथा इस बार उन्होंने एक सरायँ में अपना डेरा डाला, और फारसी सीखने का प्रयास करने लगे। इसी बीच एक फारसी लेखक से उनकी भेंट हुई और वह व्यक्ति प्राणनाथ के विचारों से अत्यन्त प्रभावित हुआ तथा उनकी सहायता करने पर सहमत हो गया। उस फारसी लेखक की सहायता से 'तारतम बानी' की फारसी लिपि में कई प्रतियाँ तैयार की गयीं।

उक्त प्रतियाँ औरंगज़ेब के अतिरिक्त उसके शासन काल में उच्च पदों पर कार्यरत अनेक अधिकारियों को प्रेषित की गयीं। परन्तु दुर्भाग्यवश इन प्रतियों का भी कोई उत्तर प्राणनाथ जी को नहीं मिला।

प्राणनाथ जी की चिन्ता अब अधिक बढ़ गयी, वह किसी भी प्रकार अपना मत सुलतान औरंगज़ेब तक पहुँचाना चाहते थे। हुसेनी तफ़सीर का विधिवत ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात्, कुरान शरीफ़ की इबारतों का नवीनतम अर्थ स्पष्ट किया, और शासन के ओहदेदारों को एक-एक प्रति उन्होंने भेजी, जिनमें प्रमुख नाम हैं—सर्वप्रथम शेख़ इस्लाम, शेख़ निज़ाम सिद्दीकी फौलाद तथा रिज़वी ख़ान। परन्तु इस कार्य का भी वही परिणाम निकला और कहीं से भी उत्तर न मिलने पर प्राणनाथ जी बहुत दुःखी हुए। उनकी मनःस्थिति को देखकर उनके शिष्य-मुल्ला काइम, शेख बदल, भीम भाई, सोम जी, नाग जी, दया राम, चिन्तामन, चंचल भाई आदि

१२ आत्म-बलिदानियों ने उक्त बानियों को औरंगज़ेब तक पहुँचाने का व्रत ले लिया और मस्जिदों में अपनी 'बानी' को पढ़ना प्रारम्भ किया। फिर तो स्थिति गम्भीर हो गयी। मस्ज़िद के इमाम और मुल्ला खुदा की दुहाई देने लगे, और इसे एक भयंकर अपराध की संज्ञा देखर उन सभी व्यक्तियों को सुलतान औरंगज़ेब के सम्मुख प्रस्तुत किया गया।

बादशाह ने उनसे पूछा कि आप लोग ऐसा क्यों कर रहे थे। इसके उत्तर में केवल यह कह कर कि "हम आपसे एकांत में रू-बरू बात करना चाहते हैं", वे सभी मौन हो गये। बादशाह ने अनुकूल समय में मिलने तथा बात करने का वचन दिया, तथा शहर कोतवाल की देखरेख में उन्हें रखने का हुक्म दिया। तत्पश्चात् प्रधान काज़ी के सम्मुख उन्हें प्रस्तुत किया गया जिससे साक्षात्कार एवं विचारों का आदान-प्रदान कई दिनों तक चलता रहा, पर न तो वह स्वयं सहमत हुए और न औरंगज़ेब को मिलने का मौका (अवसर) दिया जिसके कारण इस धर्म युद्ध का निष्कर्ष पुनः विवादास्पद बना रह गया।

लगभग १५ मास तक दिल्ली में रहकर प्राणनाथ जी ने अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी, परन्तु तुच्छ विचारों के प्रवर्तक तत्कालीन काज़ी मौलवी और मुल्लाओं के कारण वे औरंगज़ेब को सच्चे धर्म, उच्च आदर्श तथा विश्वबन्धुत्व की भावना का वास्तविक पाठ पढ़ाने में अन्ततः असफल रहे। अपने १२ शिष्यों को वापस बुलाने के पश्चात् प्राणनाथ जी उदयपुर के लिए चल पड़े, जहाँ हिन्दू राजाओं को जागृत करने का निश्चय किया।

भाऊ सिंह एवं छत्रसाल से सहायता

हिन्दू राजा उस समय औरंगज़ेब के ताप से इतना अधिक भयभीत हो गये थे कि उसके विरुद्ध आवाज़ उठाना अपना विनाश समझते थे एवं आपसी मतभेद के कारण छोटे-छोटे प्रान्तों में विभक्त होते जा रहे थे। इस विषम परिस्थिति में महामति प्राणनाथ जी ने धर्म के सच्चे अर्थ को दर्शाया और हिन्दू राजाओं को जागृत करने का दृढ़ संकल्प लिया। परन्तु दुर्भाग्यवश उदयपुर के शासक राजसिंह ने अपनी स्वीकृति नहीं प्रदान की। वह औरंगज़ेब के ताप से भयभीत था। तत्पश्चात् प्राणनाथ जी औरंगाबाद पहुँचे। वहाँ पर भाऊसिंह ने आपका भव्य स्वगात किया तथा अपनी सहमति प्रदान की। उसने सुन्दर साथ सहित प्राणनाथ को रहने की सुविधा प्रदान

की तथा सभी प्रकार की समुचित सहायता प्रदान करने का भी आश्वासन दिया। परन्तु दुर्भाग्यवश अचानक भाऊसिंह की अकाल मृत्यु हो गयी जिसके कारण प्राणनाथ को एक बार पुनः कष्ट हुआ।

इसके पश्चात् प्राणनाथ जी बूँदी होते हुए रामनगर पधारे। यहाँ पर मुसलमान भी आप से प्रभावित हुए और कुछ लोगों ने दीक्षा भी ली। तत्पश्चात् सम्वत् १७४० (१६८३ ई०) में प्राणनाथ पन्ना पधारे। जहाँ छत्रसाल भी औरंगज़ेब की कटु नीति से क्रुद्ध होकर उससे संघर्ष करने की योजना बना रहा था। प्राणनाथ जी के प्रथम मिलन से ही वह इतना प्रभावित हुआ कि उसने आपकी शिष्यता सहर्ष स्वीकार कर ली और आर्थिक सहायता प्रदान करने का ठोस वचन दिया। साथ ही छत्रसाल ने महामति प्राणनाथ को अपना 'राजगुरु' घोषित किया। फलस्वरूप प्राणनाथ जी ने छत्रसाल को एक तलवार आशीर्वाद रूप में प्रदान किया। सम्वत् १७४४ (१६८७ ई०) में प्राणनाथ जी चित्रकूट गये। वहाँ पहुँच कर विश्राम स्वरूप ठहर कर अपनी अन्तिम रचना 'कयामतनामा' मुकम्मल (पूर्ण) किया।

परम ब्रह्म में विलीन

चित्रकूट से पन्ना लौटने के पश्चात् २९ जून सम्बत् १७५१ (१६९४ ई०) में लगभग ७६ वर्ष की आयु में महामति प्राणनाथ **परम धाम** पधारे। आषाढ़ बदी ४, रात्रि लगभग ३१/२ बजे, अनेक शिष्यों एवं अपने अनुयाइयों के समक्ष महामति प्राणनाथ ने जीवित समाधि धारण कर, इहलीला को समाप्त किया तथा अपने परम ब्रह्म में विलीन हो गये।

व्यक्तित्व एवं प्रभाव

महामति प्राणनाथ का आविर्भाव उस समय हुआ जब सम्पूर्ण देश में साम्प्रदायिकता एवं रूढ़िवादिता का बोल-बाला था, तथा जात-पांत, छुआ–छूत तथा ऊँच–नीच की भावना प्रबल हो गयी थी।

औरंगज़ेब के मत परिवर्तन में असफल होने के कारण प्राणनाथ ने देश के प्रमुख राजाओं को सुसंगठित करने का प्रयत्न किया, तथा औरंगज़ेब की कट्टर धर्मनीति के विरुद्ध आह्वान किया। लगभग ३०० वर्ष पूर्व महामति प्राणनाथ जी का राष्ट्र के प्रति समर्पित योगदान अत्यन्त सराहनीय है। तत्कालीन प्रचलित अरबी तथा फारसी भाषा का ज्ञान प्राप्त कर के कुरान शरीफ़ का पारस्परिक अध्ययन किया और सिंधी

गुज्रराती, खड़ी बोली के अतिरिक्त ब्रज एवं संस्कृत भाषा में अपने मत को व्यक्त किया। परन्तु मूल रूप से महामति प्राणनाथ ने हिन्दी या हिन्द्रवी भाषा को राष्ट्रीय रूप प्रदान किया तथा अपनी समस्त रचना में राष्ट्रीयता एवं विश्वबन्धुत्व की भावना को स्पष्ट किया।

प्राणनाथ के अनुसार सभी मनुष्य एक ब्रह्म के अंश हैं तथा समान आदर के भागीदार हैं। प्रत्येक जीव की रक्षा करना सभी का धर्म है। उन्होंने सभी धर्मों का आदर किया और धार्मिक एकता को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक दशा को नया रूप प्रदान कर के सभी धर्मावलम्बियों को एक नया मार्ग दिखाया तथा 'जागनी' के माध्यम से ईश्वर के अपार वैभव का दर्शन एवं मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया।

महामति प्राणनाथ के जीवन वृत्त, व्यक्तित्व एवं प्रभाव को जानने के लिए आज सम्पूर्ण देश में व्यापक अनुसंधान किये जा रहे हैं। आज से लगभग ३०० वर्ष पूर्व तत्कालीन परिस्थितियों का यदि हम गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करें तो ज्ञात होता है कि महामति प्राणनाथ एक ऐसा नाम है, जो अनाथों के नाथ बन कर इस धरती पर अवतरित हुए और समस्त जीवों के प्रति सद्भावना व्यक्त की तथा विश्वबन्धुत्व की चेतना से अवगत कराया जिसके परिणाम स्वरूप आज भी महामति का साहित्यिक एवं आध्यात्मिक प्रभाव धरती पर विद्यमान है।

विशिष्ट आंकड़ों के आधार पर यह ज्ञात हुआ है कि समस्त भारत में महामति प्राणनाथ के अनुयाइयों की संख्या लगभग १६ लाख है।

उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बंगाल, बिहार, गुज़रात, असम के अतिरिक्त नेपाल में भी आपके अनुयायी विद्यमान हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महामति प्राणनाथ का व्यक्तित्व अनूठा था। समस्त भक्त, कवियों एवं आचार्यों की तुलना में महामति प्राणनाथ का स्थान सर्वश्रेष्ठ है एवं भौतिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक जगत में आपका योगदान अत्यन्त सराहनीय है।

कुलजम स्वरूप और उसकी विशेषताएँ

अध्याय २

कुलजम स्वरूप का संक्षिप्त परिचय

महामति प्राणनाथ कृत कुलजम स्वरूप एक विशिष्ट ग्रंथ है, जो १४ खण्डों का एक समुचित संग्रह है। इसके अन्तर्गत अनेक छोटे-छोटे ग्रंथ एवं किताबों का सम्मिश्रण मौजूद है। इन उपग्रंथों में जीवन-मृत्यु से लेकर जागनी के द्वारा मोक्ष की प्राप्ति का वर्णन बड़े ही सजीव ढंग से किया गया है। इन्हीं उप ग्रंथों के आधार पर महामति प्राणनाथ ने बूंद-बूंद एकत्र कर इसे एक महान ग्रंथ का स्वरूप प्रदान किया, जिसे वर्तमानकाल में 'कुलजम स्वरूप' के नाम से जाना गया तथा अनेक विद्वान इसके अन्तः करण एवं रहस्य को जानने में जुटे हुए हैं।

सिन्धी, गुजराती, हिन्दी, हिन्दवी तथा खड़ी बोली के सम्मिश्रण से लगभग १६१२ पृष्ठों का यह महान ग्रंथ "कुलजम स्वरूप" मुख्यतः १४ खण्डों पर आधारित है, जो कि महामति प्राणनाथ द्वारा समस्त मानव जगत के लिए एक बहुमूल्य एवं अनुपम भेंट है जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

नाम	भाषा
१. श्री रास ग्रंथ	गुजराती
२. प्रकाश ग्रंथ	गुजराती जाटो
३. षट रूत ग्रंथ	गुजराती
४. कलश ग्रंथ	गुजराती
५. श्री सनंध ग्रंथ	हिन्दी (खड़ी बोली)
६. कीर्तन ग्रंथ	हिन्दी एवं गुजराती
७. खुलासा ग्रंथ	हिन्दी
८. खिलवत ग्रंथ	हिन्दी
९. परिक्रमा ग्रंथ	हिन्दी

१०. सागर ग्रंथ	हिन्दी
११. सिनगार ग्रंथ	हिन्दी
१२. सिन्धी ग्रंथ	सिन्धी
१३. मारफ़त ग्रंथ	हिन्दी
१४. क़ियामतनामा (छोटा एवं बड़ा)	हिन्दी

इन सभी उप ग्रंथों का समय एवं स्थान भिन्न हैं परन्तु सभी का अपना महत्व एक समान है जो कि पूर्णतया "कुलजम स्वरूप" में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है तथा उक्त उपग्रंथों में रास प्रकाश, षट रुत, कलश कीर्तन का सम्बन्ध वेदों से माना जाता है, और सनंध, खुलासा, मारफत और कियामत नामा (छोटा-बड़ा) का सम्बन्ध कतेब से है जो मुख्यतः इन्जील एवं कुरान से सम्बन्धित है।

उपर्युक्त सभी उपग्रंथों का अलग-अलग परिचय प्रस्तुत है।

१. श्री रास ग्रंथ

यह ग्रंथ तारतम् वाणी कुलजम स्वरूप का प्रथम ग्रंथ है। श्री रास ग्रंथ का अवतरण कारावास के समय सम्वत् १७१५ ई० में हुआ। गोपिकाओं के संग श्रीकृष्ण का रास-लीला वर्णन इस ग्रंथ की विशेषता है। इस ग्रंथ में ९१३ चौपाइयाँ हैं जो मुख्यतः गुजराती भाषा में उल्लिखित हैं। श्री श्यामा का स्वरूप एवं माया पर विजय की उक्ति दर्शाते हुए प्राणनाथ जी ने साधारण प्राणियों के लिए भी मोक्ष का मार्ग ढूंढ़ निकाला। सच्चे मन से ईश्वर की भक्ति एवं प्रगाढ़ प्रेम के माध्यम से परमात्मा के निकट पहुंचने का मार्ग प्रशस्त किया।

इसी तथ्य को महामति प्राणनाथ ने श्रीकृष्ण एवं गोपिकाओं के अनुपम प्रेम के रूप में श्री रास ग्रंथ में स्पष्ट रूप से समझाया है। श्रीकृष्ण के प्रति गोपिकाएं किस प्रकार व्याकुल, प्रेममयी एवं आतुर हो गयी हैं कि उन्हें अपने आप की सुध-बुध ही नहीं रही, वे सभी अपने श्याम-सलोने के ध्यान मे लीन हैं। साधारण-जन को ठीक इसी प्रकार अनुकरण करके सच्चे प्रेम की चरम सीमा तक पहुंचना चाहिए तथा अपने परम ब्रह्म की दिव्य ज्योति में विलीन हो जाना चाहिए। इसी भाव को स्पष्ट करते हुए प्राणनाथ जी कहते हैं—

ऐवो ब्रह स्वमी रह्यो में जाणू जीवनी नाल !
आसा अमनेनव मूके नहीं तो देह छाड़ूं ततकाल !!

इस प्रकार श्री रास ग्रंथ का एक विशिष्ट महत्व है जो मन की एकाग्रता के लिए लाभप्रद है।

२. श्री प्रकाश ग्रंथ

सर्वप्रथम गुजराती, उसके पश्चात् हिन्दी में स्वयं अनुवाद कर के महामति प्राणनाथ जी ने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है, जो उनकी निष्ठा एवं लगन का प्रतीक है।

तीसरे ब्रह्माण्ड की रचना और उसमें ब्रह्म सृष्टि का अवतरण श्री प्रकाश ग्रंथ की विशेषता हैं। श्री प्रकाश ग्रंथ को २ खण्डों में विभक्त किया जा सकता है क्योंकि गुजराती में १०६४ चौपाइयाँ तथा हिन्दी में ११८५ चौपाइयाँ उल्लिखित हैं। इस ग्रंथ के माध्यम से ब्रह्म ज्ञान की महानता को दर्शाते हुए प्राणनाथ जी साधारण जनता का ध्यान आकृष्ट करते हुए प्रतीत होते हैं तथा ब्रह्म ज्ञान का महत्व दर्शाते हुए वे कहते हैं :

अब इन उजाले न पहचाने तो अपना बड़े गुनहगार जी !
पाँव पकड़ कहे इन्दावति पीऊ जी के गुण अपार जी !!

अर्थात मनुष्य कड़ी साधना द्वारा ईश्वर (ब्रह्म) का प्रेम पाकर परम धाम के सभी सुखों का उपभोग कर सकता है, वे कहते हैं–

इहाँ साधने थयो उलास। कह्यो न जाए तह विलास ।।
ए जागनी ना सुख केणी पेरे। कहिए जाणे श्रीधाम में बैठा छैए ।।

इस दुःखमय संसार की उत्पत्ति का कारण स्पष्ट करते हुए प्राणनाथ जी ने प्रकाश ग्रंथ के माध्यम से मोक्ष का मार्ग प्रशस्त किया है।

३. षट रुत ग्रंथ

षट रुत ग्रंथ की उत्पति भी हब्सा (जामनगर कारागार) में हुई। समय की उपयोगिता के सन्दर्भ में उसके क्रम चक्र का बड़ा ही रोचक वर्णन इस ग्रंथ में प्रस्तुत किया गया है।

बारह मास के पश्चात् तेरहवें मास के अकस्मात आगमन पर गोपिकाओं को आश्चर्य चकित होना पड़ा। इस ग्रंथ में २३० चोपाइयाँ हैं

जो गुजराती भाषा में लिपिबद्ध हैं। विरह वर्णन को स्पष्ट करते हुए प्राणनाथ जी कहते हैं–

"अब तो और नहीं कहा जाता है नाथ, यदि आप स्वयं न आ सकें तो हमें ही किसी उक्ति द्वारा अपने पास बुला लें।"

इसी प्रसंग में ऊधव से गोपिकाएँ कहती हैं—

"आप हमारे दुःख दर्द क्या जानें–यदि वियोग का कटु अनुभव आपको भी होता तो सहज ही हमारे अन्तर्रात्मा की व्यथा समझ पाते"।

ऊद्धव इस प्रसंग से अत्यधिक प्रभावित हुए, उन्हें गोपिकाओं के सम्मुख नतमस्तक होना पड़ा–

रे ऊधवड़ा ब्रह्मा नन्द नों कुंअर एणी अमकने ख़री रे ख़बर।
ब्रह्मा जो यूँ लाधे ततपर, ते ऊधव अमे भूलूं केम अवसर।।

हो श्याम पिउ-पिउ करी रे पुकारूँ

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि षट रुत ग्रंथ एक भावना प्रधान एवं मार्मिक ग्रंथ है।

४. श्री कलश ग्रंथ

श्री कलश ग्रंथ की उत्पत्ति भी हब्शा (जामनगर कारागार) में हुई। मूलतः इस ग्रंथ की रचना गुजराती में हुई परन्तु इसका रूपान्तरण अनूपनगर में किया गया जो हिन्दी भाषा पर आधारित है। गुजराती में लगभग ५०० चौपाइयाँ तथा हिन्दी में ७७० चौपाइयाँ उपलब्ध हैं। इस ग्रंथ में परमात्मा द्वारा आत्मा के ज्ञान की परीक्षा एवं जीवन के वास्तविक मार्ग को दर्शाया गया है। संसार का वास्तविक स्वरूप क्या है? इस तथ्य को समझने के बाद आत्मा का मूल कर्तव्य किस प्रकार होना चाहिए, इन सभी पहलुओं पर बड़ी बारीकी से प्रकाश डालते हुए महामति प्राणनाथ कहते हैं—

चौदे तबक एक होयसी, सब हुकुम के प्रताप।
ऐ सोभा तुझे सुहागनी, जिन जुदी जाने आप।।

तू देख दिल विचार के उड़ जासी असमत।
सारों के सुखकारने, तू जाहिर हुई महामत।।

प्राणनाथ जी ने मानव के मन की पवित्रता को उच्च स्थान प्रदान किया है। वे जाति, धर्म तथा वर्ग विशेष को कदापि नहीं मानते। इसी लिए 'जागनी' को विशेष महत्व प्रदान किया हैं। आत्मा को जगाने के लिए घोर तप एवं कष्ट की अपेक्षा प्रेम भाव को प्राथमिकता दी है। माया रूपी संसार में फंसने की अपेक्षा परमधाम के अपार सुखों की अनुभूति में ध्यान लगाने पर कष्ट अपने आप समाप्त हो जायेगा तथा आत्मा को परमात्मा में लीन करने के पश्चात मोक्ष का मार्ग भी प्रशस्त हो जायेगा।

५. श्री सनंध ग्रंथ

सनंध का तात्पर्य प्रमाण अथवा सनद है। इस ग्रंथ का अवतरण सूरत तथा अनूप शहर में हुआ। तत्कालीन रीति-रिवाज तथा वाह्य आडम्बरों का खण्डन इस ग्रंथ द्वारा प्राणनाथ जी ने किया हैं। इमाम मेंहंदी के अवतरण के लक्षण तथा प्रमाण को प्रस्तुत किया है, इस्लाम धर्म के सर्वश्रेष्ठ आसमानी ग्रंथ कुरान शरीफ के माध्यम से इमाम मेंहदी के आगमन को सिद्ध कर दिया है। इस ग्रंथ में १६९१ चौपाइयां हैं तथा यह पूर्णतया हिन्दी एवं खड़ो बोली पर आधारित है।

एकेश्वरवाद पर बल देते हुए महामति प्राणनाथ जी ने समस्त मानव जाति को मानव धर्म पर चलने की शिक्षा प्रदान की। उन्होंने बतलाया कि ईश्वर 'एक' है, तथा सभी जीव एक ही ईश्वर के बनाये हुए हैं। उन पर दया करो तथा निर्बल को कष्ट न पहूंचाओ। अपने समान सभी के सुखों की कामना करो। देश-काल, रंग-भेद, भाषा का विवाद वर्षों पहले प्राणनाथ जी ने समाप्त करने का अथक प्रयास किया था।

भेष भाषा जिन रचो, रचिओ मायने असल।
भई रोशन रसूल की अब खुले मायने सकल ॥

छोड़े गुमान सब मिलसी एजो देखत हो जहान।
जात-पात न भांत कोई, एक खान पान एक गान ॥

एते दिन इन हुकमे जुदे जुदे खेलाय।
अब एक हुंकम इमाम का लेत सबों मिलाय ॥

६. किरंतन ग्रंथ

किरन्तन का अर्थ है, ईश्वर के प्रति तन्मयता एवं उसकी आराधना करना। किरंतन ग्रंथ का कुलजम स्वरूप में एक विशिष्ट स्थान है। इस ग्रंथ में १३३ प्रकरण तथा लगभग २१०० चौपाइयाँ हैं। जामनगर कारागार से ही इन चौपाइयों की रचना प्रारम्भ हो गयी थी। महामति प्राणनाथ अपने विशेष ध्यानावस्था में जो भजन के रूप में गाते थे, वह कीर्तन के नाम से प्रचलित हुआ, परन्तु पदों की विविधता के कारण महामति प्राणनाथ ने इसे 'किरंतन' के नाम से अलंकृत किया। इस ग्रंथ के अवतरण का समय सम्वत् १६२२ माना जाता है जो हिन्दी गुजराती एवं सिंधी भाषा में उल्लिखित है।

प्राणनाथ जी के सभी शिष्य इन्हीं चौपाइयों का गायन किया करते थे।

तत्कालीन वाह्याडम्बरों से सावधान करते हुए महामति जी कहते हैं :

जो माहे निरमल बाहेरे दे न दिखाई, वाको पारब्रह्म सो पहचान।
महामति कहे संगत कर बाकी, कर वाही सों गोष्ट ज्ञान ॥

किरंतन ग्रंथ में वेद पुराण कर्मकाण्ड और बहुचर्चित आडम्बरों से ऊपर उठ कर ब्रह्म ज्ञान का सच्चा मार्ग प्रशस्त किया गया है तथा एक ही परमात्मा की उपासना से सम्पूर्ण विश्व के कल्याण का संदेश दिया है। मानव शरीर की सार्थकता एवं महानता को स्पष्ट करते हुए कुरान शरीफ़ का भी हवाला दिया है। फ़रिश्तों को आदिपुरुष आदम के सम्मुख सिजदा (नतमस्तक) करने का आदेश परमात्मा द्वारा दिये जाने से ज्ञात होता है कि देवगण और फ़रिश्तों से ऊँचा स्थान मनुष्य जाति का है।

अतः मानव जाति का धर्म एवं कर्तव्य है कि वह ईश्वर की उपासना तथा यशगान निर्विवाद करता रहे।

यो तैयारी कीजिए अंगू करनी है दौड़।
सब अंग इश्क लें के निकसो ब्रह्माण्ड फोड़ ॥

७. खुलासा ग्रंथ

इस ग्रंथ का अभिप्राय है सारांश सार या स्पष्टीकरण। इसके माध्यम

से महामति प्राणनाथ जी ने पुराण तथा कुरान के मूल तत्व को एकाकार कर उनमें समन्वय उत्पन्न किया है। इस ग्रंथ में १०२२ चौपाइयाँ हैं जो हिन्दी भाषा पर आधारित हैं। समस्त मानव जाति के हित में विश्व कल्याण की दिव्य ज्योति को प्रज्ज्वलित कर उन्हें सीधा रास्ता दिखाने का प्रयास प्राणनाथ जी की महानता का प्रतीक हैं।

मोमिन के अनुसार शैतान और कोई नहीं स्वयं माया ही है तथा माया-मोह एवं इन्द्री इत्यादि ही सत्य रूपी परमात्मा से बहुत दूर रखे हुए हैं।

समस्त मानव जाति सांसारिक वाह्याडम्बर में फंस कर ईश्वर की बन्दगी से वंचित हैं।

मोमिन दुती एही तफ़ावत, ज्यों खेल और देखनहार।
मोमिन मता हक वाहिदत, दुनियाँ मता सुरदार॥

अधर्म के कारण प्रलय का होना कुरान तथा पुराण से सिद्ध है, परन्तु जो सत्य-धर्म के मार्ग पर चलता है वह प्रलय से प्रभावित नहीं होता। मुहम्मद साहेब के अनुसार भी ग्यारहवीं सदी में असत्य और अधर्म को नष्ट करने के लिए इमाम मेंहदी का अवतरण सुनिश्चित है।

साहेब आये इन जिमी, कारण करने तीन।
सबका झगड़ा मेट के या दुनियाँ या दीन॥

सो बुद्ध इमाम जाहेर भए तब खुले सब कागद।
सुख तो सांचों को दिया और झूठे हुए सब रद॥

८. खिलवत ग्रंथ

खिलवत का अभिप्राय है एकान्त, परन्तु यहाँ प्राणनाथ जी इस एकान्त में अपने प्रियतम के साथ एकाकार होकर उनमें विलीन हो जाना चाहते हैं। आत्मा-परमात्मा के इस मिलन के समय एवं काल को खिलवत नाम देकर महामति जी ने इसकी सार्थकता सिद्ध कर दी है। खुदा अथवा परमात्मा से मिलने के रास्ते में जो भी अड़चन या रुकावट उत्पन्न होती है, उसके निवारण के लिए प्रभु ने जो रास्ता प्रशस्त किया है, उसे हम

खिलवत ग्रंथ में सहजता से देख सकते हैं। इस ग्रंथ में १०७४ चौपाइयाँ हैं तथा भाषा हिन्दी प्रयुक्त की गयी हे। अहंकार को समाप्त कर ब्रह्म ज्ञान द्वारा अपने परमात्मा से मिलने का मार्ग प्राणनाथ जी द्वारा रचित इस ग्रंथ में स्पष्ट दिखाई पड़ता है। खिलवत की अवस्था में प्रेम का प्याला वे इस प्रकार ग्रहण करना चाहते हैं कि बेख़ुदी न हो, ध्यान बरक़रार रहे, और वह आनन्दित होते रहें।

साकी पिलावें शराब रूहें प्याले लीजिए।
हक इश्क का अब भर-भर प्याले पीजिए॥

खुदा से जुदा होने से कब्ल (पूर्व) रुहें जब संसार में आने लगीं तो उनसे वादा किया कि वे इस "खिलवत" की अवस्था में, तथा इसके माध्यम से दूसरों को जगाने का प्रयत्न करेंगीं।

ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति तथा वास्तविक धर्म-ज्ञान के रहस्य को महामति प्राणनाथ जी ने खिलवत ग्रंथ के माध्यम से साधारण जनता को अवगत कराया है।

६. परिक्रमा ग्रंथ

ईश्वर के अतिनिकट पहुँचे तथा उनके गिर्द परिक्रमा के रहस्य को खोलते हुए प्राणनाथ जी ने प्रेम की विशिष्टता को सिद्ध कर दिया है। इस ग्रंथ में २४८१ चौपाइयाँ हैं जो हिन्दी भाषा में उपलब्ध हैं। इस ग्रंथ के माध्यम से 'परमात्मा' का स्थान दर्शाते हुए प्राणनाथ जी कहते हैं कि प्रेम ही एक कड़ी है जो परमात्मा के बीच मधुर सम्बन्ध स्थापित कर सकती है। इस मधुर वाणी से सारा संसार ही नहीं बरन् सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ही वश में किया जा सकता है।

परम धाम को कल्पना तो सभी करते हैं परन्तु प्राणनाथ जी ने इसका वर्णन अनेक खण्डों द्वारा जो प्रस्तुत किया है वह बड़ा ही सजीव है।

रंग महल और अक्षरधाम, इसके पीछे बने सुन्दर बग़ीचे, लाल रंग के चबूतरे पर बैठने के सुन्दर-सुन्दर आसन, उत्तर दिशा में स्थित अति ऊँचा पुखराज का पर्वत, यमुना नदी के सात प्रकार के घाट 'होज़ कौसर', दक्षिण दिशा में मणियों का अति सुन्दर तथा 'विशाल पर्वत' जवाहरात से

जगमगाता हुआ रंगमहल तथा इसके अतिरिक्त चार-हार, सुन्दर हवेली का अनुपम वर्णन करते हुए महामति प्राणनाथ अर्स की जो सजीवता प्रस्तुत करते हैं, उससे मनुष्य के मन-मस्तिष्क के पट खुल जाते हैं।

अरसमता अपार है।
दिल में न आवे बिना सुमार।
ताथें ल्याऊँ बीच हिसाब के।
ज्यों रूहें करें विचार॥

१०. सागर ग्रंथ

परिक्रमा ग्रंथ के अवलोकन के पश्चात हमें ज्ञात हुआ कि परमधाम की सुन्दर साज़-सज्जा अवर्णनीय है। इसी तथ्य को महामति प्राणनाथ जी ने अपार-सागर की संज्ञा देकर इसमें निहित आठ ८ सागरों का विराट रूप प्रस्तुत किया है। इस ग्रंथ में ११२८ चौपाइयाँ हैं जो हिन्दी में लिपि बद्ध हैं।

प्राणनाथ जी के अनुसार अपार-सागर के अन्तर्गत अनेकों प्रकार के बहुमूल्य रत्न, तथा माणिक मोतियों का बड़ा भण्डार है, जो परम धाम की विशेषता को सार्थक किये हुए है।

इन आठ खण्डों में ईश्वर और रूहों के मिलने, उनके शृंगार का वर्णन तथा आत्मा-परमात्मा के आत्मविभोर हो जाने के सभी साधन विद्यमान हैं।

कहा कहूँ तेज रुहन का, और समूह वस्तर भूषण।
एक ही जोत पूर्ण सिध की, जो अव्वल नूर सागर॥

महामति प्राणनाथ जी ने ज्ञान की सार्थकता को समझाते हुए इसके महत्व को सिद्ध कर दिया है। बिना इल्म की रोशनी के परमात्मा (खुदा) को पहचानना अति कठिन है। अतः सभी धर्म ग्रंथों में इल्म को महत्व दिया गया है जो पूर्णतया परमधाम की कुन्जी का काम करती है। इसी तथ्य को दर्शाते हुए प्राणनाथ जी कहते हैं :-

ए इल्मं ए इश्क ए दोऊ हक़ को चाहें ।
जिन जो देते हुक्म सोई लेवे सिर चढ़ाए ।।

११. सिनगार

इस ग्रंथ के अन्तर्गत ब्रह्म के सुन्दर स्वरूप को दर्शाया गया है । नूर की लड़ियाँ तथा अपार वैभव से सुसज्जित रूहें परमात्मा के इर्द गिर्द खेल रही हैं । शृंगार रूपी सत्य को धारण कर सागर रूपी दर्पण में अपना लावण्य देखतीं हैं । शृंगार ग्रंथ में २३१२ चौपाइयाँ हिन्दी भाषा में लिपिबद्ध हैं ।

महामति प्राणनाथ जी ने ईश्वर की काल्पनिक व्याख्या इस प्रकार से की है कि साक्षात ब्रह्म के दर्शन हो जाते हैं । वे कहते हैं कि ईश्वर का किसी तत्व या रूप से सम्बन्ध नहीं है । वह पूर्ण नूरी है और अपने जमाल की रोशनी में सब को एक साथ देखता है । उन पर हर समय नजर रखता है ।

ईसा मसीह तथा मुहम्मद साहब ने भी अपने-अपने धर्मानुसार ईश्वर के रूप वैभव और परमधाम की सुन्दरता का वर्णन किया है ।

अहमद पहुंचे अरस में देखी हक सूरत ।
हौज जोय बाग जानवर कही सब मारफ़त ।।

माया को मिथ्या एवं आकर्षक बतलाते हुए प्राणनाथ जी ने ब्रह्मज्ञान की वास्तविकता पर बल दिया है तथा प्रेमभक्ति को मुक्ति की कुंजी बतलाया है । परम धाम का वर्णन करते हुए महामति प्राणनाथ जी कहते हैं :

बैठे बातें करें अरस की, सोई भिस्त भई बैठक ।
दुनी बातें करें दुनीं की आखरत सित दोजक़ ।।

१२. सिन्धी ग्रंथ

सम्भवतः सिंधी भाषा में लिपिबद्ध होने के कारण इस ग्रंथ का नाम सिंधी ग्रंथ पड़ा है । इसमें लगभग ६०० चौपाइयाँ हैं । मूलरूप से प्राणनाथ

सिंधी नहीं थे, परन्तु आपको इस भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त था। आन्तरिक मन के विशेष उद्‌गार इसी भाषा में प्रकट हुए हैं।

सिंधी भाषा में रूहों का प्रियतम से मिलने की चाह अति मार्मिक है। इसी सन्दर्भ में प्राणनाथ जी कहते हैं–

"परमात्मा से मिलकर उससे विछोह बड़ा कष्टमय होता है। इसलिए ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् और जुदाई अब नाक़ाबिले बर्दाश्त है।"

मीठा सुख माशूक़ का कहूँ आशिक कहे न कोए।
पड़ोसी भी न सुनै, यों आशिक छिपी रोय।

परमधाम में पहुँच कर रूहों का प्रेम पूर्वक अपने प्रियतम से एकाकार होने के मर्मस्पर्शीभाव को प्राणनाथ जी बड़ी कुशलता के साथ दर्शाते हुए प्रतीत होते हैं। वे कहते हैं––

महामति चोय महबूब जी मूके, बड़ी डेरवाई रांद।
कर मूं सें मिठयूं गालियाँ, भूँजा मिठामियाँ कांध।।

१३. मारफ़त ग्रंथ

यह अवस्था मनुष्य की असीम बुलन्दी का प्रतीक होती है तथा इस प्रकार के उदाहरण कुरान शरीफ़ में भी विद्यमान् हैं। मारफ़त ग्रंथ हिंदी में लिखा गया है तथा इसमें १०३६ चौपाइयाँ है। कतेब के अनुसार क्रमशः (१) शरीयत, (२) तरीकत, (३) हक़ीक़त तथा (४) मारफ़त का उच्च स्थान होता है। जो मनुष्य कड़ी साधना के पश्चात् ही प्राप्त कर सकता है। वेद में भी इसी प्रकार का दर्जा (स्तर) साधना के लिए उपयुक्त माना गया है। इस प्रकार वेद तथा कतेब दोनों से सिद्ध हो जाता है कि यह मारफ़त की अवस्था किसी भी मनुष्य के लिए उसकी विद्वता की चरम सीमा होती है।

इमाम मेंहदी के प्रकट होने के लक्षण से लेकर 'नाजी फ़िरक़ा' को जो स्वरूप महामति प्राणनाथ जी ने प्रस्तुत किया है, वह उनके ज्ञान एवं दूरदर्शिता का परिचायक हैं। इमाम मेंहदी की पेशीनगोई करते हुए वे कहते हैं :

बैठावे आठों बहिश्त में, छोटा बड़ा जो कोय ।
जो जैसी तैसी तिनों, महमद पहुँचावे सोय ।।

वेद में शरीयत के स्थान पर कर्मकांड, तरीकत के स्थान पर उपासना, हकीकत के स्थान पर ज्ञान तथा मारफ़त के स्थान पर प्रेम को माना गया है। इस प्रकार प्राणनाथ जी ने इमाम मेंहदी के आगमान से तथा उनके प्रेम संदेश से आत्मा को जगाकर परम धाम में अपने परब्रह्म से मिलने का मार्ग दर्शन किया है—

हके महमद मोमिनों वास्ते कै मेहर कर खेल खिलाए ।
एक दूर किए इनों वास्ते, एक नजीक लिए बुलाए ।।

१४ कियामतनामा छोटा

कुलजम स्वरूप के उपग्रंथ के रूप में यह कयामतनामा अपना विशिष्ट महत्व रखता है। इसमें हिन्दुस्तानी भाषा के माध्यम से २१८ चौपाइयाँ उपलब्ध हैं। इस ग्रंथ के अन्तर्गत ब्रह्म और जीव के पुनर्मिलन की स्थिति को दर्शाया गया है।

आखिरत के समय जब प्रलय हो जायेगा तब ईश्वर सभी आत्माओं को पुनः जीवित करेगा। ऐसी अवस्था में सभी आत्माएँ अपने रब के सम्मुख नत्मस्तक हो जायेगी। नेकी बदी (पाप-पुण्य) के आधार पर उनको वेहिश्त तथा दोज़ख अथवा बैकुण्ठ और नरक में प्रवेश दिया जायेगा।

इसलिए साधारण प्राण जनता को सजग करते हुए महामति प्राणनाथ जी कहते हैं—

"ऐ मोमिनों ग़फ़लत की निद्रा से जागो और अपने रब की उपासना में लीन हो जाओ, यह समय गफ़लत की नींद सोने के लिए नहीं वरन् हक की इबादत का है।"

मर मर सब कोई जात है चाहिए मोमिनों मौत फ़रक़ ।
दुनियाँ जीव ग़फ़लत के मोमिनों दिन अरस हक ।।

आखिरत तथा प्रलय की पेशींन गोई ह० मुहम्मद साहब ने भीं किया

है, तथा समस्त मानव जगत को एकता के सूत्र में बांधने का प्रयास भी करते हुए प्रतीत होते हैं। इसी तथ्य को स्पष्ट करते हुए प्राणनाथ जी कहते हैं :

एक दिन तब होवे ही, जब साफ होवे दिल।
एक हक बिना न होवही जी चौदे तबक आवे मिल ।।

बड़ा कयामतनामा

पिछले प्रकरण का वृहत् स्वरूप होने के कारण इसे बड़ा क़यामतनामा की संज्ञा प्रदान की गयी हैं। क़यामतनामा छोटा की अपेक्षा इसमें अधिक चौपइयाँ हैं, जो पूर्णरूप से हिन्दी भाषा में लिपिबद्ध हैं। वर्तमान समय में लगभग ५३१ चौपाइयों पर आधारित उक्त उपग्रंथ कुलजम स्वरूप की जान है। महामति प्राणनाथ जी का दर्शनवाद इस ग्रंथ में स्पष्ट दिखलाई पड़ता है। संसार को क़यामत की सूचना देकर अनभिज्ञ लोगों को सचेत करते हुए माया-मोह एवं अनेक सांसारिक आडम्बरों से मुक्ति का साधन प्राणनाथ जी ने सत्य एवं निष्ठा को बतलाया है। इस ग्रंथ की रचना चित्रकूट में की गयी।

कुरान के मुताबिक क़यामत के आसार स्पष्ट होने लगे तो प्राणनाथ जी ने कहा कि वह समय अब आ गया है जब इमाम मेंहदी के आगमन की सूचना दी गयी थी। इस संदर्भ में प्राणनाथ जी कहते हैं :

दसई ईसा ग्यारहीं इमाम बारही सूदीं फ़ज़र तमाम।
ए लिखया बीच सिपारे आम तीसमा सिपारा जाको नाम ।।

अलिफ कह्या अहमद को रूह अल्लाह ईसा नाम।
भीम महदी पाक सो एक तीन मिल भए इमाम ।।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उक्त ग्रंथ बड़ा क़यामतनामा के माध्यम से महामति प्राणनाथ जी ने वेद एवं कतेब में समन्वय रूप से दार्शनिक तत्वों को स्पष्ट किया है जिससे क़यामत अथवा प्रलय का पूर्ण संकेत मिलता है।

कुलजम स्वरूप और उसकी प्रमुख विशेषताएँ

महामति प्राणनाथ द्वारा प्रणीत "कुलजम स्वरूप" मध्य काल की एक पवित्रतम् रचना है। जिसके अन्तर्गत वेद एवं कतेब के सभी महान

ग्रन्थों का समावेश सुरक्षित है। प्राणनाथ जी ने सभी धार्मिक ग्रन्थों का गम्भीरता पूर्वक अध्ययन किया तथा उन्हें आध्यात्मिक एवं दार्शनिक दृष्टि से समान समझा है।

गहन अध्ययन के पश्चात "कुलजम स्वरूप" की विशिष्ट विशेषताएँ उभरकर सामने आती हैं, जो मूलत: निम्नलिखित प्रमुख विशेषताओं पर आधारित हैं—

१—धार्मिक विशेषता

२—आध्यात्मिक विशेषता

३—दार्शनिक विशेषता

४—नैतिक विशेषता

५—सामाजिक विशेषता

६—राजनैतिक विशेषता

७—आर्थिक विशेषता

१. धार्मिक विशेषता

महामति प्राणनाथ जी का आविर्भाव ऐसी विषम परिस्थितिमें हुआ, जबकि भारतीय सामाजिक संस्कृति का लगभग पतन होने वाला ही था। उन्होंने सभी धार्मिक ग्रंथों और शास्त्रों का समन्वय उपस्थित कर तत्कालीन समस्त सन्तों के प्रयास को पीछे छोड़ दिया। विश्व बन्धुत्व की भावना साधारण जनता तक पहुंचाने का जो अथक प्रयास महामति जी ने किया उसकी तुलना करना सूर्य को दीपक दिखलाने जैसा प्रतीत होता है।

तत्कालीन स्थिति का यदि गम्भीरतापूर्वक अवलोकन किया जाये तो हिन्दू एवं मुस्लिम के आपसी झगड़े चरम सीमा पर दिखाई पड़ते हैं। मुसलमानों का एकछत्र रहनुमा जिसे औरंगज़ेब के नाम से जाना जाता है, उसकी धार्मिक कट्टरता के उदाहरण आज भी प्रचलित हैं। उस धर्मान्ध शासक को सत्य धर्म का मार्गदर्शन देने का कठिन एवं असम्भव कार्य महामति प्राणनाथ ने ही किया था।

ऐसी विषम परिस्थिति में विश्वबन्धुत्व की कामना करना सत्रहवीं शताब्दी में एक बेजोड़ काम प्रतीत होता है। मानव धर्म की स्थापना का

जो बीड़ा महामति जी ने उठाया था, उसके लिए सम्पूर्ण भारतवर्ष को गर्व है।

सुब्रमण्यम भारती एवं अन्य महापुरुषों के अतिरिक्त महात्मा गांधी जी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिन्होंने महामति प्राणनाथ जी के उच्च विचारों एवं आदर्शों से अनेक प्रेरणाएँ प्राप्त कर, उन्नीसवीं शताब्दी में विश्व धर्म की एकता पर बल दिया तथा समस्त मानव को एक धर्म सूत्र में बांधने का प्रयास किया। महामति प्राणनाथ ने सभी प्रकार के धर्मावलम्बियों को उनके ही अनुसार सत्य का मार्ग प्रशस्त किया, हिन्दुओं को वेद से तथा मुसलमानों को कतेब द्वारा उनके कर्मों का सत्य स्वरूप प्रदान किया।

भागवत धर्मग्रंथ तथा कुरान शरीफ को आदर्श मानते हुए गीता के अनुसार, हिन्दू तथा मुस्लिम दोनों को सत्य मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान की।

महामति जी ने यह सिद्ध कर दिया कि सभी आदर्श ग्रंथ एक ही धर्म की ओर चलने के लिए कहते हैं। परन्तु सभी धर्म ग्रंथों के प्रवर्तक अपने-अपने धर्म को अच्छा और सत्य मानते हैं। इन्हीं आडम्बरों का खण्डन करके पुनः मानव धर्म का सच्चा सिद्धान्त महामति जी ने जब प्रस्तुत किया तो सभी आपसी झगड़े समाप्त होने लगे। परन्तु औरंगज़ेब की कट्टर धर्म नीति के कारण वे समस्त भारत में इस अनोखे कार्य को स्थापित करने में सम्भवतः असमर्थ रहे। सत्य धर्म की ओर संकेत करते हुए प्राणनाथ जी कहते हैं :

> मुस्लिम को मुस्लिम की हिन्दुओं हिन्दुओं की तर।
> ए समझे अब अपनी मिलें, जब आए इमाम आख़र ।।
>
> कु० सनंध-३३/२०

महामति जी यह मानते हैं कि सभी धर्मो के मूलभूत सिद्धान्त और मूलतत्व एक हैं तथा सभी महापुरुषों के धार्मिक अनुष्ठानों एवं सिद्धान्तों के मूल तत्व एक हैं, तथा इन्हीं तथ्यों पर धार्मिक एकता की बुनियाद रखी हुई है।

महामति प्राणनाथ ने अपने अद्वितीय ग्रंथ "कुलजम स्वरूप" में स्पष्ट दर्शाया है कि सम्पूर्ण मानव जाति एक ही ईश्वर के बन्दे हैं, तथा सभी को समान अधिकार प्राप्त हैं। मोक्ष की प्राप्ति तभी सम्भव है जब समस्त धार्मिक विद्वेषों के स्थान पर एक ही धर्म को लक्ष्यार्थ मान लें।

आध्यात्मिक विशेषता

महामति प्राणनाथ ने सभी मतों को स्पष्ट करते हुए उनमें तारतम्य दिखलाया है, वेद और कतेब में पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित करते हुए "स्वयं" को मजिया माना है, तथा सांसारिक यात्रा में 'मुहम्मद रूपी' मोती को भली भांति परखा है। प्राणनाथ के अनुसार आध्यात्मिक व्यक्ति जब अपनी अर्न्तयात्रा पर चल पड़ता है, तो उसकी दुनियावी चाल में परिवर्तन आ जाता है क्योंकि आत्मा की आंखें खुलते ही सामान्य चक्षुओं की गति बदल जाती हैं। कुलजम स्वरूप की आध्यात्मिक विशेषता के अन्तर्गत मोमिन "ब्रह्मसृष्टि" का बहुत ऊँचा स्थान मान गया है जिसे अर्श अथवा परम धाम से अवतरित मानते हैं।

इस प्रकार सच्चे मोमिन का काम तथा निवासस्थान प्रकाशमय होता है जो प्रेम की लहरों से ओतप्रोत हैं। कतेब की बारीकियों को समझाते हुए प्राणनाथ जी कहते हैं :

मोमिन बड़े मरातबे, नूर विलंद से नाजल।
इनों काम हाल सब नूर के, अंग इसकै के भी गल ।।

'नूर जलाल' को अक्षर ब्रह्म मानते हुए, नूरूल-अला नूर को अक्षरातीत माना हैं। इस प्रकार अक्षरब्रह्म भीं अक्षरातीत ब्रह्म के दर्शन हेतु प्रतिदिन आते हैं तथा अपने प्रियतम से प्रेम करके आत्मविभोर हो जाते हैं। प्रेम के महत्व को स्पष्ट करते हुए प्राणनाथ जी प्रेम को परधाम तक पहुँचने का साधन बतलाते हैं। उनका अध्यात्मवाद हीं "कुलजम स्वरूप" की विशिष्टता का प्रमाण है।

वे सभी जीव को एक समान समझते थे तथा सांसारिक माया-मोह से ऊपर उठकर सभी को मोक्ष-प्राप्ति का सुगम साधन प्रदान करना चाहते थे। महामति के अनुसार उस "परमसत्ता" की चेतना इस "लघु" के अहं को निरन्तर विगलित करते हुए आन्तरिक ऊर्जा को व्यापक बनाती रहती है।

तभी मानसी सेवा युक्त आध्यात्मिक मन, सुख-दुःख के द्वंद्व से ऊपर उठ जाता है।

इस प्रकार महामति प्राणनाथ ने समस्त आत्माओं को एक दिशा प्रदान की है जो लिंग भेद, जाति तथा रंग भेद से ऊपर उठकर 'परमधाम' तक पहुंचने में सहायक सिद्ध होती है। यही आध्यात्मिक चेतना ही आत्म साक्षात्कार की दिशा बतलाई गयी है।

दार्शनिक विशेषता

कुलजम स्वरूप की दार्शनिक विशेषता समन्वयवादी दर्शन पर आधारित है तथा कर्म-दर्शन की ओर विशेष बल प्रदान करती है। हिन्दू-मुस्लिम तथा अन्य सभी दार्शनिक रीति-रिवाज के अनुसार उनमें परस्पर सम्बन्ध स्थापित करते हुए महामति प्राणनाथ ने विश्व धर्म की स्थापना की नींव डाली जो मानवता को दार्शनिक सन्देश देती है।

महामति प्राणनाथ जीवात्मा को कर्म-बन्धन से मुक्त कराना चाहते थे। उनका कर्मदर्शन एक जीवित दर्शन है। यह व्यवहार एवं सिद्धांत की एकरूपता का दर्शन है।

प्राणनाथ जी के निष्काम कर्म में परमात्मा प्रियतम के लिए पूर्ण समर्पित जीवन है जो पूर्णतया मन की पवित्रता पर आधारित है। उनका विचार था कि मन की अपवित्रता सम्पूर्ण बाहरी पवित्रता को नष्ट कर देती है। इस प्रकार ज्ञात होता है कि मन को पूर्णरूप से अलौकिक करने के लिए महामति का दार्शनिक जीवन ही पर्याप्त है। जिसकी रोशनी में आत्मा परमात्मा की अलौकिक छवि में नहा कर स्वच्छ एवं निर्मल हो जाती है।

आत्मा तथा परमात्मा की विशेषता का उल्लेख करते हुए महामति जी कहते हैं :

कोई कहे ब्रह्म आतम, कोई कहे पर आतम।
कोई कहे सोह सबद ब्रह्म, या विध सब को आगम।

अर्थात् कोई कहता है कि आत्मा ब्रह्म है और कोई कहता हैं कि परमात्मा

ब्रह्म है। कोई कहता है कि शब्द ही ब्रह्मस्वरूप है। परन्तु सम्पूर्ण संकेतों से परिपूर्ण परब्रह्म सब से परे अजेय तथा अमर है।

प्राणनाथ के अनुसार सत्, चित् तथा आनन्द का वास्तविक स्वरूप ही अनन्त एवं सत्य है। यदि "कुलजम स्वरूप" का गहन अध्ययन किया जाय तो स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि आत्मा में परमात्मा का अंश अवश्य ही विद्यमान है तथा सम्पूर्ण सृष्टि परमात्मा (परब्रह्म) में केन्द्रित हैं। अनेक ग्रंथों एवं पंथों के होते हुए पूर्णब्रह्म परमात्मा एक है। अर्थात् "पूर्णब्रह्म" अक्षर ब्रह्म से परे अक्षरातीत है। इसी तत्थ्य को स्पष्ट करते हुए महामति जी कहते हैं :

> महामत होसी सब जाहेर, मिले अक्षरातीत-भरतार।
> बैराट होसी नेहे चल, उड़यों माया मोह अहंकार ।।

अर्थात् अक्षरातीत के मिल जाने पर सभी अंधकार समाप्त हो जायेगा माया-मोह एवं अहंकार का भेद अपने आप मिट जायेगा। इस प्रकार महामति प्राणनाथ के जीवन एवं कार्यों का दार्शनिक अवलोकन करें तो ज्ञात होता है कि मन में पवित्रता आते ही क्षणमात्र में ही अपने प्रियतम परमात्मा से मिलन हो जाता है।

नैतिक विशेषता

महामति प्राणनाथ ने धर्म के सभी स्वरूपों को अपने में आत्मसात कर लिया तथा हिन्दू, बौद्ध, ईसाई तथा इस्लाम आदि सभी धर्मों के लिए 'समन्वित रूप' बन गये। भारतवर्ष की 'राष्ट्रीय एकता' के लिए महामति प्राणनाथ का यह विश्वव्यापी दृष्टिकोण अत्यन्त आवश्यक था जो भारत की सांस्कृतिक प्ररम्परा के ठीक अनुरूप था।

महामति प्राणनाथ ने प्रणामी सम्प्रदाय के मुख्य सचेतक का नेतृत्व करते हुए जाति-पांति तथा लिंग भेद से ऊपर उठकर सभी धर्मों के मानने वालों को आपस में एक हो जाने का आह्वान किया तथा स्त्री एवं पुरुष को समान अधिकार प्रदान किया।

इस प्रकार के साहसिक एवं साहित्यिक कार्य को देखते हुए हम सहज ही इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि महामति प्राणनाथ तत्कालीन युग के परिवेश में एक ऊंची भूमिका प्रतिष्ठित करते हैं।

सत्रहवीं शताब्दी की उस विषम परिस्थिति में भी महामति प्राणनाथ ने अपनी वाणी द्वारा जो नवजीवन का संचार किया, उससे उनके नैतिक विशेषता की पुष्टि हो जाती है।

सामाजिक विशेषता

महामति प्राणनाथ जी सदैव राष्ट्र के कल्याण के लिए शान्तिमय सन्देश देना चाहते थे। उदारता बरतने के लिए उन्होंने औरंगज़ेब को भी संदेश दिया परन्तु धार्मिक कट्टरता के कारण औरंगज़ेब पर इस संदेश का कोई प्रभाव नहीं पड़ सका। प्राणनाथ जी निराश नहीं हुए। उनका प्रयास जारी रहा। वे जाति प्रथा को जन्म से अलग मानते थे। मनुष्य के कर्मों पर उनका अटूट विश्वास था। नारी को उच्च स्थान प्राप्त करने की व्यवस्था करते हुए पुरुषों के समान उन्हें भी अधिकार प्रदान किया। समाज के प्रत्येक क्षेत्र में उदारतापूर्वक कार्य कार्य करने पर हम स्वच्छन्द रूप से महामति जी को वास्तविक समाज सुधारक कह सकते हैं।

सम्पूर्ण देश में राष्ट्रीय चेतना को जागृत करते हुए उन्होंने भेदभाव जाति-पांति तथा लिंगभेद की प्रथा का घोर विरोध किया। वे सामाजिक-अत्याचार के भी विरोधी थे।

मध्ययुगीन तत्कालीन छुआ-छूत के कलंक को मूल रूप से समाप्त करने का अथक प्रयास महामति जी आजीवन करते रहे। वे अपनी नई सामाजिक व्यवस्था के अतर्गत शोषण और सामाजिक अत्याचार को कतई स्थान नहीं देना चाहते थे। वह तो सभी धर्मों एवं वर्गों को समान अधिकार प्रदान करना चाहते थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि मध्ययुग के प्रगतिशील सामाजिक विचारकों में महामति प्राणनाथ का योगदान अत्यंत सराहनीय एवं उल्लेखनीय है। गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए भी वे एक महान समाज सुधारक के रूप में, अन्य सन्तों से अधिक महत्वपूर्ण दिखाई पड़ते हैं।

राजनैतिक विशेषता

महामति प्राणनाथ कृत 'कुलजम स्वरूप' के अनुसार यह स्पष्ट हो जाता है कि सत्रहवीं शताब्दी में तत्कालीन शासक औरंगज़ेब की धार्मिक कट्टरता अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी। साधारण जनता के मन में जो भय उत्पन्न किया गया था, उसका भारतीय इतिहास में विशिष्ट स्थान है।

मूगलकालीन शासकों में अकबर महान जैसे शासक जो उदारता की प्रतिमूर्ति कहलाते थे, उनके वंशज इतने कठोर वन जायेंगे ऐसा कोई स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था।

शाहजहां के चार पुत्रों दारा, शुजा, मुराद और औरंगज़ेब में केवल औरंगज़ेब ही ऐसा शासक मुगलवंश में उत्पन्न हुआ जिसने पूरे वंश की गरिमा को अपनी तलवार की नोक पर उछाल दिया। अपने सगे (वास्तविक) भाइयों को मौत के घाट उतार कर उन्हें सदैव के लिए समाप्त कर दिया।

"दारा" जैसे विद्वान एवं संस्कृत के ज्ञाता को उभरने से पहले उसे खत्म कर दिया। अपनी क्रूरता के कारण समस्त भारतीय जनता को इस्लाम धर्म की विशेषता समझाये बिना ही बलपूर्वक उन पर बोझ स्वरूप "जज़िया कर" लगाना उचित समझता था।

छोटे-छोटे हिन्दू शासकों को जीत कर उन पर अपना अधिकार जमाया और दक्षिण की ओर अपनी पैनी दृष्टि दौड़ा कर उसे भी अपने विशाल साम्राज्य में सम्मिलित करने की उसकी परम अभिलाषा सदैव बनी रही। ऐसी विषम परिस्थिति में भी महामति प्राणनाथ सत्रहवीं शताब्दी के सबसे कट्टर शासक औरंगज़ेब की धर्मान्धता को दूर करने के लिए १५ महीने तक दिल्ली में रह कर साक्षात्कार करने की इच्छा व्यक्त करते रहे, परन्तु तत्कालीन काज़ी, शहर कोतवाल एवं प्रधानमंत्री के संकीर्ण दृष्टिकोण के कारण ऐसा सम्भव नहीं हो सका।

तत्पश्चात् महामति ने भारतीय राजाओं को संगठित करने का प्रयत्न किया। परन्तु औरंगज़ेब की भयावह प्रचण्ड राजनीति से भयभीत हिन्दू राजाओं को आपस में एकजुट करने में भी वह पूर्णतया असफल रहे।

शिवाजी के पदचिह्नों पर चलने वाले छत्रसाल बुन्देला को अपना शिष्य बनाकर भारतीय राजनीति में एक नया अध्याय जोड़ दिया। इस प्रकार नयी प्रेरणा प्रदान करके प्राणनाथ जी ने राष्ट्रीय एकता के टिमटिमाते दीपक को ज्योतिर्मय कर दिया।

आर्थिक विशेषता

मध्य युग में जनता का जीवन सामान्यतः सुखमय था। आर्थिक स्थिति

अच्छी थी। शाहजहां का समय तो 'स्वर्णयुग' कहलाता है। परन्तु विदेशी राजदूत तथा फ्रांस एवं इटली से आने वाले 'अंग्रेज़ पर्यटक' की आंखें भारतीय सम्पत्ति और ऐश्वर्य को देख कर चकाचौंध हो चुकी थीं, तथा वे समय की राह देख रहे थे। कोहनूर और तख्त ताऊस उनके लिए आश्चर्य की बात थी। इसी घात में प्रत्येक विदेशी भारत की पवित्र भूमि पर अपना आधिपत्य स्थापित करने की लालसा रखता था।

औरंगज़ेब के शासनारूढ़ होते ही समस्त भारत में उथल-पुथल आरम्भ हो गयी तथा उसके सम्पूर्ण समय में युद्ध का बोल-बाला रहा जिससे सभी विकास के साधन समाप्त होते गये। फलतः आर्थिक स्थिति पहले की अपेक्षा निरन्तर बिगड़ती गयी। हिन्दू राजाओं की स्थिति डांवा-डोल होती रही तथा गुजरात राज्य की आर्थिक स्थिति सोचनीय हो गयी थी।

समय पर जामनगर के राजा द्वारा धन न दिये जाने पर कुतुब खां ने तत्कालीन 'जाम-दीवान' महामति प्राणनाथ जी को ही कैद कर लिया था।

खेती के अतिरिक्त व्यापार के अन्तर्गत कताई-बुनाई, धातु कार्य, बढ़ईगिरी, मिट्टी के वर्तन बनाना तथा चमड़े का काम करना इत्यादि तत्कालीन प्रमुख आर्थिक साधन थे।

मध्य युग में बड़े पैमाने पर होने वाले व्यापार में गुजरात का महत्वपूर्ण स्थान था। पोरबन्दर में महामति प्राणनाथ के शिष्य सेठ लक्ष्मण के पास लगभग एक सौ जलपोत थे जिनके द्वारा वे विदेशों में भी व्यापार करते थे। परन्तु दैवी प्रकोप के कारण उनका समस्त कार्य-व्यापार नष्ट हो गया तो सेठ लक्ष्मण विधिवत् रूप से महामति प्राणनाथ के अनुयायी हो गये और उनके अनन्य भक्त बन गये।

प्राणनाथ द्वारा प्रचालित धार्मिक प्रेरणा के अन्तर्गत आध्यात्मिक राजनैतिक एवं आर्थिक प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सहयोग प्रदान करके सेठ लक्ष्मण ने जो गति प्रदान की उसकी गणना अन्य शिष्यों से अधिक सराह-नीय है।

इस्लाम धर्म और उसकी विशेषताएँ

अध्याय ३

इस्लाम धर्म और उसकी प्रमुख विशेषताएँ

इस्लाम धर्म क्या है ?

इस्लाम धर्म हमें सीधा और सच्चा मार्ग दिखलाता है और यह बतलाता है कि "जिस प्रभु ने हमें असंख्य नेमतें प्रदान कीं, जिसके हाथ में हमारी दुनिया और हमारी आख़िरत है, जिसके थोड़े से संकेत से ही हमारी सफलता और विफलता सम्बद्ध है बुद्धि, शिष्टता और मानवता हर एक दृष्टिकोण से हमारा कर्तव्य है कि हम उसकी और केवल उसी की बन्दगी करें।" यह इस्लाल धर्म की मूल रूप-रेखा है जिस पर आधारित मानव जाति के कल्याण का स्वरूप सुनिश्चित है।

"ऐ इन्सानो। अपने रब की बन्दगी करो, जिसने तुम्हें और तुमसे पहले के लोगों को पैदा किया, जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन का फ़र्श बनाया और आसमान की छत; तथा आसमान से पानी बरसाया, उससे तुम्हारे खाने के लिए फ़लों को पैदा फ़रमाया। इसलिए जब तुम्हें ज्ञात हैं तो तुम एक अल्लाह की बन्दगी में किसी को शरीक मत ठहराओ।"

(कुरान शरीफ़ सूर : बकर—२१)

इस प्रकार कुरान शरीफ़ के द्वारा स्पष्ट हो जाता है कि अल्लाह की बन्दगी और उसकी आज्ञा पालन ही का दूसरा नाम इस्लाम धर्म है।

इस्लाम का अर्थ हैं, स्वयं को अल्लाह की बन्दगी और आज्ञा पालन में अर्पित कर देना अर्थात स्वयं को अल्लाह के हवाले कर देना। इसी तथ्य को हम कुरान शरीफ़ की रोशनी में देखते हैं तो सूरह बकर की आयतों से ज्ञात होता हैं जिसमें स्पष्ट लिखा है :

"हां। जिसने अपने आपको पूरे भक्ति भाव के साथ अल्लाह के हवाले कर दिया और वह निष्ठावान तथानेक है, उसके लिए उसके 'रब' के पास

उसका बदला है। ऐसे लोगों के लिए 'आख़िरत' में न कोई भय की बात है, न वे दु:खीं होंगे।" (कु० सूर : बकर : ११२)।

उपरोक्त तत्थ्य को समझ लेने के पश्चात् हम निम्नलिखित छ: प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन करेंगे--

१. धार्मिक विशेषता
२. आध्यात्मिक विशेषता
३. दार्शनिक विशेषता
४. नैतिक विशेषता
५. सामाजिक विशेषता
६. सार्वजनिक एवं विशिष्ट विशेषतायें (टिप्पणियां)

१. धार्मिक विशेषता

इस्लाम धर्म स्वाभाविक धर्म ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व का धर्म भी है। यह संसार जिसके अन्तर्गत हम रहते-बसते हैं, जिसके नियमों के बन्धन में हम जकड़े हुए हैं और जो कुछ हम करते हैं, इन नियमों के अन्तर्गत ही कर सकते हैं तथा इन्हीं नियमों पर हमारा सम्पूर्ण भौतिक विकास निर्भर है क्योंकि विज्ञान, प्रकृति के नियमों के ज्ञान ही को कहते हैं यह सृष्टि अपने असीम फैलाव के साथ ईश्वर के नियत किये हुए नियमों की पाबन्द है और उसके आज्ञापालन में लगी हुई है--

यदि हम ईश्वर के नियमों का उल्लंघन करेंगे तो बेशक (निश्चित) हम तबाह हो जायेंगे। इसी तथ्य को कुरान शरीफ़ में दर्शाया गया है।

"क्या ये लोग अल्लाह के दीन (इस्लाम) के सिवा कोई और दीन चाहते हैं, हालांकि आसमान और जमीन में जो कुछ है, स्वेच्छा के साथ, खुशी से या विवशतापूर्वक उसी का आज्ञापालन कर रहा है, और सबको उसी की तरफ लौटना है।"

(कुरान शरीफ़ आले अमरान/८३)

इस्लाम धर्म की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह मनुष्य को ऐसी जीवन प्रणाली प्रदान करता है जो परिवार, जाति, कौम और मानव

जाति सबके अधिकार न्याययुक्त रूप से निर्धारित करता है। न्याय और संतुलन के साथ सब की समस्याओं का समाधान भी करता है। मानव जाति की विभिन्न जातियों और वर्गों को ऊपर उठाने के साधन प्रदान करता है। मनुष्य बाह्यान्तर, देह, आत्मा और मन-मस्तिष्क सब के लिए सुख-शान्ति की जमानत देता है। इस्लाम धर्म मनुष्य को मनुष्य बनाता है, वह मनुष्य के हृदय में अल्लाह (ईश्वर) की बड़ाई और उसका भय बिठाता है, उसका प्रेम और उसके लिए शुक्र, विनय और भक्ति के भाव हृदय और मस्तिष्क में विकसित करता है।

इस्लाम उसे बताता है कि अल्लाह हर समय हर स्थान पर मनुष्यों के साथ है। उसकी एक-एक कार्यविधि उसकी दृष्टि में है। अल्लाह के फरिश्ते हर अवस्था में उसके समीप होते हैं और उसके समस्त जीवन का रिकार्ड रख रहे हैं।

आख़िरत में हर व्यक्ति उस रिकार्ड के साथ ईश्वर के समक्ष प्रस्तुत होगा जहाँ ईमान और अच्छे कार्यों के लिए उसे स्वर्ग प्रदान किया जायेगा और ख़राब अथवा बुरे कार्यों के लिए उसे दर्दनाक अज़ाब के साथ नरक में झोंक दिया जायेगा।

आख़िरत के दैवी प्रसादों तथा नरक की भीषण यातनाओं का विश्वास मनुष्य को प्रत्येक अवस्था में उत्तरदायी और चरित्रवान बनाये रखता है। इस्लाम धर्म उपासनाओं की एक पद्धति प्रस्तुत करता है जो अल्लाह और मनुष्य के सम्बन्धों को मज़बूत अथवा सुदृढ़ बनाता है। यही पद्धति मानव को मानवता और चरित्र की प्रतिमूर्ति बनाने के सम्बन्ध में सबसे अच्छी भूमिका निभाती है।

२. आध्यात्मिक विशेषता

इस्लाम धर्म की विशेषता प्रमुख रूप से अध्यात्मवाद पर ही आधारित है। माया-मोह के जाल से बाहर आकर वास्तविक सत्य को परख लेने के पश्चात् मनुष्य मारफ़त के श्रेष्ठ स्थान को ग्रहण कर लेता है और इश्क मजाज़ी से ऊपर उठकर इश्क हक़ीक़ी की मन्ज़िल पार करता है। तत्पश्चात् खुदा (परब्रह्म) के दर्शन पाकर उसमें एकाकार हो जाता है।

इस्लाम धर्म तौहीद अर्थात् एकेश्वरवाद पर बल देता है जो इसकी प्रमुख विशेषता है। इसके आधार पर विश्व-बन्धुत्व की भावना साकार हो सकती

है। इस्लाम धर्म के अन्तर्गत संयम, धैर्य एवं दृढ़ता को विशेष महत्व प्रदान किया गया है जिस पर अमल करने के पश्चात् मनुष्य आध्यात्मिक रूप से देवता अथवा फरिश्ता से कहीं ऊँचा बन सकता है।

इस्लाम धर्म के अनुसार अल्लाह ने हमें पैदा किया। वही हमें पाल रहा है, वही हमारी हर ज़रूरत पूरी करता है, हम सिर से पैर तक उसके उपकारों में डूबे हुए हैं। इन्हीं तथ्यों का आभास होने पर हम उस अदृश्य शक्ति के पुजारी अथवा भक्त बने हुए हैं और निष्ठा एवं श्रद्धा से आगे भी उसका गुणगान करते रहते हैं।

इस्लाम धर्म-बन्दगी ऐसी है कि उससे भक्तिभाव भी व्यक्त होता है और उसके द्वारा हम अल्लाह की वफ़ादारी और उसकी बन्दगी के लिए प्रतिज्ञाबद्ध भी होते हैं। इन्हीं कार्यों के द्वारा मनुष्य एक उत्तम मनुष्य कहलाने के योग्य बनता है। यही आराधना और इबादत इस्लामी जीवन की आधार-शिला है।

इस्लाम धर्म की बुनियाद छह चीजों पर आधारित है—

१. हज़रत मोहम्मद सल्ल० को अल्लाह का रसूल मानना।
२. तौहीद पर अमल करना (इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और ह० मु० स० उसके रसूल हैं)।
३. नमाज़ पढ़ना।
४. रोज़ा रखना।
५. हज करना।
६. ज़कात देना।

इन्हीं छह आधारभूत स्तम्भों पर इस्लाम की पूरी इमारत सुदृढ़ है। इसके अतिरिक्त अल्लाह अथवा परमेश्वर के स्मरण के लिए तौबा एवं क्षमा-याचना का सहारा लेना भी उचित है तथा जब भी यह आभास हो कि अमुक गलती या त्रुटि हो गयी है, मनुष्य को चाहिए कि वह तुरन्त अपनी गलती पर लज्जित हो जाये और प्रभु से क्षमा-याचना करे तथा सच्चे रास्ते पर चलने के लिए पुनः दृढ़प्रतिज्ञ हो जाना चाहिए। क्षमा-याचना तथा तौबा प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य है चाहे वह कितना ही बड़ा भक्त एवं परहेज़गार क्यों न हो, जैसा कि कुरान शरीफ़ से विदित है।

"अल्लाह के बन्दे रात की अन्तिम घड़ियों (क्षणों) में क्षमा-याचना करते हैं।'

(कु० आले इमरान),

कुरान शरीफ़ सूर: तौबा के अनुसार खुदा और बन्दे के बीच एक क्रय-विक्रय का सौदा होता है। बन्दा जब ईमानपूर्वक "लाइलाह इल्लल्लाह" कहता है और स्वत: को खुदा की बन्दगी में समर्पित कर देता है तो वह वास्तव में अपने आपको, अपनी सभी योग्यता एवं शक्ति को तथा अपनी समस्त सम्पत्ति को अल्लाह अथवा परमेश्वर के हाथ बेच देता है। परमात्मा इस कृत्य के वदले मनुष्य को उन्नत अथवा स्वर्ग की अपार एवं सदैव रहने वाली नेमतें प्रदान करता है।

इस्लाम धर्म की आध्यात्मिक विशेषता के अन्तर्गत हम देखते हैं कि अल्लाह की बंदगी और उसकी अवज्ञा से बचने के लिए हमें विशेष हिदायत दी गयी है। कुरान शरीफ़ से उद्धृत है—

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और उसकी आज्ञा का पालन करो और तुम्हें जब मौत आये तो इस हालत में कि तुम (आज्ञाकारी) अर्थात् सच्चे मुसलमान रहो।" (कु० शरीफ़ आले इमरान १०२)

३. दार्शनिक विशेषता

इस्लाम धर्म के अनुसार अल्लाह एक है। एक इलाह माबूद (पूज्य) है। लाइलाह-इल्लल्लाह ही सृष्टि का रचयिता है, खुदा होने में कोई उसका शरीक नहीं है। इस्लाम धर्म का 'दर्शन' हमें यही शिक्षा प्रदान करता है कि 'एकेश्वरवाद' पर दृढ़प्रतिज्ञ बने रहो और समस्त मानव को अपना भाई समझकर उनके प्रति सदाचार का व्यवहार करो।

असत्य के प्रभाव को हटाकर ज्ञान के द्वारा सत्य की स्थापना करना तथा वास्तविक धर्म से समस्त मानव जाति को अवगत कराना ही इस्लाम की दार्शनिक शिक्षा का उद्देश्य है।

माया के स्वरूप को पहचान कर अज्ञानता से मुक्ति पा लेने के पश्चात् मनुष्य का कर्तव्य है कि वह खुदा को पहचाने, उसकी बन्दगी करे। नमाज़ पढ़े, रमज़ान के रोज़े रखे। हज़ करने के लिए काबाशरीफ़ की ज्यारत करे। ज़कात और खैरात करे।

इन कार्यों के करने से वास्तव में मनुष्य नेक और ईमानदार बन जाता है। इस्लाम के अन्तर्गत आख़िरत और सृष्टि-रचना, रूह तथा खुदा आदि दार्शनिक विषयों पर मूल रूप से प्रकाश डाला गया है।

स्वर्ग तथा नरक (जन्नत-दोजख) का उल्लेख करके मनुष्यों के मन में भय का जो वातावरण उत्पन्न होता है, उसी के अन्तर्गत वह अपने रब (परब्रह्म) को पहचानने में सफल होता है ।

स्वर्ग में आराम की सभी सामग्री का उल्लेख तथा भव्य-रमणीक स्थल का विवेचन, जैसे—सोने-चाँदी के महल, दूध की नदियाँ एवं नहरें, नाना प्रकार के वृक्ष, फल एवं सुन्दर बाग-बगीचे तथा दोजख (नरक) में जलता हुआ भयावह अग्निकुण्ड, उसमें ज़हरीले साँप, नाग, बिच्छू आदि प्रताड़ना की सामग्री के स्मरण से ही मनुष्य रोमान्चित हो जाता है और उस परमेश्वर 'खुदा' की बन्दगी करने के लिए बाध्य हो जाता है । वास्तव में उसके अतिरिक्त बन्दगी के योग्य और कोई नहीं । अल्लाह के अलावा किसी दूसरे को पूज्य मानना, किसी की उपासना करना और उससे मदद माँगना, उसके साथ किसी को सम्मिलित करना ऐसा घोर अपराध है जिसे खुदा कभी माफ़ नहीं कर सकता । इस्लाम के दार्शनिक सिद्धान्त के अनुसार "एकेश्वर-वाद" का पालन करना अति आवश्यक है जैसा कि कुरान शरीफ़ के निम्न-लिखित आयत के अनुवाद से विदित होता है—

"बेशक अल्लाह इस जुर्म को माफ़ न करेगा कि उसके साथ किसी को शरीक़ किया जाय और इससे नीचे के सभी गुनाह जिसके लिए चाहेगा, माफ़ कर देगा ।" [कु० सूरः (निसा-४८-११६)] ।

एकेश्वरवाद के पश्चात्, "आखिरत" पर भी ईमान लाने को कहा गया है क्योंकि "आख़िरत" में रुपया, पैसा और जायदाद आदि सामान न होगा कि उनको देकर किसी के 'मारे हुए' हक़ की क्षतिपूर्ति की जा सके । वहाँ तो केवल 'नेकियाँ' होंगी, इन्हीं नेकियों के रूप में ही कीमत का भुगतान किया जायेगा । इसलिए किसी का हक़ मारने के बदले में ज़ालिमों की नेकियाँ उन लोगों को दे दी जायेंगी जिनका हक मार कर उन पर जुल्म किया गया होगा । यदि उन ज़ालिमों की नेकियाँ समाप्त हो जाएँगी तो उन्हें दर्दनाक यातनाओं के साथ दोज़ख (नरक) में डाल दिया जाएगा । (प्रमाणित हदीस से उद्धृत है) ।

उपरोक्त विवेचन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि 'एक' खुदा की 'इबादत' ही मनुष्य को आख़िरत के दिन सुख एवं सम्मान प्रदान करेगी। दार्शनिक विशेषता के अन्तर्गत-इबादत की मुख्यत: चार अवस्थाएँ होती हैं—

शरीयत, तरीकत, हकीकत और मारफ़त

मनुष्य जब अन्तिम अवस्था अर्थात् मारफ़त के उच्च स्थान पर फाएज़ (पीठासीन) हो जाता है तो वह खुदा (परब्रह्म) के सन्निकट पहुँच कर उसकी तजल्ली (विशिष्ट लीला) में मनमुग्ध हो जाता है।

नैतिक विशेषता

इस्लाम धर्म की नैतिक शिक्षाएं अतिउत्तम हैं, इस्लाम धर्म के अनुसार अच्छे आचरण का असाधारण बदला अवश्य मिलेगा। यह शिक्षा हमें चरित्रहीनता के लौकिक एवं पारलौकिक दुष्परिणामों से सावधान करती है।

नैतिक सिद्धान्तों को राजनीति से अलग हट कर, व्यक्ति, कुटुम्ब, जाति, समाज और प्रत्येक चीज़ से सर्वोपरि बनाता है।

इस्लाम समस्त मानव जाति को एक खुदा का बनाया हुआ, एक माँ-बाप की औलाद, एक परिवार और कुटुम्ब बतलाता है। सब की जान-माल तथा इज़्जत को प्रतिष्ठित करता है। सबको समान न्याय पाने का अधिकारी ठहराता है तथा सभी के साथ सेवा एवं सद्भाव का आदेश प्रदान करता है। इस्लाम बन्दों के अधिकारों को असाधारण महत्व प्रदान करता है जो पूर्णतया नैतिक विशेषताओं पर आधारित हैं। माँ-बाप, सम्बन्धियों, पड़ोसियों, गरीबों, यतीमों, विधवाओं, दासों और सभी मनुष्य-जाति को—चांहे वह मुस्लिम हों या ग़ैर मुस्लिम, सब के अधिकार और उनके जायज हक़ प्रदान करता है। किसी के हक़ को मारना बहुत बड़ा पाप बतलाया गया है।

इस प्रकार इस्लाम धर्म की नैतिक विशेषताएं सम्पूर्ण मानव जाति को सद्मार्ग पर चलने का आदेश प्रदान करती हैं जैसा कि निम्न आयत के अनुवाद से विदित है—

"यदि तुमने मेरी बन्दगी के प्रति कृतज्ञता दिखलाई तो मैं तुम्हें और अधिक नेमतें दूंगा, और यदि तुम सत्य धर्म से विमुख होकर, अकृतज्ञ बने तो (जान लो) मेरा अज़ाब बहुत ही सख़्त (दर्दनाक) हैं।"

(कु० शरीफ (इब्राहीम)–६)

इस्लाम धर्म के अनुसार अल्लाह ने केवल अपनी बन्दगी का ही आदेश नहीं दिया वरन् सभी मनुष्यों से सद्व्यवहार का आदेश प्रदान किया है। इसके अन्तर्गत माँ-बाप से लेकर समस्त जाति के प्रति सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार करने का आदेश दिया गया है। इस्लाम धर्म की नैतिक विशेषताओं के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सत्य धर्म में केवल दो तथ्य बहुमूल्य हैं—

१. अल्लाह की बन्दगी (एकेश्वरवाद के अनुरूप)

२. मानव जाति के प्रति सद्व्यवहार का पालन करना।

"कुरान शरीफ़ के अनुसार, नेकी और ईमानदारी तो यह है कि मनुष्य अल्लाह पर और आख़िरत पर ईमान लाये और अपने 'माल' (धन) को अपने आश्रितों पर ख़र्च करे। नमाज़, ज़कात और वचन का पालन सच्चे मन से करे तथा समस्त समस्याओं के मध्य धैर्य से काम ले।"

अनुवाद (कु० शरीफ सूर : बकर : १६६)

इस्लाम धर्म हमें न्याय एवं सद्व्यवहार का पालन करने के लिए प्रेरित करता है। प्रत्येक व्यक्ति चाहे दोस्त हो या दुश्मन, मुस्लिम हो या गैर मुस्लिम, वह न्याय पाने का अधिकारी है। दुश्मनी में भी किसी व्यक्ति या समूह पर अन्याय करना पाप है।

प्रत्येक मनुष्य की जान आदर पाने के योग्य है, अकारण और नाहक किसी का खून बहाना घोर अपराध और अन्याय है। इसी प्रकार किसी के माल (धन) को भी उससे छीन लेना पाप है।

"प्रत्येक व्यक्ति की प्रतिष्ठा को ध्यान में रखना चाहिए, अपनी धारणा के अनुरूप इबादत करने का अधिकार एवं अवसर प्रदान करना चाहिए। किसी भी व्यक्ति को अपनी इच्छा के अनुसार धार्मिक अनुष्ठान एवं इबादत करने का समान अधिकार होना चाहिए तथा धर्म परिवर्तन

के लिए किसी को बाध्य नहीं करना चाहिए और किसी के धार्मिक मामले में हस्तक्षेप भी करना उचित नहीं है।"

किसी के इबादत गाह अथवा पूजास्थल का अपमान भी नहीं किया जा सकता। इस्लाम धर्म की नैतिक विशेषताएँ उन सभी महत्वपूर्ण बातों की ओर संकेत करती हैं जो आपसी एकता के लिए आवश्यक हैं। इसके अनुसार किसी के धार्मिक गुरु महात्मा को बुरा नहीं कहा जा सकता, किसी के (पर्सनल ला) को समाप्त नहीं किया जा सकता। प्रत्येक मनुष्य को इज्जत और सम्मान के साथ जीविकोपार्जन करने का समान अधिकार प्राप्त होना चाहिए। मानव जाति के मूल अधिकार से किसी को बञ्चित करने का अधिकार किसी भी धर्म को नहीं है। उचित ढंग से 'रोज़ी-रोटी' के लिए प्रयत्नशील रहने तथा स्वयं शिक्षा प्राप्त करके अपनी संतान को भी अपने धर्मानुसार शिक्षा दिलाने में किसी को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

महिलाओं की प्रतिष्ठा को किसी प्रकार भंग करना घोर पाप है तथा न्याय के विषय में भी किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं करना चाहिए।

उपरोक्त सभी बातों से स्पष्ट हो जाता है कि "मानव अधिकार अमीर-गरीब, काले-गोरे, मुस्लिम-गैर मुस्लिम, दोस्त-दुश्मन, सबके लिए एक समान है और इस्लाम धर्म की नैतिकता का यही प्रतीक है। कुरान शरीफ़ के अनुसार—

"हे ईमान लाने वालो, न्याय को स्थापित करनेवाले बनो और अल्लाह के लिए (इन्साफ की) गवाही देने वाले बनो, चाहे गवाही स्वयँ तुम्हारे या तुम्हारे माता-पिता या रिश्तेदारों के विरुद्ध हो जिसके विरुद्ध गवाही दी जा रही है, चाहे वह धनवान या निर्धन हो। तो अल्लाह उसका अधिक भला चाहने वाला है, तो इच्छाओं के पालन में न्याय से कदापि न हटो।"

(कु० शरीफ़ निसा: १३५)

इस्लाम ने केवल न्याय करने ही का आदेश नहीं दिया है वरन् उसने आगे बढ़कर मनुष्यों के साथ सद्व्यवार का आदेश भी प्रदान किया है। जैसा कि इस्लाम धर्म के मुख्य प्रवर्तक एवं जन्मदाता हज़रत मुहम्मद साहब ने फ़रमाया है।—

"दया करने वालों पर दयावान अल्लाह भी दया करेगा ।" धरती वालों पर दया करो, "आसमान वाला" तुम पर दया करेगा ।

(तिर्मिजी शरीफ़ अबूदाऊद)

इस्लाम की नैतिक शिक्षा के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति आदम की संतान होने के कारण हमारा भाई है और भाई के साथ हमारा जो व्यवहार हो वही प्रत्येक भाई से सद्‌व्यवहार करना चाहिए ।

सामाजिक विशेषता

इस्लाम धर्म समाज के समस्त पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए मनुष्यों के लिए मनुष्य पर सबसे अधिक हक़ उनके माँ-बाप का बतलाता है। कुरान एवं हदीस के अनुसार अनेक स्थान पर वालदेन अर्थात माँ-बाप के साथ सद्‌व्यवहार करने का आदेश प्रदान किया गया है ।

"और तुम्हारे रब ने फैसला कर दिया कि उसके सिवाए किसी की बन्दगी न करो और माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो, यदि उनमें से कोई एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएँ तो उन्हें नागवार (अश्लील) बातें न कहो और न उन्हें झिड़को, बल्कि उनसे भली भाँति व्यवहार करो और दयालुता के साथ उनके लिए विनम्रता की भुजा झुका दो, और कहो ऐ मेरे रब जिस प्रकार इन्होंने बचपन में मेरा पालन-पोषण किया है, तू भी इन पर दया कर ।"

(कु० शरीफ़ बनी इसराईल २३-२४)

'माँ' का हक़ बाप से भी ज्यादा है जिसका उल्लेख हदीसों में किया गया है—

अबू हुरेरा रजि० अनहा से रिवायत (विदित) है कि एक व्यक्ति ने पूछा "हे अल्लाह के रसूल मेरे सद्‌व्यवहार का सबसे अधिक अधिकारी कौन है ?" ह० मु० साहब ने उत्तर दिया—तुम्हारी माँ । उसने फिर पूछा—फिर कौन ? उत्तर दिया—तुम्हारी माँ । पूछा—फिर कौन ? उत्तर दिया—तुम्हारी माँ । पूछा—फिर कौन ? तब प्यारे नबी ने फरमाया—तुम्हारा बाप, फिर जो ज्यादा रिश्ते में करीब हो ।

(बुखारी-मुस्लिम)

परन्तु इस्लाम धर्म ने शिर्क एवं पाप से बचते रहने के लिए सावधान

भी किया है। जैसा कि कुरान शरीफ़ से स्पष्ट हो जाता है। अगर माँ-बाप शिर्क (पाप) या अल्लाह की अवज्ञा पर ज़ोर दें तो उनकी बात न मानो और मेरी ओर झुकने वाले का सदैव अनुकरण करो।

(कु० शरीफ़ सूरः लुकमान)

इस्लाम धर्म की सामाजिक विशेषता इसलिए अधिक उल्लेखनीय है कि वह समाज के सर्वांगीण क्षेत्र में अपने उत्तरदायित्व को सुनिश्चित करने का अवसर प्रदान करता है, माँ-बाप के बाद 'भाई' के प्रति किये जाने वाले व्यवहार को स्पष्ट करता है। इस्लाम के अन्तर्गत भाई के हक़ और अधिकार के लिए एक उच्च आदर्श एवं उदार नीति की व्यवस्था है। वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को स्पष्ट किया गया है।

ऊँच-नीच की धारणा और अपनी जाति पर घमंड करना, यह दोनों ही बन्धुत्व और प्रेम-भाव के लिए 'विष' हैं।

केवल सगे भाई को अपना भाई मानना दोषपूर्ण है; इसके लिए कु० शरीफ़ में हिदायत (निर्देश) दिये गये हैं। इसके अनुसार सभी मनुष्य खुदा के पैदा किये हुए हैं और एक ही जोड़े की औलाद हैं। उनका परिवार और वंश एक है, इसमें कोई भी ऊँच-नीच नहीं है। जो व्यक्ति अधिक नेक और खुदा से डरने वाला है, वह खुदा की दृष्टि में अधिक श्रेष्ठ और महान् है, चाहे वह मनुष्य सांसारिक दृष्टि से कितने ही कम दर्जे का समझा जाता हो।

भाई से हमारा किस प्रकार का सम्बन्ध होना चाहिए, इसके लिए हदीस से उद्धृत है।

"उस जात की कसम जिसके हाथ में मेरी जान है, कोई भी व्यक्ति उस समय तक ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने भाई के लिए वह न चाहे, जो वह अपने लिए चाहता है।" (बुख़ारी मुस्लिम)

कितना महत्वपूर्ण एवं सारगर्भित है यह हदीस जिसमें दुनिया और आख़िरत की जो उन्नति, जो बुलन्दी और जो सफलता हम अपने लिए चाहते हैं, वही अपने भाई के लिए भी चाहें। यह हमारे प्रत्येक भाई का हम पर हक़ एवं अधिकार है।

इसका पालन करना इस्लाम धर्म की सामाजिक विशेषता के अन्तर्गत अनिवार्य माना गया है। इसी तथ्य को स्पष्ट करते हुए आगे कहा गया है—

"किसी व्यक्ति के लिए जायज़ नहीं कि वह अपने भाई से तीन दिन से अधिक सम्बन्ध तोड़े रखे कि दोनों मिलें तो एक इधर मुँह मोड़ ले और दूसरा उधर मुँह मोड़ ले और इनमें अच्छा वह है जो सबसे पहले बोले और सलाम कर ले।" (बुख़ारी मुस्लिम)

पड़ोसी एवं रिश्तेदार के अधिकार को भी इस्लाम धर्म में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हैं। जो लोग हमारे पड़ोस में रहते हैं, चाहे वे मुसलमान हों या गैर-मुस्लिम, वे हमारी सहानुभूति और सद्व्यवहार के अधिकारी हैं। कुरान शरीफ़ में पड़ोसियों के साथ सद्व्यवहार का आदेश दिया गया है। पड़ोसी के अधिकार के प्रति ह० मु० साहब फरमाते हैं—

"जिब्रील मुझसे पड़ोसी के बारे में बराबर ताकीद (निर्देश) करते रहते हैं, यहाँ तक कि मुझे ख्याल (आभास) होने लगा कि वे उसे "सम्पत्ति" का वारिस बना देंगे।" (बुख़ारी शरीफ़)

इस प्रकार हम इस्लाम धर्म की सामाजिक विशेषता के अन्तर्गत माँ-बाप, भाई-बहन तथा पड़ोसी के अधिकार का अवलोकन करते हैं। तत्पश्चात् अपने सगे-सम्बन्धियों के विषय में भी इस्लाम सजग है। प्रसिद्ध हदीस के अनुसार—

"जो व्यक्ति चाहता है कि उसकी रोज़ी (कमाई) बढ़े तथा उसकी उम्र भी लम्बी हो", उसे चाहिए कि वह अपने रिश्तेदारों का ख्याल रखे और उनका हक अथवा अधिकार उन्हें अदा करता रहे।" (बुख़ारी मुस्लिम)

पारिवारिक विशेषता को भी इस्लाम धर्म में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इसके अन्तर्गत पति-पत्नी तथा औलाद के अधिकार को दर्शाया गया है जिससे स्पष्ट होता है कि पति-पत्नी का सम्बन्ध बहुत महत्वपूर्ण है। पति को पत्नी का जिम्मेदार बनाया गया है तथा पत्नी का धर्म है कि वह अपने पति के जायज (उचित) कार्य में उसको पूरा-पूरा सहयोग दे एवं आज्ञा का पालन करे। औरतों से अच्छा व्यवहार करने के विषय में ह० मु० सल्ल० ने वसीयत भी किया है। (बुख़ारी मुस्लिम)

अल्लाह ने वैवाहिक सम्बन्ध को दया और प्रेम का सम्बन्ध बनाया है। उसने तुम्हारे बीच दया और प्रेम बनाया हैं।

(कुरान शरीफ सूर : रूम-२१)

इस्लाम से पहले अरब देश की सामाजिक व्यवस्था अस्त-व्यस्त थी, औरतों और लड़कियों को बहुत बुरी दृष्टि से देखा जाता था। लड़कियों को ज़िन्दा कब्र में दफ़ना दिया जाता था। जुल्म और कुफ्र की इन्तेहा हो गयी थी तथा बेहयाई और बेईमानी अपनी चरम सीमा पर पहुँच गयी थी। ऐसी स्थिति में जब ह०मु० सल्ल० का आविर्भाव हुआ तो शनैः शनैः सभी कुप्रथाएँ समाप्त होने लगीं, सब को समान अधिकार एवं समाज में सब को बराबर का दर्जा प्रदान किया गया।

बच्चों के विषय में चाहे वह लड़का हो या लड़की उसे बराबर का दर्जा एवं सम्मान दिये जाने का निर्देश स्वयं ह०मु० सल्ल० ने दिया। उन्होंने फ़रमाया—"औलाद या संतान के लिए माता-पिता का कर्तव्य हैं कि अल्लाह के बताए हुए तरीके (ढंग) के साथ उनका पालन पोषण करें तथा उनकी शिक्षा दीक्षा का भी प्रबन्ध करें।"

एक हदीस के सनुसार—"सबसे अच्छा दीनार (रुपया) वह है जिसे इन्सान अपनी औलाद पर खर्च करता है।" (मुस्लिम शरीफ़)

लड़कियों के विषय में निर्देश दिया गया है, जिन्हें लोग ज़िन्दा गाड़ देते थे। "अपनी संतान की दरिद्रता के भय से हत्या न करो, हम उन्हें भी रोज़ी देंगे, और तुम्हें भी। निःसन्देह उनकी हत्या एक बड़ा पाप हैं।"

(कु० शरीफ सूरः बनीइस्राईल)

ह० मुहम्मद सल्ल० स्वयं फरमाते हैं—"जिस व्यक्ति ने दो लड़कियों को पाला-पोसा, यहाँ तक कि वे बालिग (वयस्क) हो गयीं, और अपने फर्ज़ (कर्तव्य) से अदा हो गया तो "मैं" और वह व्यक्ति कयामत (आख़िरत) के दिन क़रीब होंगे और आपने स्वयं अपनी उंगलियों को मिला कर दिखाया कि इतने क़रीब (सन्निकट) होंगे।" (मुलिलम शरीफ़)

इस प्रकार समाज में प्रचलित कुप्रथा का अन्त होने लगा और नारी तथा लड़कियों के प्रति सहानुभूति का संचार पुनः होने लगा।

इस्लाम धर्म की विभिन्न विशेषताओं में एक विशेषता और महत्वपूर्ण है, वह है—

गैर मुस्लिमों के अधिकार

इस्लाम धर्म के अनुसार खुदा के जिन बन्दों के अधिकार के विषय में निर्देश दिया गया है, उनका मुस्लिम होना आवश्यक नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति न्याय, दया और सहानुभूति का समान अधिकारी है। प्रत्येक निर्धन और असहाय निर्बल होने के नाते हमारी सहानुभूति का अधिकारी है। पड़ोसी का मुसलमान होना अनिवार्य नहीं, गैर मुस्लिम का भी समान अधिकारु हमारे ऊपर होता है।

कुरान शरीफ द्वारा स्पष्ट है कि मुसलमानों को गैर मुस्लिम से भी सद्व्यवहार करना चाहिए, तथा समान न्याय करते रहना चाहिए, क्योंकि खुदा इन्साफ़ पसन्द है। आगे कहा गया है कि—"जो लोग इस्लाम और मुसलमानों के दुश्मन हैं और उनसे लड़ते हैं, अल्लाह ने उनसे भी सद्-व्यवहार और न्याय करने से नहीं रोका है।"

इस्लाम धर्म की सामाजिक विशेषता यह है कि अपने हितों को त्याग कर प्रत्येक मनुष्य के प्रति वफ़ादार रहे और उचित न्याय करे। दुर्व्यवहार करने वाले गैर मुस्लिमों के साथ भी सद्व्यवहार करता रहे। इस प्रकार की नसीहत कुरान शरीफ से उद्धृत है।

(कु० शरीफ के सूर : हा०मीम०)

एक अन्य आयत कु० श० के सजदा से विदित है—"बराबर नहीं हो सकती भलाई और बुराई। तुम बुराई को उस चीज़ से टालो जो अति उत्तम हो। तुम देखोगे कि जिस से दुश्मनी थी वह एक दिन अचानक तुम्हारा मित्र बन जायेगा।"

(कु० शरीफ सूर : हा-मीम—३४)

इस प्रकार हम इस्लाम धर्म की विभिन्न विशेषताओं के अध्ययन से अनुभव करते हैं कि इस्लाम धर्म एक ऐसा अनोखा धर्म है जिसमें बहुत लोच एवं विनम्रता पाई जाती है। तत्कालीन सामाजिक दशा इस प्रकार बिगड़ चुकी थी कि पाप का घड़ा भरने वाला ही था। ऐसे में हज़रत मुहम्मद सल्ल० का आगमन समस्त मानव-जाति के लिए एक कल्याणकारी

धर्म के रूप में मुखरित हुआ जिसे लोग इस्लाम धर्म के नाम से जानने लगे। धीरे-धीरे यह धर्म सम्पूर्ण विश्व में फैल गया, और अपनी विशेषता के कारण ही आज तक यह धर्म सामाजिक उत्थान में सहायक सिद्ध हो रहा है।

सार्वजनिक एवं विशिष्ट विशेषताएँ

इस्लाम धर्म की अन्य महत्वपूर्ण विशेषताओं का भी अध्ययन करना अनिवार्य है जो संक्षेप में निम्नवर्णित है--

१. सच्चाई एवं ईमानदारी।

२. आचरण की शुद्धता।

३. क्षमा एवं विनयशीलता।

४. धैर्य रखना।

सच्चाई एवं ईमानदारी

इस्लाम धर्म के अन्तर्गत सच बोलना तथा सच्चाई को अपनाना भी उसकी मौलिक विशेषताओं में सम्मिलित हैं। मनुष्य को चाहिए कि वह प्रत्येक अवस्था में सत्यवादी बना रहे, और जब भी बोले सत्य ही बोले, वह सर से लेकर पैर तक सच्चाई में डूबा रहे। यदि मनुष्य सत्य बोलने के प्रति दृढ़ प्रतिज्ञ हो जाए तो उसके लिए झूठ बोलना कठिन एवं सच बोलना आसान (सरल) हो जाएगा। परिणामस्वरूप उसकी आत्मा भी पवित्र हो जाती है और वह चरित्रवान हो जाता है। फिर अपनी ग़लतियों (त्रुटियों) को छिपाने के लिए झूठ नहीं बोल सकता और जब मनुष्य सदैव सच की तलाश में सशंकित रहता है तो वह समय भी आता है जबकि अल्लाह (ईश्वर) के यहाँ उसे सत्यवादी (सादिक) लिख दिया जाता है और जब मनुष्य सदैव झूठ ही बोलता रहता है तो उसे खुदा के यहाँ असत्यवादी लिख दिया जाता हैं। (बुख़ारी मुस्लिम)

कुरान शरीफ में तो 'सत्यवादिता' को प्रत्यक्ष धर्म की संज्ञा प्रदान की गयी है। जो व्यक्ति ईमान वाले होते हैं, वह सत्य की प्रतिमूर्ति होते हैं। वही लोग चरित्र की दौलत (सम्पत्ति) से मालामाल (धनधान्य) होते हैं तथा कुरान उन्हें सिद्दीक (सत्यवान) के नाम से सम्मानित करता है तथा उन्हें फ़रिश्तों एवं नबियों के बाद सबसे श्रेष्ठ स्थान (पद) प्राप्त होता है।

इस्लाम के अनुसार मनुष्य को चाहिए कि प्रत्येक अवस्था में ईमानदारी के प्रति वचनबद्ध रहे और दूसरों से काम लेने वाले को 'उसका पसीना' सूखने से पहले ही उसकी मजदूरी अदा कर दें तथा बेईमानी एवं धोखा देकर कोई वस्तु न प्राप्त करे। अपनी अन्तरात्मा का सौदा भी, किसी कीमत पर नहीं करना चाहिए।

कुरान के अनुसार—"दूसरे का माल गलत ढंग से मत खाओ तथा अपने माल को रिश्वत के रूप में किसी अन्य को प्रदान न करो।"

(अनुवाद कुरान शरीफ सूर : बकर : १८८)

आचरण की शुद्धता

सच्चाई व ईमानदारी के पश्चात् मनुष्य को आचरण की शुद्धता पर विशेष बल देना चाहिए। अल्लाह के रसूल एवं इस्लाम धर्म के जन्मदाता ह0 मु0 सल्ल0 की दृष्टि में, "सबसे उत्तम व्यक्ति वह है जो शील-स्वभाव एवं आचरण में सबसे अच्छा (उत्तम) हो, तथा—"तुम में सबसे अच्छे वे लोग हैं जिनका अख़लाक (आचरण) तुम में सबसे अच्छा (उत्तम) हो।"

(बुखारी इस्लाम)

इस्लाम धर्म के अनुसार खुदा का किसी व्यक्ति विशेष या समुदाय से प्रेम या बैर (दुश्मनी) नहीं है। वह तो प्रत्येक मनुष्य को चरित्रवान और सुशील (नेक) कार्यों की ओर आकर्षित करता है। इस प्रकार मनुष्य का कर्तव्य है कि वह जो भी कार्य करे, खूब सोच-समझ कर करे, जैसा कि कु० शरीफ़ से उद्धृत है—"जब तुम नाप कर दो तो पूरा नाप कर दो और सीधी सच्ची तराज़ू में तौलो यही उत्तम है, और इसका परिणाम भी अच्छा है।"

(कु0 बनी इसराईल : ३)

उपरोक्त साक्ष्यों से स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक मनुष्य को चरित्र एवं आचरण की शुद्धता पर विशेष ध्यान देना चाहिए, क्योंकि धन-दौलत केवल दिखावटी वस्तु हैं। परन्तु सत्कर्म एवं आचरण की शुद्धता का फल खुदा के यहाँ सुरक्षित है।

क्षमा एवं विनयशीलता

इस्लाम धर्म के अन्तर्गत जिन महत्वपूर्ण बातों पर विशेष बल दिया गया है, उनमें क्षमा, एवं विनयशीलता को उच्च स्थान प्राप्त है। कुरान

शरीफ़ के अनुसार-"यदि कोई व्यक्ति ग़लती करे तो उसे माफ कर देना चाहिए"। ह० मु० सल्ल० ने फ़रमाया है--

"नर्मी और क्षमा से काम लो, भले काम का आदेश दो तथा अज्ञानी लोगों से न उलझो।"

इसी प्रकार का संदेश कुरान शरीफ़ में भी दिया गया है--

"तुम बुराई का जवाब (उत्तर) भलाई से दो फिर तुम देखोगे कि तुम्हारे और जिसके बीच बैर था, वह तुम्हारा मित्र बन जायेगा।"
(कु० श० हा० मीम-३४)

क्रोध न करने के लिए ह० मु० सल्ल० फ़रमाते हैं-"गुस्सा पी जाना कमज़ोरी की नहीं, ताक़त और बहादुरी की बात है। अर्थात् ताक़तवाला वह व्यक्ति नहीं हो सकता जो दूसरे लोगों को ताक़त के ज़ोर से पछाड़ दे। बल्कि बलवान वह व्यक्ति है जो क्रोध की दशा में भी अपने ऊपर नियन्त्रण (क़ाबू) रख ले।" (बुख़ारी मुस्लिम)

इसी संदर्भ में उल्लिखित है-"क्षमा करने से खुदा अपने बन्दे की इज़्ज़त बढ़ाता है और जो ख़ुदा के लिए विनयशील (नम्र) होता है, ख़ुदा उस व्यक्ति को श्रेष्ठ पद से सम्मानित करता है।" (बुख़ारी मुस्लिम)

धैर्य रखना

इस्लाम धर्म की एक और प्रमुख विशेषता यह भी है कि मनुष्य धैर्य के साथ सभी विषम परिस्थितियों का सामना करें। परन्तु साधरणतया लोग धैर्य रखने को मजबूरी का नाम देते हैं, जो कि दोषपूर्ण है। सत्य की परिभाषा यदि मनुष्य समझ ले तो उसके लिए मार्ग आसान हो जाता है क्योंकि सत्य मार्ग पर चलने के लिए धैर्य का होना नितांत आवश्यक है तथा मानव-चरित्र के निर्माण में धैर्य का महत्वपूर्ण स्थान है। बिना इस गुण के चरित्र की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

इस प्रकार मनुष्य को चाहिए कि वह जीवन के अन्तिम क्षणों तक अपने सच्चे मन से सांसारिकता के पथ पर चलते हुये धैर्य से काम ले, और किसी भी कठिनाई का सामना धैर्य-पूर्वक करे, दुनियाँ और आख़िरत में वही व्यक्ति सफल होगा जो प्रत्येक कठिनाई का सामना धैर्य के साथ करता रहेगा।

कुरान शरीफ़ के अनुसार अल्लाह फ़रमाता है, "हम तुम्हें अवश्य आज़मायेंगे, कुछ भय से, भूख से, माल से और पैदावार के नुकसान से।"

(कु० श० सूर : बकर–१५५)

सच्चे मुसलमान की विशेषता को स्पष्ट करते हुए हदीस में उल्लिखित है कि––

"सच्चे मोमिन का मामला बड़ा अजीब (अद्‌भुत) है, उसके लिए उसके हर मामले में भलाई ही भलाई है। उसे कोई नेमत मिलती है, तो कहता है, खुदा का शुक्र है, जो उसके लिए भलाई ही की बात है. और जब उस पर कोई मुसीबत (कठिनाई) आती है तो वह धैर्य करता है, और यह भी उसके लिए भलाई की ही बात है।" (बुख़ारी मुस्लिम)

इस्लाम धर्म के जन्मदाता ह० मु० सल्ल०
व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अध्याय ४

इस्लाम धर्म के जन्मदाता ह० मु० सल्ल० : जीवन-वृत्त, व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इस्लाम धर्म की विभिन्न विशेषताओं के अध्ययन के पश्चात् यह आवश्यक है कि उक्त धर्म के जन्मदाता के विषय में भी कुछ ज्ञान एवं जानकारी अर्जित करना तथा इस्लाम धर्म के मूल संस्थापक के रूप में ह० मु० सल्ल० के आदर्शों का अवलोकन करना नितान्त आवश्यक है।

जीवन-वृत्त, व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इस्लाम धर्म का सर्वश्रेष्ठ एवं प्रामाणिक ग्रंथ कुरान शरीफ़ के अनुसार "नबीए अकरम नूरे मुजस्सम मसल्लल्लाहो-अलैह वसल्लम (हज़रत मुहम्मद साहब) अन्तिम ईश-दूत (आखिरी पैगम्बर) के रूप में १२ रबी उल अव्वल सोमवार के दिन तदनुसार ११ नवम्बर, ५६६ ई० को मक्का-मुअज़्ज़िमा के एक कुरैश परिवार (वंश) में पैदा (उत्पन्न) हुए। आपके पिता का नाम हज़रत अब्दुल्लाह था जो हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के एक होनहार बेटे थे। (उस समय कुरैश वंश को लोग प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखते थे।)

हज़रत मु० साहब का प्रारम्भिक जीवन दैवी आपत्तियों के बीच हिंडोले खाता हुआ प्रतीत होता है। जन्म से पूर्व ही पिता का देहान्त हो जाना दुर्भाग्यजनक होता है। परन्तु खुदा सबका पालनहार है, वह अपने प्यारे नबी का सम्पूर्ण जीवन कष्टमय करके उनकी परीक्षा लेता रहा। पिता की अनुपस्थिति में आपके दादा हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने आपका पालन-पोषण किया। कुछ समय के पश्चात् ही विधाता की विधि ने "दादा हुज़ूर" का साया भी सर से उठा लिया। अब तो आप एक यतीम की भाँति बेसहारा होने वाले थे कि ऐसे में चाचा हज़रत अबू तालिब ने आपकी ओर प्यार और शफ़क़त का हाथ बढ़ाया और बाल्यावस्था उन्हीं के घर पर व्यतीत हुई।

आप की वाल्दा माता का नाम हज़रत आमना था जो अपने समय की बेहद परहेज़गार नेक खातून महीयसी थीं। सर्वप्रथम, माता का दूध सेवन किया, उसके पश्चात् तत्कालीन रिवाज (प्रचलित रीति) के अनुसार एक सुयोग्य और ईमानदार महिला बी० बी० हलीमा सादिया के साथ उन्हें देहात के खुले वातावरण में भेज दिया गया जहाँ बी० बी० हलीमा का दूध पीकर आप बढ़ते रहे। लगभग ६ वर्ष तक गाँव में रहकर अच्छी शुद्ध भाषा का ज्ञान अर्जित करते रहे तथा मानसिक एवं शारीरिक विकास पर खुले वातावरण का लाभ भी प्राप्त करते रहे।

गाँव से शहर में आने के पश्चात् आपकी वाल्दा मोहतर्मा का देहान्त हो गया। ऐसी विषम परिस्थिति में दादा हज़रत अब्दुल मुत्तलिब आपके सम्पूर्ण अभिभावक (सरपरस्त) की भूमिका निभाते रहे, परन्तु ८ वर्ष की आयु में दादा ह० अब्दुल मुत्तलिब का भी देहान्त हो गया। तत्पश्चात् ह० मुहम्मद साहब का पालन-पोषण चाचा हज़रत अबू तालिब के हाथों सम्पन्न हुआ जिसकी चर्चा हम पहले भी कर चुके हैं। १० वर्ष की आयु में ही आप अन्य बच्चों से भिन्न दिखाई देने लगे, आपके चेहरे पर एक प्रकार का तेज दिखाई पड़ने लगा जो अपने आप में एक विशेषता थी। बचपन में ह० मु० साहब बकरियाँ भी चराया करते थे जो सम्पूर्ण मक्का में एक आदर्श स्वरूप प्रचलित था।

आपके चाचा हज़रत अबू तालिब एक व्यापारी थे और अनेक देशों में वह व्यापार करने स्वयं जाते थे। सीरिया के तिजारती सफ़र में एक बार ह० मुहम्मद सल्ल० भी आपके साथ गये थे जब आपकी आयु १२ वर्ष की थी। व्यापारियों को लूट लेने की प्रथा उस समय बहुत प्रचलित थी। इसी समस्या के समाधान हेतु एक विशाल सभा का आयोजन किया गया था जिसमें ह० मुहम्मद स० भी विद्यमान थे।

शनैः-शनैः आपकी प्रशंसा बढ़ती गयी और आप नेक, ईमानदार तथा सद्व्यवहार का परिचय देते रहे जिसके परिणामस्वरूप लोग युवा अवस्था में ही आपको सम्मान की दृष्टि से देखने लगे थे। एक बार भारी वर्षा

के कारण काबे की दीवार टूट गयी, तत्पश्चात् नई इमारत का निर्माण किया गया, अनेक क़बीले वाले मिल कर इस 'पवित्र घर' की पुनर्स्थापना करते समय आपस में लड़ गये, क्योंकि "हजरे-अस्वद" (पवित्र ईश्वरी काला पत्थर) को उसके विशेष स्थान पर रखने के लिए आपस में विवाद हो गया क्योंकि इस पुण्य कार्य को प्रत्येक व्यक्ति स्वयं करना चाहता था जो सबके लिए असम्भव हो गया था। लड़ाई तथा खून-ख़राबे की सम्भावना को देखकर सभी इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि, "कल सुबह (प्रातःकाल) जो व्यक्ति इस स्थान पर सबसे पहले आये उससे हम निर्णय करा लेंगें कि पुनर्स्थापना कैसे की जाय। ईश्वर का विधान अटल हैं, वह जिसको चाहे सम्मान दे और जिसे चाहे पल भर में अपमानित कर दे।

दूसरी सुबह सबसे पहले उस स्थान पर पहुँचने वाले ह० मुहम्मद साहब थे। सभी ने आपसे आग्रह किया कि वह हमारा फैसला (निर्णय) करें। ह० मु० सल्ल० ने एक सफेद चादर मँगाई और उस पवित्र हजरे असवद को उसमें रख कर क़बीले के सभी विभिन्न व्यक्तियों से कहा कि वह सभी चादर को चारों ओर से पकड़ लें, और ऊपर की ओर उठायें, सभी ने ऐसा ही किया, जब विशेष स्थान की ऊँचाई तक चादर ऊपर आ गयी तो ह० मु० सल्ल० ने स्वयं उस हजरे असवद को काबे के विशिष्ट स्थान पर रख दिया जिससे कबीले के सभी सरदार सन्तुष्ट हो गये और एक महान कार्य बिना किसी संघर्ष (लड़ाई) के सुचारु रूप से सम्पन्न हो गया।

क़ाबा शरीफ़ के मूल संस्थापक तथा उनके पूर्वज

क़ाबा शरीफ के मूल संस्थापक के रूप में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्लाम का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। परन्तु तत्कालीन सामाजिक स्थिति को जानने के लिए हमें उनके पूर्वजों की जानकारी संक्षेप में जान लेना अति आवश्यक है। इस संदर्भ में यदि स्पष्ट ज्ञान प्राप्त किया जाय तो मुख्यत: सम्पूर्ण अवतरित नबियों का क्रमबद्ध परिचय लेना होगा तथा आदि पुरुष हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के पृथ्वी पर अवतरित होने से लेकर हज़रत मुहम्मद साहब के नबूवत एवं इस्लाम धर्म की उत्पत्ति के समय तक का संक्षिप्त अवलोकन करना होगा।

1. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम

इस्लाम धर्म के अनुसार हज़रत आदम अलै० आदि पुरुष माने जाते

हैं, हदीस एवं कुरान शरीफ के अनुसार "खुदा ने हज़रत आदम अलै० को मिट्टी से बनाया और सब फरिश्तों को यह आज्ञा प्रदान की कि ये सब इस मिट्टी के पुतले को झुक कर सिज़दा (नमन) करें, अर्थात् आदम अलै० के सम्मुख नतमस्तक हो जायें। परन्तु खुदा का अतिप्रिय एवं विशिष्ट फ़रिश्ता "अज़ाज़ील" जिसने आदम अलै० के निर्माण कार्य में विशेष उल्लेखनीय योगदान किया था, उसने खाकी (मिट्टी) के पुतले के सामने झुकने से इनकार किया, क्योंकि वह स्वयं आग से बना हुआ उत्तम कोटि का फरिश्ता था। किन्तु अल्लाह की नाफ़र-मानी (अवज्ञा) का परिणाम यह हुआ कि उसे रांदए-दरगाह (धुत्कार) दिया गया, और जब खुदा का नूर आदम अलै० के अन्दर प्रविष्ट हुआ तो सभी अन्य फ़रिश्तों ने आदम अलै० को सिजदा किया। अज़ाज़ील के गले में लानत की तौंक (ज़न्जीर) पड़ गयी, वह खुदा का नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) शैतान बना दिया गया, जो साधारण लोगों को गुमराह करने का कार्य करने लगा।

इसी कार्य के अन्तर्गत जन्नत में हज़रत आदम अलै० और उनकी पत्नी (बी० बी० हव्वा) को इब्लीस (अज़ाज़ील) ने बहकाया और गन्दुम (गेहूँ) खिलाकर उन्हें जन्नत से बाहर निकालने में सफ़ल हुआ ! इस प्रकार ह० आदम अलै० पृथ्वी पर आये और पति-पत्नी एक दूसरे से कई वर्षों तक जुदा (अलग) रहे, अन्तत: उनकी प्रार्थना हज़रत मुहम्मद साहब के वसीले-तुफ़ैल (माध्यम) से कुबूल (मान्य) हुई और हज़रत आदम और बीबी हव्वा पुन: एक साथ हुए जिससे सृष्टि का निर्माण आरम्भ हुआ। तब से आज तक (अज़ाज़ील) 'इब्बलीस' अथवा माया के रूप में सर्वसाधारण को अपने पथ से विचलित करने का कार्य कर रहा है। परन्तु इस संदर्भ में खुदा ने कुरान शरीफ के माध्यम से स्पष्ट कह दिया है कि "जो मेरा खास (विशेष) वन्दा (भक्त) है वह इब्लीस के बहकावे में कभी नहीं आ सकता।"

हज़रत नूहअ अलैहिस्सलाम

हज़रत आदम अलै० के पश्चात् मानव के सम्पूर्ण विकास का जो सिलसिला प्रारम्भ हुआ, उसका अन्त तो अभी तक नहीं हुआ, परन्तु बीच-बीच में ऐसी उथल-पुथल हुई कि समयानुसार अवतरित नबियों ने अल्लाह से पनाह माँगी और नाफ़रमान व्यक्तियों को नष्ट करने का आग्रह किया,

हज़रत नूह अलै0 खुदा के भेजे हुए "नबी" थे। तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था इस प्रकार विगड़ चुकी थी कि प्रलय का होना अनिवार्य हो गया था। लोग हज़रत नूह अलै0 की अवहेलना करते और उनके बतलाए हुए रास्ते पर न चलते। इस प्रकार दुष्कर्मों का बाहुल्य देखकर ह0 नूह अलै0 क्रुद्ध हो गये। तब खुदा ने अपने नबी हज़रत नूह अलै0 को हुक्म दिया कि, "तुम एक कश्ती (नाव) बनाओ और नाव में अल्लाह के फर्माबरदार (आज्ञाकारी) बन्दों के अतिरिक्त हर प्राणी का एक-एक जोड़ा रख लो। ह0 नूह अलै0 ने शाल के ३०० दरख्तों (वृक्षों) की लकड़ी से एक तीन मन्जिला विशाल नाव का निर्माण किया, और प्रत्येक प्राणी के एक-एक जोड़े को उस नाव में सुरक्षित किया।

सबसे पहली मन्जिल पर परिन्दों को बीच में जानवरों को; और सबसे ऊपर के हिस्से मे मनुष्यों को रखा गया। तत्पश्चात् जब ह0 नूह अलै0 ने अपने बेटे 'किनान' से भी नाव में बैठने के लिए कहा तो उसने पिता ह0 नूह अलै0 की बात नहीं मानी और अपने लिए एक बड़े लकड़ी के संदूक (बक्स) का निर्माण कराया जिसे कठिनाई के समय पानी में प्रयोग किया जा सके। खुदा के आदेशानुसार नबी नाव में बैठ गये। खाने का केवल थोड़ा सामान आपके पास था, परन्तु खुदा का भरोसा रखने वाले को इसकी चिन्ता नहीं थी।

थोड़ी ही देर के बाद इतना भयंकर तूफ़ान आया कि प्रत्येक प्राणी बिखर कर इधर-उधर होने लगा। वर्षा इतनी अधिक हुई कि जलमग्न हो गया, और पृथ्वी के नीचे से उबाल खाता हुआ पानी सम्पूर्ण वस्तुओं के विनाश में सहायक सिद्ध हुआ। ऐसी विषम परिस्थिति में ह0 नूह अलै0 को अपने 'बेटे' किनान की याद आई और उन्होंने खुदा से अपने बेटे की सुरक्षा के लिए दुआ (प्रार्थना) किया, तब अल्लाह की तरफ से हुक्म हुआ कि यदि तुम अपने बेटे के लिए दुआ करोगे तो तुम्हारा नाम नबूवत से काट दिया जाएगा। इस आदेश से ह0 नूह अलै0 भयभीत हो गये, तुरन्त आपने खुदा से क्षमा (माफी) माँगी और बेटे किनान का अन्त पानी पर तैरते हुए उसी बक्स के अन्दर हो गया, चारों ओर से बन्द होने के पश्चात् पानी सन्दूक में नहीं जा सका परन्तु खुदा की अवहेलना करने पर उस पर इतना अज़ाब हुआ कि वह स्वयं अपने पेशाब में जो सन्दूक में लबा-लब भर गया था, उसी में डूब कर मर गया तथा समस्त जीव नष्ट प्राय हो

गये। केवल वही प्राणी व जोड़े सुरक्षित रहे जो ह0 नूह अलै0 की कश्ती में रखे गये थे।

हज़रत इदरीस अलै०

हज़रत नूह अलै० के बाद नबूवत हज़रत इदरीस अलै० को मिली। हज़रत इदरीस अलै० अपने ज़माने के आला पैगम्बर और नबी हुए हैं, आप के अन्दर सब्र और धैर्य रखने की क्षमता अपार थी। तौहीद बाद के समर्थन में अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित करते हुए अन्य लोगों को उच्च आदर्श की शिक्षा आजीवन प्रदान करते रहे। आपके समय में अनेकों मत के मानने वाले हो गये थे, परन्तु वे कभी क्रुद्ध होकर उनके विनाश होने की दुआ नहीं माँगते थे, अपने कष्ट पहुंचाने वाले को भी आपने हमेशा क्षमा कर दिया; किसी के हक़ या पक्ष में कभी बुरा नहीं सोचते थे तथा अल्लाह से यह दुआ करते थे कि ऐ बारे–इलाहा– तू इस गुमराह बन्दों को सीधा मार्ग दिखला जिससे यह तेरी बन्दगी करें और सच्चे अर्थों में तुम्हें पहचानने लगें।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ह० इदरीस अलै० का सम्पूर्ण जीवन एक उच्च आदर्श का प्रमाण हमारे सम्मुख प्रस्तुत करता है जिसका अनुकरण अन्य नबियों ने भी किया है।

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम

हज़रत हूद अलै0 ने भी अपनी जाति में इस्लाम धर्म का प्रचार किया जैसा कि इससे पूर्व नबियों ने किया था परन्तु उनके जाति वाले उन्हें कम बुद्धि वाला व्यक्ति मानते थे। वे कहते थे कि आपके कहने से हम उनकी पूजा करना कैसे बन्द कर दें, जिसको हमारे बाप दादा आज तक करते आये हैं। ह0 हूद अलै0 ने कहा कि तुम केवल एक रब को मानो और उसी की बन्दगी करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा इलाह (पूज्य) नहीं है। किन्तु वे नहीं माने और अल्लाह के अज़ाब (ताप) से नहीं बच पाये। हज़रत हूद अलै0 तथा उनके समर्थकों को छोड़कर सभी लोग नष्ट हो गये। सात रात और आठ दिन तक भीषण आंधी और तूफान के कारण सभी प्राणी नष्ट हो गये, कोई शेष न बचा। केवल ह० हूद अलै० और उनके अनुयायी मात्र सुरक्षित रहे और खुदा की बन्दगी करते रहे।

हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम

हज़रत सालेह अलै० ने भी अपनी जाति के लोगों तक ख़ुदा का संदेश पहुँचाया परन्तु वे लोग इस प्रकार गुमराह हो गये थे कि वह लोग ह० सालेह अलै० की अवहेलना करने लगे।

एक बार उन लोगों ने अनायास एक ऊँटनी को पकड़ लिया, और उसे यातनाएँ देने लगे। ह0 साले अलै0 ने अपनी जाति के लोगों से आग्रह किया कि इस ऊँटनी को छोड़ दो क्योंकि यह ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी बनाकर खुदा ने भेजा है। इसे छोड़ दो जिससे कि यह अपनी इच्छानुसार जहाँ चाहे खाये और जाये। इसको नुकसान मत पहुँचाना वरना तुम सब विपत्तियों से घिर जाओगे। (कु० श० सूर : हूद ६४)

परन्तु उन्होंने उसकी कूँचे काट कर मार डाला, तो उन्होंने कहा, बस तीन दिन और आनन्द ले लो, यह ऐसा वादा है कि जिसमें कुछ भी झूठ नहीं। (कु० श० सूर : हूद–६५)

इस प्रकार समूद जाति वालों पर खुदा का अज़ाब (ताप) नाजिल हुआ और ह० सालेह अल0 के अनुयाइयों के अतिरिक्त सभी नष्ट हो गये।

हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम

पिछले प्रकरण के अनुसार क़ाबा शरीफ़ के मूल संस्थापक के रूप में हज़रत इब्राहीम अलै० के बिषय में अब हम विस्तारपूर्वक प्रकाश डालने का प्रयत्न करेंगे।

हज़रत इब्राहीम अलै० अल्लाह के बहुत प्रिय नबी थे। इस्लाम धर्म की बुनियाद का आरम्भ वास्तव में ह० इब्राहीम अलै० के हाथों से ही सम्पन्न हो गया था। अल्लाह की इच्छानुसार अपने बेटे को उसकी राह में कुर्बान करना एक असाधारण कार्य ही नहीं वरन् असम्भव भी है। किन्तु ह० इब्राहीम अलै० ने अपने बेटे ह0 इस्माईल अलै0 को खुदा की राह में कुर्बान करने का निश्चय कर लिया। अपने प्रिय नबी के इस दृढ़ कार्य को खुदा ने अपने सभी फरिश्तों को दिखलाया और इस्माइल अलै० के स्थान पर एक दुम्बा प्रस्तुत कर दिया, जिसकी ह० इब्राहीम अलै० ने

कुर्बानी फरमायी। तत्पश्चात् जब आँख पर से पट्टी खोली तो ह० इब्राहीम अलै० ने देखा कि ह० इस्माईल अलै० की जगह एक दुम्बा ज़िबह कर दिया हैं। इस अवसर पर ह० इब्राहीम अलै० ने खुदा का शुक्र अदा किया।

ह० इब्राहीम अलै० को जब यह ज्ञात हुआ कि उनका पिता खुदा का दुश्मन है तो वह अपने पिता से अलग रहने लगे और सभी लोगों को मूर्ति-पूजा के विरुद्ध दलीलें प्रस्तुत करके इसे जघन्य पाप सिद्ध किया।

तौहीद अथवा एकेश्वरवाद का नारा बुलन्द करके वसुदेव कुटुम्बकम की भावना को साकार करने का परिचय सर्वप्रथम ह० इब्राहीम अलै० ने ही प्रस्तुत किया है।

परन्तु तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था इस प्रकार बिगड़ चुकी थी कि सच बोलना पाप समझा जाता था। परिणामस्वरूप ह० इब्राहीम खलीलुल्लाह (अल्लाह के मित्र) को जलती हुई आग में डाल दिया। उन्होंने खुदा का स्मरण किया और देखते ही देखते आग हरे-भरे गुलजार में परिवर्तित हो गया। इस अप्रत्याशित सफलता के पश्चात् ह० इब्राहीम अलै० ने अपने बेटे ह० इस्माईल अलै० की सहायता से एक पवित्र घर (क़ाबा शरीफ) का निर्माण किया, जहाँ लोग एकत्र होकर अल्लाह की इबादत कर सकें। तत्कालीन शासक को ह० इब्राहीम अलै० ने तौहीद की और आमन्त्रित किया परन्तु असफल रहे। पिता द्वारा जान से मार डालने की धमकी के कारण वे कहीं दूर चले जाना ही उचित समझने लगे। फलतः स्वदेश छोड़ कर स्वयं कठिनाइयों का सामना करने के लिए बाध्य हो गये।

हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम

हज़रत इब्राहीम अलै० के बड़े एवं प्रिय पुत्र ह० इस्माईल अलै० को खुदा ने नबूवत और बादशाही दोनों प्रदान किया। पिता ह० इब्राहीम अलै० के साथ "काबा शरीफ" का निर्माण करने के पश्चात् उसकी देख-रेख की ज़िम्मेदारी ह० इस्माईल अलै० पर आ गयी। ह० इस्माईल अलै० बहुत ही नेक और परहेज़गार तथा सच्चे नबी थे। पिता की आज्ञा और खुदा की इच्छा के अनुरूप ह० इस्माइल इलै० अपनी कुर्बानी देने के लिए तैयार हो गये, जिसके परिणामस्वरूप खुदा की मेहरबानी उन पर सदैव रही।

हज़रत इस्हाक़ अलै०

हज़रत इस्हाक अलै० हज़रत इब्राहीम अलै० के छोटे पुत्र थे । आपके जन्म की शुभ सूचना को फरिश्ते देने के लिए आये तथा आप पर अल्लाह ने संसार की सम्पूर्ण नेमतें और बरकतें उतारी । वे सच्चे नबी एवं सदाचारी थे, सभी प्रकार की क्षमता रखने वाले, प्रतिभाशाली तथा इस्लाम धर्म के सफल एवं सच्चे प्रवर्तक के रूप में हज़रत इस्हाक अलैहिस्सलाम का नाम उल्लेखनीय है ।

हज़रत लूत अलैहिस्सलाम

हज़रत लूत अलै० हज़रत इब्राहीम अलै० के भतीजे और अल्लाह के नबी थे । खुदा ने उनके घर वालों को छोड़कर सब को तबाह कर दिया । लूत एक प्रकार की जाति का नाम है, जिसने बेशर्मी और बुरे काम की चरम सीमा को पार कर लिया था । खुदा के भेजे हुए फ़रिश्ते सुन्दर लड़कों के रूप में अज़ाब लेकर आये । परन्तु इस बात से सभी अनभिज्ञ (नावाक़िफ) थे । उन किशोरों के प्रति ह० लूत अलै० बहुत चिन्तित थे क्योंकि उनकी जाति वाले बहुत ही बदचलन तथा आचरण हीन थे ।

ह० लूत अलै० को यह भय हुआ कि उन लड़कों के साथ जो कि हमारे मेहमान स्वरूप हैं कहीं लोग दुष्कर्म और पाप न कर बैठें क्योंकि वहाँ स्त्री-पुरुष में कोई अन्तर न समझकर लोग सुन्दर लड़कों के साथ भी स्त्री के समान (समलिंगी) व्यवहार किया करते थे । ह० लूत अलै० ने अपने जाति वालों को अश्लील एवं अभद्र कर्म करने के लिए बहुत रोका, तथा खुल कर प्रतिरोध भी किया, परन्तु बस्ती के लोग उनकी बातों को झूठा समझ कर उनकी अवहेलना करने लगे और उन लड़कों के प्रति दुष्कर्म एवं पाप करने के निश्चय को दृढ़तर बना लिया ।

ह० लूत अलै० ने अपने मेहमानों (लड़कों) के प्रति खुदा से सुरक्षा मांगी और अल्लाह ने उस ज़ाति पर अज़ाब नाज़िल कर दिया । इस प्रकार ह० लूत अलै० और उनके परिवार को छोड़कर सभी तबाह (नष्ट) हो गये ।

(कु० सूर० : ५४ : ३३ : ३९)

हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम

हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम खुदा के बड़े ही नेक एवं प्रिय पैगम्बर थे। वे न तो इसाई थे और न तो यहूदी, वह केवल सच्चे नबीं एवं इस्लाम धर्म के प्रवर्तक तथा दीन दार थे। हज़रत याक़ूब अलै० पर ख़ुदा की विशेष मेहरबानी (अनुकम्पा) थी, उन पर भी खुदा ने 'वह्य' भेजी जिसके अनुसार ह० याक़ूब अलै० ने अपने बेटों को वसीयत किया। बेटों (पुत्रों) के लिए वे बहुत चिन्तित रहे, तथा उनका जीवन भी बहुत कष्टमय गुज़रा (व्यतीत हुआ)। हज़रत यूसुफ तथा ह० आमीन अलै० के लिए वह इतना रोये थे कि उनकी आँखों की रोशनी समाप्त हो गयी थी। परन्तु खुदा अपने प्यारे बन्दे और नबी के जीवन को कष्टमय बना कर उनकी परीक्षा लेता है। ह० याक़ूब अलै० की दुआएं भी कूबूल हुई; और उनके बेटे पुन: उनसे मिले। इस प्रकार दृढ़ प्रतिज्ञा एवं ईमानदारी के कारण ह० याक़ूब अलै० अन्य नबियों की अपेक्षा अधिक प्रतिभाशाली प्रतीत होते हैं।

हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम

हज़रत यूसुफ अलै० हज़रत याकूब अलै० के बहुत प्रिय पुत्र थे, वे पिता के समान आदर्शवादी एवं ईमानदार भी थे। खुदा की इच्छा के अनुरूप ह० यूसुफ अलै० बड़ी से बड़ी यातनाओं तथा कठिनाइयों के दौर से गुज़रे। परन्तु प्रत्येक परीक्षा में खुदा का ध्यान करते रहे, जिसके कारण अन्तत: उन्हें सफलता मिली।

सौतेले भाइयों ने उन्हें जंगल के एक कुंए में डाल दिया, और उनको जान से मार डालने की योजना के अन्तर्गत ऐसा जघन्य अपराध कर बैठे। कुंएं में डाल देने के पश्चात् ह० यूसुफ अलै० को खुदा ने बचा लिया और ऊपर निकालने का उपाय भी मुहैय्या (उपलब्ध) किया।

अज़ीजे मिश्र जो कि मिश्र देश के एक अधिकारी थे, उनकी पत्नी जुलेख़ा बीबी जो कि बाद में विधवा हो गयीं थीं, हज़रत यूसुफ अलै० पर दिलो-जान से मोहित हो गयीं और उन्हें प्रेम-जाल में फंसाना चाहा, परन्तु वे धर्म-पथ से नहीं डगमगाये। तत्पश्चात् उन्हें जेल भी जाना पड़ा।

ह० यूसुफ अलै० ने जेल के साथियों के सम्मुख एकेश्वरवाद (तौहीद)

का संदेश रखा तो वे सहमत हो गये। तत्कालीन शासक ने एक बार एक जटिल एवं अति गूढ़ स्वप्न देखा, सबसे अच्छा उचित अर्थ ह० यूसुफ अलै0 ने बताया और बादशाह नें उन्हें निर्दोष सिद्ध करते हुए मुक्त कर दिया तथा हा० यूसुफ अलै० को अपना विश्वासपात्र बना लिया।

इसके पश्चात् अन्ततः बीबी जुलेख़ा से विधिवत रूप में विवाह सम्पन्न हुआ। किनान में एक बार भयंकर क़हत (अकाल) पड़ा। लोग भूखों मरने लगे तब एक दिन ह0 यूसुफ अलै0 के वही सौतेले भाई मिश्र में अनाज लेने आये जो प्रायः सभी को सहायतार्थ रूप में वितरित किया जा रहा था। वे अपने भाई को इस रूप में और जीवित देख कर आश्चर्यचकित रह गये और बहुत लज्जित (शर्मिन्दा) हुए। उन्हें बहुत सा गल्ला देकर अपने छोटे भाई को भी लानें के लिए ह0 यूसुफ अलै0 ने आग्रह किया और जब उनके सगे भाई (यामीन) आये तो वापस लौटते समय उन पर झूठी चोरी का आरोप लगाकर ह0 यूसुफ अलै0 ने भाई यामीन को रोक लिया।

इस प्रकार बहुत दिनों से बिछड़े हुए दो भाई गले से लग कर खूब रोये जो कि एक अत्यन्त मार्मिम घटना के रूप में प्रसिद्ध है।

ह० यूसुफ अलै० के ग़म में रोते-रोते हज़रत याकूब अलै० की आंखों की रोशनी बिल्कुल समाप्त हो चली थी। परन्तु खुदा ने सब को पुनः मिलाया और अच्छे कर्मों का फल ह० यूसुफ अलै को प्रदान किया। अन्त में भाइयों ने क्षमा मांगी और हज़रत यूसुफ अलै० के बचपन के स्वप्न का अर्थ साकार हुआ। (कु० श० सूर : १२ : १००–१०१)

हज़रत शुएब अलैहिस्सलाम

हजरत शुएब अलै० अल्लाह के सच्चे नबी और पैगम्बर थे। उन्होंने 'मदयन' के लोगों को खुदा की इबादत एवं 'दास्ता' के लिए संदेश दिया और बेईमानी तथा व्यभिचार से दूर रहने के लिए आह्वान किया। नाप-तौल में छल-कपट से रोकने के लिए भी प्रयास किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि असमाजिक तत्व उन्हें कष्ट पहुँचाने लगे, तथा उनकी जाति के सरदारों ने भी उनके विरुद्ध अभियान चलाया और बस्ती से निकाल देने की धमकी देने लगे। ह० शुएब अलै० से अनुरोध किया कि वे इस्लाम धर्म को छोड़ दें, अन्यथा उन्हें जान से हाथ धोना पड़ेगा।

ह० शुएब अलै० ने जाति वालों से कहा, "मैं अल्लाह का नबी एवं रसूल हूं और इस्लाम धर्म का प्रचार करना ही मेरा वास्तविक धर्म तथा कर्तव्य है।" उन्होंने जाति वालों को पुन: इस्लाम धर्म की शिक्षा दी और बुलाया परन्तु उनकी जाति वाले उन्हें ही गलत समझने लगे और कहा कि तुम पर किसी "जादू" का प्रभाव हो गया है।

ह० शुएब अलै० ने खुदा से दुआ किया कि इन जाति वालों को मैं अब समझाने में असमर्थ हूँ। अन्तत: वे सभी खुदा की कड़ी यातना के शिकार हुए और नष्ट हो गये। (कु० पारा २६ : १८५, १८८, १८६, १६०, १६१)

हज़रत मूसा अलै० व हज़रत हारून अलै०

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम खुदा के रसूल और नबी थे, बाल्यावस्था से ही वे अलौकिक एवं प्रतिभाशाली कार्य करने लगे थे। अल्लाह के दर्शन हेतु ह० मूसा अलै० (कोहतूर) पर्वत पर गये तथा वहाँ पर खुदा का विराट रूप देखा, परन्तु ताब ना लाकर (बेहोश) हो गये : खुदा की एक झलक ही पर्याप्त थी, वह अमर हो गये। अल्लाह ने उन्हें एक बहुमूल्य ग्रंथ जिसे "तौरात" कहते हैं, उन्हें प्रदान किया।

हज़रत हारून अलैहिस्सलाम जैसा एक और परहेज़गार भाई भी उन्हें प्रदान किया तथा ह० हारून अलै० का पूरा योगदान भी ह० मूसा अलै० को मिला, आरम्भ से लेकर अन्त तक उन्होंने बड़े भाई के आदर्शों का पालन किया। तत्कालीन शासक फ़िरऔन से सभी पीड़ित थे क्योंकि वह बड़ा निर्दयी एवं कठोर था, साथ ही स्वयं को खुदा मानता था तथा दूसरों से भी यही अपेक्षा करता कि सब लोग उसे खुदा समझें।

नजूमी के कथनानुसार एक ऐसा बालक उत्पन्न होगा जिसका नाम 'मूसा' होगा। उसी के द्वारा फ़िरऔन का अंत अवश्यंभावी होगा। इस बात से फ़िरऔन को बड़ी चिन्ता हुई। अत: भविष्य में कोई बालक इस निर्धारित समय तक न उत्पन्न हो, इस डर के कारण फ़िरऔन ने सभी प्रकार के प्रतिबन्ध लागू कर दिये। यहाँ तक कि कोई भी स्त्री-पुरुष इस निर्धारित अवधि में किसी प्रकार का सम्बन्ध स्थापित न करने पायें। जिससे ह० मूसा अलै० का जन्म सम्भव हो सके। परन्तु ईश्वर की लीला अपार है, ह० मूसा अलै० की माँ ने खुदा की इच्छा (मर्ज़ी) से 'आप' को उत्पन्न होने के पश्चात् एक बक्स (संदूक) में रख कर दरिया में

बहा दिया। संयोगवश फ़िरऔन की पत्नी एवं घर के अन्य लोगों ने इसे देखा और आपको अपने घर में ही पाल लिया।

हज़रत मूसा अलै० की बहन के सुझाव से फ़िरऔन के घर वालों ने 'आप' की वाल्दा (माता) को हीं दूध पिलाने की सेवा सौंपी। इस प्रकार वास्तविक माँ का सानिध्य अल्लाह की इच्छानुसार बेटे ह० मूसा० अलै० को प्राप्त हुआ।

ह० मूसा अलै० को खुदा ने नौ-नौ निशानियाँ प्रदान की थीं परन्तु फ़िरऔन इस तथ्य को मानने से इन्कार करता और उन्हें जादूगर की संज्ञा देकर उनका उपहास उड़ाता। कई बार उनके सम्मुख जादूगरों को ला कर खड़ा कर दिया। जादूगर ह० मूसा अलै० की वास्तविकता से प्रभावित हो गये तथा ईमान लाये जिसके कारण फ़िरऔन को बड़ा क्रोध आया।

ह० मूसा अलै० बनी इसराईल को लेकर मिश्र से निकले तो फ़िरऔन की सेना ने उनका पीछा किया। ह० मूसा अलै० ने अपने साथियों को धैर्य से काम लेने का निर्देश दिया और अल्लाह के हुक्म से आगे बढ़ते रहे। आगे रास्ता समाप्त हो गया, और फ़िरऔन की सेना भी नज़दीक (निकट) आ गयी तो ह० मूसा अलै० ने अपनी अशा (छड़ी) समुद्र पर मारी, समुद्र में रास्ता (मार्ग) अपने आप बन गया। ह० मूसा अलै० अपने अनुयाइयों एवं साथियों सहित सकुशल समुद्र पार कर लिए, परन्तु पीछा करता हुआ फ़िरऔन भी जब उसी मार्ग से समुद्र पार करने लगा तो अल्लाह का अज़ाब 'ताप' उस पर हुआ और अपनी सेना सहित उसी समुद्र में डूब गया।

इस प्रकार अपने नबी ह० मूसा अलै० की रक्षा खुदा ने की और 'तौरात' के माध्यम से लोगों में जागृत की भावना को साकार किया।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम

हज़रत दाऊद अलै० को अल्लाह ने आसमानी पुस्तक (ज़बूर) प्रदान किया। ह० दाऊद अलै० बहुत ही दींनदार, विद्वान तथा सहनशील थे; उनके गुणों की व्याख्या करना कठिन ही नहीं वरन् असम्भव है।

ह० दाऊद अलै० पर प्रत्येक समय खुदा की कृपा रहती थी : पेड़, पौधे, चिड़ियाँ और पर्वत ह० दाऊद अलै० के साथ-साथ खुदा का गुणगान करते

थे। खुदा ने हज़रत दाऊद को नबी बनाया और उन्हें बादशाहत भी (अता) प्रदान की। रूढ़िवादिता एवं तत्कालीन असामाजिक नीतियों के विरुद्ध न्याय का मार्ग अपनाने की शिक्षा प्रदान की। विशेष आदेशानुसार वास्तविक धर्म एवं मानव के अधिकार को साधारण जनता तक पहुँचाने का कार्य भी ह० दाऊद अलै० को प्रदान किया।

इस प्रकार ह० दाऊद अलै० के शासनकाल में बहुत सुधार हुआ, और उनके उत्तराधिकारी के रूप में हज़रत सुलेमान अलै० का आविभाव हुआ।

(कु०/२७/–१४–१५)

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम

हज़रत सुलैमान अलै० खुदा के ऐसे नबी और पैगम्बर थे जिन्हें आश्चर्य-जनक एवं अद्भुत कार्यों में विशिष्टता प्रदान की गयी थी। ऐसी योग्यता ह० सु० अलै० के पहले किसी अन्य नबी को खुदा ने नहीं प्रदान की थी।

ह० सु० अलै० के नाम से शैतान-भूत-प्रेत तथा जिन्न भी डरते थे तथा आज भी ह० सु० अलै० का नाम विशिष्ट अनुष्ठानों में उत्कृष्ट है।

ह० सुलैमान अलै० को अल्लाह ने परिन्दों (चिड़ियों) की बोली का ज्ञान प्रदान किया था। उनके पास एक 'तख़्त' था जिस पर उनका आसन लगाया जाता था और जब चाहते थे, उसे प्रयोग करते थे। किंवदन्तियों के अनुसार वे उक्त तख़्त पर विराजमान होकर आसमान में उड़ जाते थे और जहां चाहते थे वहां तख़्त उतार लेते थे।

कु० शरीफ के अनुसार सबा की रानी के पास हुद-हुद का पत्र ले जाने की कथा अत्यन्त रोचक है। (कु० श० सूर : २७ : ३६–४०)

हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम

हज़रत अय्यूब अलै० अत्यन्त नेक एवं ईमानदान नबी थे। उनकी गणना किसी साधारण व्यक्ति से नहीं की जा सकती है। वे बड़े दानी एवं सब्र वाले नबी थे। उन्होंने कभी-भी खुदा की अवज्ञा नहीं की, और धैर्य का परिचय देते हुए सभी परीक्षाओं में सफल हुए। अनेक यातनाओं के

विपरीत आपने खुदा का शुक्र ही अदा किया तथा अपने कष्टों के विषय में कभी किसी को दोषी नहीं ठहराया। सब कुछ समाप्त हो जाने पर भी अल्लाह के सम्मुख नतमस्तक रहे और तौबा (क्षमा) करते रहे। खुदा ने अपने प्यारे नबी की परीक्षा उन्हें बीमारी की अवस्था में डाल कर लेना चाहा तथा आपके सम्पूर्ण शरीर में कीड़े पड़ गये, तत्पश्चात् बस्ती के लोग आपसे घृणा करने लगे, तथा आपको बस्ती से बाहर निकाल दिया।

ह० अय्यब अलै० की धर्मपत्नी बीबी रहीमा अत्यन्त नेक और आज्ञाकारिणी गृहिणी थीं। बीमारी की अवस्था में उनकी पत्नी ने उनका पूरा-पूरा साथ दिया। एक बार शैतान ने उनकी पत्नी को बहकाया और ह० अय्यूब अलै० से भी पत्नी की झूठी शिकायत की, परन्तु पति-पत्नी दोनों ही अपने-अपने ईमान पर खरे उतरे और खुदा ने उनकी दुआ सुन ली।

(कु० श० सूर : २१ : ८३-८४)

अल्लाह के हुक्म से ह० अय्यूब अलै० ने ज़मीन पर पैर मारा तब स्रोत बह पड़ा, और नहाने से उनकी तमाम बीमारी समाप्त हो गयी।

(कु० श० सूर ३८ : ४१-४४)

हज़रत युनुस अलैहिस्सलाम

हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम के ऊपर खुदा की विशेष कृपा रही। तत्कालीन सामाजिक स्थिति को देखते हुए ह0 यूनुस अलै0 ने अपनी जाति वालों को सच्चे मार्ग पर चलने की शिक्षा प्रदान की। पिछली जाति वालों पर हुए अज़ाब एवं यातना को देखकर वे सभी खुदा पर ईमान लाये, जिसके कारण उन्हें भारी सफलता मिली। परन्तु कुछ विरोधियों ने उन्हें नबी एवं पैगम्बर मानने से इन्कार किया तथा ह० यूनुस अलै० को एक नदी में फेंक दिया। जहाँ उन्हें मछली खा गयी, तब मछली के पेट में ह0 यूनुस अलै० ने अल्ला को पुकारा और अपने नजात के लिए दुआ किया, खुदा ने उनकी पुकार सुन ली।

(कु० श० सूर : २१ : ८७-८८)

इस प्रकार मछली के पेट से सही सलामत (सकुशल) बाहर निकले आये और नजात पायी। (कु० श० सूर ; ३७ : १४२-१४८)

हज़रत ज़करिया अलैहिस्लाम

ह० ज़करिया अलै० खुदा के सच्चे और नेक नबी थे। हज़रत 'मरयम' को पाला-पोसा और वह बालिग हो गयीं, जो ह० इमरान अलै० की सुपुत्री थीं। ह० ज़करिया अलै० को खुदा ने बीबी मरयम का अभिरक्षक बना दिया। अपने पश्चात् धर्म के प्रचार के लिए ह० ज० अलै० ने अपने उत्तराधिकारी के निमित्त खुदा से दुआ किया तो खुदा ने वृद्धावस्था (बुढ़ापे) में उन्हें हज़रत याहिया के रूप में एक पुत्र प्रदान किया, जबकि, उनकी पत्नी को लोग 'बांझ महिला' कहते थे।

इस प्रकार एक असम्भव कार्य को अल्लाह ने अपने नबी ह0 जकरिया अलै० के लिए सम्भव करके यह प्रमाणित कर दिया कि सब कुछ अल्लाह के हाथ में है और अल्लाह ने बुढ़ापे में ह0 जकरिया अलै0 को हज़रत यधि जैसा नबीं प्रदान किया जो सउदाहरण स्पष्ट है।

(कु० श० सूर : १९ : ७–११)

एक बार ह० जकरिया अलै० को उनके विरोधियों ने जान से मार डालना चाहा, वे भागते हुए एक केले के दरख्त (बृक्ष) के पास पहुँचे और उससे पनाह माँगी। केले का तना बीच से फट गया, ह० जकरिया अलै० उसमें समा गये परन्तु उनकी चादर का थोड़ा सा कोना अप्रत्याशित रूप में बाहर रह गया। उनका पीछा करते हुए जब लोग उस केले के पेड़ तक पहुंचे तो उनकी चादर का अवशेष टुकड़ा, कोना देखकर समझ गये कि ह० जकरिया अलै० इसी केले में समाहित हो गये हैं। तत्पश्चात् लोहे की धारधार आरी से उस दरख्त को काटने लगे। जब आरी ह० जकरिया अलै० के सर पर चलने लगी तो उन्होंने अल्लाह से दुआ माँगी और अपनी सुरक्षा के हित में विरोधियों से नजात माँगी। अल्लाह का हुक्म हुआ "ऐ ज़करिया अब ऊफ़ न करना वरना नबूवत से तुम्हारा नाम काट दिया जायेगा. क्योंकि तुमने पहले मुझसे पनाह नहीं माँगी और एक केले के दरख्त से पनाह माँगी।" इसके पश्चात् ह० ज़करिया अलै० अल्लाह को प्यारे हो गये और अपने रब के फ़रमान (आदेश) के अनुसार बीच से दो टुकड़े हो गये।

इस प्रकार ह० ज़करिया अलै० एक सच्चे नबी एवं पैगम्बर की भाँति अपनी कड़ी परीक्षा में सफल हुए।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम

अल्लाह ने हज़रत 'मरयम' को सम्पूर्ण संसार की औरतों (स्त्रियों) में चुना और उन्हें हृ० ईसा अलै० के जन्म की शुभ सूचना दी। हज़रत ईसा अलै० ने पालने (झूले) में बातचीत की।

अल्लाह के समीप (नजदीक) हृ० ईसा अलै० का जन्म ऐसा ही है, जैसा हृ० आदम अलै० का जन्म।   (कु० श० सूर: ३ : ५९)

हृ० बीबी मरयम खुदा की आज्ञा (हुक्म) से गर्भवती हुई और हृ० ईसा अलै० को जन्म दिया। नवजात शिशु होते हुए भी हृ० ईसा अलै० ने लोगों के आरोपों का खण्डन किया। खुदा ने पुत्र और माता दोनों को अपनी निशानी बताया तथा हृ० ईसा अलै० को आसमानी किताब "इन्जील" प्रदान किया।

ईसाइयों ने हृ० ईसा अलै० को खुदा का बेटा कहा और अन्ततः खुदा का दूसरा रूप समझने लगे। हृ० ईसा अलै० ने 'तौरात' की पुष्टि की तथा इन्जील के माध्यम से अति सरल मार्गदर्शन का प्रयत्न किया।

हृ० ईसा अलै० ने हृ० मु० सल्ल० के आने की शुभ सूचना दी।

(कु० श० सूर: ६१ : ६)

इस प्रकार सभी पूर्व नबियों एवं पैगम्बरों के अनुसार इस्लाम धर्म की पुष्टि और हृ० मु० सल्ल० का आगमन सुनिश्चित हो गया था जिसकी चर्चा हम पिछले प्रकरण में कर चुके हैं।

इस प्रकार इस्लाम धर्म के मुख्य मूल संस्थापक (हृ० मु० सल्ल०) का आविर्भाव उपरोक्त विभिन्न प्रमुख नबियों के पश्चात् हुआ। प्रारम्भिक जीवन-वृत्त के पश्चात् अब हम हृ० मुहम्मद सल्ल० के पारिवारिक एवं वैवाहिक जीवन का अवलोकन करेंगे।

हज़रत मु० सल्ल० का पारिवारिक एवं वैवाहिक जीवन

हजरत मुहम्मद सल्ल० की आयु जब केवल पच्चीस वर्ष की थी, तभी आप समाज में अपनी नेकी, ईमानदारी एवं सच्चाई के कारण प्रसिद्ध हो गये थे। आपकी प्रशंसा को सुनकर कुरैश वंश की एक धनी महिला "बीबी खुदैजा" ने आपको व्यापारिक सामग्री देकर यात्रा पर भेजा और प्रशंसनीय

कार्यक्षमता से प्रभावित होकर "बीबी खुदैजा" ने ह० मु० सल्ल० से विवाह का प्रस्ताव किया जिसे ह० मु० सल्ल० ने स्वीकार कर लिया। इससे पूर्व "बीबी खुदैजा" की दो शादियाँ हो चुकी थीं, परन्तु दुर्भाग्यवश दोनों ही पति खुदा को प्यारे हो गये थे जिसके कारण बीबी खुदैजा एक विधवा का जीवन व्यतीत कर रही थीं। पूर्व पतियों से दो पुत्र तथा एक पुत्री बीबी खुदैजा के साथ ही रहते थे।

हजरत मु० सल्ल० से विवाह के प्रश्चात् बीबी खुदैजा लगभग २६ वर्ष तक जीवित थीं। इस जमाने (पीरियड) में ह० मु० सल्ल० ने किसी अन्य स्त्री से विवाह सम्पन्न नहीं किया। परन्तु बीबी खदीजा (खुदैजा) के देहान्त के पश्चात् ह० मु० सल्ल० ने कई अन्य स्त्रियों से "उन्हें आश्रय देने हेतु" विवाह किया जिसका संक्षिप्त विवरण क्रमशः इस प्रकार है—

२. ह० मुहम्मद सल्ल० ने अपनी दूसरी शादी (विवाह) स्वर्गीय सकरान की विधवा बुढ़िया से की।
३. तीसरी शादी हजरत अबूबक्र रजे० की पुत्री हज़रत आयेशा सिद्दीका से की।
४. चौथी शादी हज़रत उमर की विधवा पुत्री हफसह से की।
५. पाँचवीं शादी उमर की विधवा पुत्री जैनब विन्त हज़ीमा (हिन्द) से की।
६. छठी शादी आपने उम्म सलमा से की।
७. सातवीं शादी एक विधवा "जुवैरिया" से हुई।
८. आठवीं शादी हय्यबिन अखतब की विधवा लड़की से हुई।
९. नवीं शादी अबू सुफियान की विधवा लड़की उम्म हबीबह से हुई।
१०. दसवीं शादी भी एक विधवा "मैमूनह" से हुई जो कुरैश सरदार हारिश की लड़की थीं।
११. ग्यारहवीं शादी जैनब विन्त हजश के साथ हुई।
१२. बारहवीं शादी मारया क़िब्तिया के साथ हुई।

उपरोक्त सभी वैवाहिक सम्बन्ध पर यदि ध्यान दिया जाय, तो अधिकांश शादियाँ ह० मु० सल्ल० ने विधवाओं एवं बेसहारा स्त्रियों को आश्रय प्रदान करने हेतु ही की थीं।

इस तथ्य से स्पष्ट हो जाता है कि ह० मु० सल्ल० ने शादियाँ गृहस्थ का ऐश्वर्य भोगने के निमित्त से नहीं की थीं, वरन् इनमें से अधिकांश को आश्रय एवं उनकी समयानुसार इच्छा को देखते हुए किया था।

कुरान शरीफ़ के आदेशानुसार ''सम्पन्न एवं समृद्धिशाली व्यक्ति गुलाम अथवा दासी (लौंड़ी) के निकाह अथवा विवाह का भी प्रबन्ध करें यदि वह लड़की अथवा लड़का नेक एवं धर्मशील हो।''

सन्तान एवं औलादें

हजरत मुहम्मद सल्ल० के तीन पुत्र तथा चार पुत्रियाँ थीं जो क्रमशः इस प्रकार हैं—

१. हजरत कासिम। उपनाम तय्यब।
२. हजरत अब्दुल्लाह। उपनाम ताहिर।
३. हज़रत इब्राहीम जो सबसे छोटे थे एवं असमय में ही आप खुदा को प्यारे हो गये थे।

चार पुत्रियाँ क्रमशः—

१. ह० जैनब। (अल्प आयु में ही देहान्त हो गया था।)
२. हज़रत रूकय्या।
३. हज़रत उम्म कुलसूम।
४. हज़रत फ़ातिमा (बीबी सैय्यिदह)।

हजरत रूकय्या का विवाह हजरत उस्मान गनी के साथ हुआ, परन्तु देहान्त हो जाने पर ह० उम्म कुलसूम की शादी भी ह० उस्मान गनी के साथ कर दी गयी थी तथा हज़रत फातिमा ज़हरा की शादी हज़रत अली करमुल्लाहवजहु के साथ हुई थी जो बाद में इस्लाम धर्म के प्रवर्तक एवं खलीफ़ा हुए। हज़रत इमाम हसन एवं हज़रत इमाम हुसैन अलै० आपके ही फर्जन्द (बेटे) थे। (शिया हजरात का उक्त बातों में मतभेद है।)

हजरत मुहम्मद सल्ल० के दस चचा थे जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं—

१. हज़रत हमज़ा
२. ह० अलअब्बास
३. ह० अबू तालिब
४. ह० अबू लहब
५. ह० जुबैर
६. ह० मकूम
७. ह० ज़रार
८. ह० मुगीरह
९. ह० हारिस
१०. ह० अब्दुल्लाह

इससे अतिरिक्त प्रामाणिक साक्ष्यों के अनुसार हजरत मुहम्मद सल्ल० की छह फूफियाँ भी थीं।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर पहली 'वह्य'

हज़रत मु० सल्ल० मूर्तिपूजा के घोर विरोधी थे। इससे दूर रहने के लिए लोगों को अनेक प्रकार से उपदेश देते रहे तथा इसी संदर्भ में आप एकांत में खुदा का ध्यान भी किया करते थे।

रमज़ान शरीफ़ के महीने में आप प्रायः आबादी के बाहर जाकर 'माबूद' अर्थात् एक अल्लाह की इबादत करते जो कि गारे हिरा नामक पहाड़ी के नाम से सुप्रसिद्ध है और मक्का से लगभग ४ कि० मीटर दूर है।

इसी प्रकार रमज़ान के महीने में आप अल्लाह का ध्यान कर रहे थे, तभी एक फ़रिश्ता आपके पास आया और उसने कहा— मैं अल्लाह का भेजा हुआ 'दूत' हूँ। फ़रिश्ते ने हज़रत मु० सल्ल० से कहा, "पढ़ो"। आपने फ़रमाया—मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ। फ़रिश्ते ने दूसरी बार कहा—पढ़ो। आपने फिर फ़रमाया—मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ। तीसरी बार फ़रिश्ते ने कहा—अपने रब के नाम से पढ़ो जिसने इन्सान को जमे हुए खून से पैदा किया

है। पढ़ो क्योंकि तुम्हारा रब बड़ा मेहरबान है, जिसने मनुष्य को वह सब कुछ सिखाया जिसे वह नहीं जानता था।

(कु० श० सूर : ९६ आ० १५)

मक्के में यह पहली 'वह्य' थी जो ह० मु० सल्ल० पर अवतरित हुई। इसके पश्चात् आप तुरन्त घर आ गये और बीबी ख़दीजा से कहा, "हमें कम्बल उढ़ा दो।" उस समय आपका दिल काँप रहा था और ज़ोर की ठंड लग रही थी। कम्बल ओढ़ा देने के पश्चात जब आपको कुछ शान्ति मिली तो आपने बीबी ख़दीजा से सारा हाल (वृतांत) कह सुनाया और फ़रमाया कि अब मुझे अपनी जान का ख़तरा है।

बीबी ख़दीजा एक नेक एवं समझदार पत्नी थीं। उन्होंने कहा ऐसा कभी नहीं हो सकता, ख़ुदा आपको कभी रुसवा नहीं करेगा, क्योंकि आप अपने सभी सम्बन्धियों के 'हक़' (अधिकार) अदा करते हैं, लोगों के बोझ आप स्वयं उठा लेते हैं, बेसहारा और यतीमों की आप सहायता करते हैं, तथा अन्य सभी अच्छे कार्य आपके हाथों सम्पन्न होते हैं।

उक्त सान्तवना के पश्चात् बीबी ख़दीजा आपको एक विद्वान एवं वृद्ध ईसाई जिसका नाम बर्क़ाबिन-नौफ़ल था उसके पास ले गयीं। बर्काबिन-नौफ़ल ने सब बातें सुनने के पश्चात कहा, "यह वही फरिश्ता है, जो हज़रत मूसा अलै० के पास आया और निःसन्देह अब आपको ख़ुदा ने अपना रसूल बनाया है। काश मैं भी उस समय तक जीवित रहता जबकि आपकी जाति वाले आपके विरोधी बन जायेंगे।" आगे चल कर यह देखा गया कि बर्काबिन नौफ़ल की बातें अक्षरशः सत्य हुईं।

वह्य का अवतरण प्रारम्भ

पहली वह्य (वही) के पश्चात ६ महीने तक कोई वह्य अल्लाह के तरफ से नहीं आई, परन्तु ह० मु० सल्ल० बराबर गारे हिरा में जाते थे। कुरान शरीफ़ के अनुसार ज़ब दूसरी ब़ार वह्य का अवतरण हुआ तो ह० मु० सल्ल० से कहा गया "हे कमलीवाले उठो, और अल्लाह की महानता का वर्णन करो, रब के प्रति भय उत्पन्न करो, अपने वस्त्रों को पाक रखो, और नापाकी से दूर रहो, अधिक प्राप्ति के लालच से किसी पर उपकार मत करो, तथा अपने रब के विषय में सब्र से काम लो।" (कु०श० सूर : ७४-१-६)

इसके पश्चात् ह० मु० सल्ल० अल्लाह के रसूल और नबी के रूप में सम्पूर्णमानव जाति के उत्थान के लिए सीधा मार्ग प्रशस्त किया, तथा इस्लाम धर्म के प्रचार को विस्तृत रूप प्रदान किया।

इस्लाम धर्म का प्रचार मक्के में

इस्लाम धर्म के प्रचार-प्रसार से पूर्व ही कुछ विशिष्ट लोगों ने इस्लाम धर्म को ग्रहण कर लिया था, जिनके नाम उल्लेखनीय हैं।

सर्वप्रथम बीबी ख़दीजा ईमान लाईं उसके पश्चात क्रमशः हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ र०। हज़रत अली र० ह० ज़ैद बिन हारिस ने ज़ो कि ग़ुलाम थे, इस्लाम धर्म को कबूल किया परन्तु अधिकांश लोगों ने आपकी हँसी उड़ाई तथा आरोप लगाये। परन्तु मु० सल्ल० ने धर्म प्रचार का कार्य निरन्तर जारी रखा। 'सफ़ा' नामक पहाड़ी पर एक दिन ह० मु० सल्ल० ने पुकारा ("या सबाहा") ज़ो तत्कालीन प्रथा थी कि संकट के समय लोग ऐसा कह कर लोगों को एकत्र किया करते थे। इस बार भी 'आप' की आवाज़ सुन कर लोग एकत्रित हुए और पूछा क्या बात है ? ह० मु० सल्ल० ने कहा आप लोग मेरी बात पर विश्वास करोगे ? सब ने कहा आप 'सादिक' हैं, आपकी बात हम क्यों नहीं मानेंगे। तब अल्लाह के रसूल ने कहा, "देखो, भाइयो आप लोग एक अल्लाह की इबादत करो, बुतों की पूजा मत करो, खुदा से डरो, यदि ऐसा नहीं करोगे तो जान लो एक भयानक यातना में फंस जाओगे।"

ऐसा सुनकर अधिकांश लोग डर गये, और कुछ लोगों ने आपकी हँसी उड़ाई। आपके चाचा अबू लहब यह कहते हुए चले गये कि "क्या इसी बात के लिए हमें एकत्र किया था।"

ह० मु० सल्ल० पर इस प्रतिक्रिया का कोई प्रभाव न पड़ा। धर्म प्रचार में आप निरन्तर प्रयत्नशील रहे, तथा तौहीद (एकेश्वरवाद) की स्थापना में तल्लीन रहे। परन्तु तत्कालीन पुरोहितों और सरदारों को आपकी बातें अच्छी न लगतीं क्योंकि उनकी छवि धूमिल प्रतीत हो रही थी। धैर्य-प्रेम एवं सद्व्यवहार के कारण ह० मु० सल्ल० की प्रशंसा दूर-दूर तक होने लगी थी।

विरोधियों का प्रलोभन एवं अत्याचार

ह० मु० सल्ल० द्वारा इस्लाम धर्म के प्रचार एवं प्रसार से तत्कालीन विरोधियों को अब और चिन्ता उत्पन्न हो गयी थी, क्योंकि कुरान की आयतों में वह मिठास-माधुरी व्यक्त की जाती थी कि सुनने वाला मंत्रमुग्ध हो जाता था। एक बार 'उतबा' नामक व्यक्ति विरोधियों का प्रतिनिधि बन कर ह० मु० सल्ल० के पास आया। उसने आप से कहा, "मुहम्मद, आप क्या चाहते हो ? क्या मक्के का शासन चाहते हो, किसी बड़े घराने में शादी की अभिलाषा रखते हो ? या बहुत बड़ी दौलत का मालिक बनना चाहते हो ? यदि ऐसा है तो हम आपकी समस्त माँग स्वीकार करते हैं तथा आपको अपनी कौम का सरदार भी बना सकते हैं, परन्तु आप हमारे धर्म का विरोध करना बन्द कर दो।"

ह० मु० सल्ल० ने इन बातों को सुनने के बाद उसे सम्मानसहित बिठाया और उसके सामने कुरान शरीफ़ की आयतें पढ़ना आरम्भ किया जिसके अन्तर्गत (कु० हा० मीम० सजदा०) का विश्लेषण किया और तौहीद अथवा एकेश्वरवाद का संदेश स्पष्ट किया। उतबा इन आयतों से बहुत प्रभावित हुआ और चुपचाप लौट गया और अपने साथियों से कहा, "भाइयो, आप ह० मु० को उनके हाल पर छोड़ दो। मैं उन्हें समझाने में असमर्थ हूँ।" परन्तु विरोधियों का क्रोध और भी भड़क उठा।

ह० मु० सल्ल० ने जब देखा कि मक्के के कुरैश सरदार किसी प्रकार अपना अत्याचार कम नहीं कर रहे हैं और अनेक प्रकार के कष्ट तथा यातना—'नव मुस्लिम' को पहुँचा रहे हैं तो आपने 'हब्श' नामक स्थान के लिए हिजरत करने को कहा जहाँ नजाशी नामक बादशाह की हुकूमत थी। इस काफ़िले में ग्यारह मर्द तथा चार स्त्रियाँ थीं।

मक्का के 'सरदार' ने नजाशी शासक को भी ह० मु० सल्ल० के विरुद्ध उकसाने की चेष्टा की। बादशाह ने अपने दरबार में इनसे प्रश्न किया जो हज़रत ईसा अलै० से सम्बन्धित था। तब पूर्ण रूप से मुस्लिम ह० जाफ़र ने कुरान शरीफ़ के सूर: मरयम (१९) को पढ़कर बादशाह को सुनाया तथा इस्लाम की शिक्षा को संक्षेप में स्पष्ट करते हुए तौहीद (एकेश्वरवाद) की विशेषता को सिद्ध कर दिया। बादशाह इससे बहुत प्रभावित हुआ, उसकी

आँखों से आँसू बहने लगे। उन्मुक्त भाव से बादशाह बोला, "अल्लाह की कसम, यह कलाम और इन्जील दोनों एक ही दीप के समान प्रकाशमय हैं।" तत्पश्चात् नजाशी बादशाह ने ह० मु० सल्ल० के नबूवत की पुष्टि की और इस्लाम धर्म को सहर्ष ग्रहण कर लिया।

ह० मु० सल्ल० का सामाजिक बहिष्कार

ह० उमर भी उस समय इस्लाम के कट्टर विरोधी थे तथा ह० मु० सल्ल० को कत्ल कर देना चाहते थे, परन्तु अपनी बहन एवं बहनोई को इस्लाम धर्म की ओर आकर्षित देख कर ह० उमर बहुत क्रोधित हुए और उनको एक दिन मार कर घायल कर दिया। और जब वह लोग मर जाने के लिए भी तैयार हो गये तो ह० उमर ने उनसे पूछा, "तुम लोग क्या चीज़ छिप कर पढ़ते हो? मुझे भी सुनाओ।" तब बहन ने कहा, "पहले गुसल अर्थात् स्नान कर लो और पवित्र हो जाओ, तब हम सुनायेंगे।" ह० उमर ने ऐसा ही किया और कहा—अब सुनाओ। बहन फातिमा ने कुरान शरीफ़ की सूर: २० को पढ़कर सुनाया। जैसे-जैसे पढ़ते थे, यह कलाम ह० उमर के दिल में उतरता जाता था। वे सहसा कह पड़े "कैसा अनोखा कलाम है" और बोले—यह सच है कि एक अल्लाह के अलावा (अतिरिक्त) कोई और इलाह "पूज्य" नहीं। और वहाँ से उठकर हज़रत उमर सीधे ह० मु० सल्ल० के पास गये और सहर्ष इस्लाम धर्म को स्वीकार किया।

इसके पश्चात् ह० उमर ने एलान कर दिया कि अब मुसलमानों को काबे में नमाज पढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। परन्तु कुरैश सरदारों ने पुन: निर्णय लिया कि अब ह० मु० सल्ल० और उनके परिवार का सामाजिक बहिष्कार किया जायेगा। यहाँ तक कि उन्हें खाने-पीने का सामान तक न दिया जायगा जब तक कि ह० मु० सल्ल० को उनके परिवार वाले स्वयं क़त्ल के लिए कुरैश के हवाले नहीं कर देते। इस प्रकार की एक तहरीर लिख कर काबे के दरवाज़े पर लटका दी गयी। इसके पश्चात् ह० मु० सल्ल० के वंशज (बनी हाशिम) के लिए दो रास्ते थे—या तो ह० मु० सल्ल० को कुरैश के हवाले करके उन्हें क़त्ल करा दें अथवा इस समझौते का बहिष्कार करके अपनी विपत्तियों में और इज़ाफा कर लें। तब हज़रत अबू तालिब ने एक निर्णय लिया और अपने समस्त परिवार को लेकर पहाड़ के एक खोह (दर्रे) में व्यवस्थित किया। इस प्रकार विपत्तियों का सामना करते हुए तीन

वर्ष व्यतीत हो गये। इन लोगों को प्राय: पेड़ों के पत्तों को खाकर तथा सूखा हुआ चमड़ा भी खाकर समय बिताना पड़ा। जब बच्चे भूख से रोते-बिलखते तो कुरैश सुन कर खुश होते थे। कभी-कभी कोई दयालु उन पर तरस खाकर कुछ खाने की सामग्री छिपा कर भेज देता था।

इस प्रकार तीन वर्ष तक बनी हाशिम विपत्तियों को सहते रहे, नबूवत के दसवें वर्ष कुरैश आपस में लड़ने लगे और यह समझौता भी समाप्त हो गया और पुन: बनी हाशिम इस्लाम धर्म के प्रचार के लिए आगे चल पड़ा।

इस्लाम धर्म का प्रचार 'ताइफ' में

सामाजिक बहिष्कार के कुछ समय पश्चात् ही, ह0 अबू तालिब एवं ह0 ख़दीजा का देहान्त हो गया। तब ह0 मु0 सल्ल0 ने मक्का से बाहर जाकर इस्लाम धर्म के प्रचार का निर्णय लिया, इसी प्रकरण में आपने 'ताइफ़' जाकर वहाँ के असरदार लोगों के सामने यह नेक सन्देश प्रस्तुत किया—इन लोगों ने ह0 मु0 सल्ल0 का उपहास उड़ाया और बस्ती के गुण्डों और बदमाशों को प्रोत्साहन दिया जिन्होंने ह0 मु0 सल्ल0 को पत्थर मार-मार कर घायल कर दिया और आप खून से लथपथ हो गये। परन्तु ऐसी स्थिति में भी ह0 मु0 सल्ल0 अपने विरोधियों के प्रति क्रोधित नहीं हुए और अल्लाह से यही दुआ करते रहे, "अल्लाह तू मेरी क़ौम को सीधा रास्ता दिखा, ये लोग अभी नहीं जानते और हक़ीकत को समझते नहीं हैं।" ह0 मु0 सल्ल0 हतोत्साह न हुए और इस्लाम धर्म का प्रचार एवं प्रसार करते रहे। हज के महीने में 'अक़बा' नामक स्थान पर ह0 मु0 सल्ल0 ने कुरान की आयतें पढ़ कर सुनाया तो वहाँ पर उपस्थित कुछ 'यहूदी' भी आपसे प्रभावित हुए। उन्होंने सोचा यह वही आगामी नबी हैं जिनकी चर्चा हमारे धार्मिक ग्रंथ में की गयी हैं।

इस्लाम धर्म का प्रचार मदीने में

शनै: शनै; (धीरे-धीरे) लोग इस्लाम धर्म को ग्रहण करते रहे। किन्तु विरोधियों का क्रोध बढ़ता जा रहा था, वे ह0 मु0 सल्ल0 की शक्ति को क्षीण करने का प्रयत्न करते रहे। कुछ समय पश्चात् 'अक़बा' के पास पुन: ह0 मु0 सल्ल0 ने लोगों के सम्मुख व्याख्यान दिया जिसके परिणाम स्वरूप ७२

व्यक्तियों ने इस्लाम धर्म में अपनी आस्था व्यक्त की और एक समझौता के अन्तर्गत एक निर्णय पर सहमत हुए जो निम्नांकित हैं——

१——अल्लाह के सिवा किसी की दास्ता स्वीकार नहीं करेंगे ।

२——चोरी न करेंगे ।

३——ज़िना (अनैतिक सम्भोग) नहीं करेंगे ।

४——अपनी औलाद (संतान) का क़त्ल नहीं करेंगे ।

५——किसी व्यक्ति पर झूठा आरोप नही लगायेंगे । तथा,

६——किसी की अनुपस्थिति में (पीठ पीछे) बुराई नहीं करेंगे, ह0 मु0 सल्ल0 जिस भली बात का हुक्म देंगे——उससे मुँह न मोड़ेंगे ।

इस प्रकार सब्र और धैर्य के साथ ह0 मु0 सल्ल0 समस्त समस्याओं का समाधान करते रहे तथा पिछले नबियों की कठिनाइयों का अवलोकन कुरान शरीफ़ के माध्यम से करते रहे जिससे मनोबल ऊँचा होता गया, इस आशय का उदाहरण कुरान शरीफ़ के 'अनक़बूत' (सूरा–२९) में स्पष्ट रूप से उद्धृत है——

ह0 मु0 सल्ल0 के आदेशानुसार बहुत से लोग धर्म-प्रचार के निमित्त मदीना पहुँचे और वहाँ 'दीन-इस्लाम' की कामयाबी के लिए प्रयत्नशील हो गये । ह0 मु0 सल्ल0 स्वयं ह0 अबू बक्र के साथ मदीना पहुँचे । 'कबा' नामक स्थान पर ही आपका भव्य स्वागत किया गया, जो मदीना से ३-४ मील पहले पड़ता था । अनेकों अभिलाषी ह0 मु0 सल्ल0 को अपने-अपने घर ले जाना चाहते थे, परन्तु आपने सबसे कहा, मेरी ऊँटनी जहाँ जाकर स्वयं ठहर जायेगी, मैं उसी के घर पर ठहर जाऊँगा, इतना कहने के पश्चात हा0 मु0 सल्ल0 ऊँटनी पर बैठ गये, और उसे आज़ाद छोड़ दिया । कुछ समय तक चलने के पश्चात ऊँटनी हज़रत अबू अन्सारी के मकान के सामने ठहर गयी । आप वहीं उतर गये और ह0 अबू अन्सारी के मकान पर ठहरे । सर्वप्रथम आप ने एक जमीन ह0 अबू अन्सारी के घर के पास ही ख़रीदा और एक साधारण-सी मस्जिद का निर्माण किया, जिसकी दीवारें कच्चे ईंटों की और छत खजूर के पत्तों से बनाई गयी थीं । यह वही स्थान है जहाँ अब मस्जिदें नबवी है ।

जंगेबद्र

ह0 मु0 सल्ल0 ने मुहाजिरों तथा अन्सार को इकट्ठा करके उन्हें बतलाया कि अब मुक़ाबिला कुरैश की सेना से होगा। इसलिए खुदा का नाम लेकर जो स्वेच्छा से चलना चाहें मेरे साथ कूच करें। केवल ३१३ आदमी ही ऐसे निकले जो पूर्णतया लड़ाई के योग्य थे, इनमें से तीन के पास घोड़े थे और (७०) सत्तर ऊँट थें, तथा लड़ाई का सामान भी बहुत कम ही था। इसलिए मुसलमान कुछ भयभीत हो रहे थे क्योंकि रमज़ान के महीने में लड़ाई करना आसान काम नहीं था जबकि रोज़े इसी वर्ष 'फर्ज़' किये गये थे। परन्तु खुदा के रसूल ने सब को तसल्ली प्रदान की अल्लाह् का वादा बतलाया, जिसके अनुसार विजय प्राप्त होने की आशा को दुहराया। फलतः १६ रमज़ान सन् २ हिजरी को बद्र नामक स्थान में जो मदीना से ८० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है, वहाँ पर मुसलमानों का छोटा सा क़ाफ़िला पहुँचा, जहाँ अपने से तीन गुनी लैस सेना से मुक़ाबला करना था।

मुहाजिरों के सामने मुकाबले में उनके ही सगे सम्बन्धी थे, जो कि भाई और बेटे के रूप में एक दूसरे के सामने प्रतिद्वन्द्वी की भाँति थे। मुसलमानो का मुक़ाबला शक्तिशाली दुश्मनों से हुआ परन्तु अल्लाह् के रसूल के साथ-साथ साहस और निर्भीकता से लड़ने के कारण मुसलमान विजयी हुए तथा इस्लाम धर्म की नींव को मज़बूत करने में वास्तविक रूप से प्रथम सफलता अर्जित की।

जंगे-उहद

सन् ३ हिजरी में पुनः कुरैशों ने एक बड़ी सेना के साथ मदीने पर चढ़ाई कर दी और मदीना से ४ मील पूर्व उहद नामक पहाड़ी पर अपना पड़ाव डाल कर सेना को सुसंगठित कर लिया, उनके मुक़ाबले में ह० मु० सल्ल० के साथ केवल ७०० मुसलमान आगे बढ़े, और खुदा की ज़ात पर भरोसा रखते हुए कुरैश की सेना के समीप जा पहुँचे। इसके विपरीत कुरैश सेना अत्यधिक शक्तिशाली थी जिसके अन्तर्गत ३००० सैनिक विभिन्न शस्त्रों से लैस थे। लड़ाई प्रारम्भ हुई और मुसलमान विजय की ओर अग्रसर होने लगे तभी कुछ सैनिकों ने ग़लत कदम उठाया और वे कुरैश का माल लूटने में व्यस्त हो गये तथा जिन्हें ह0 म0 सल्ल0 ने पहाड़ी के दर्रे से न हटने का आदेश दिया था वह भी माल लूटने के लिए वहाँ से हट गये।

इसी बीच कुरैश ने पहाड़ी का चक्कर लगाया और दूसरी ओर से हमला कर दिया और वह मुसलमानों पर हावी हो गये। साथ ही यह भी ऐलान कर दिया कि नऊज़ बिल्लाह आज ह० मु० सल्ल० शहीद हो गये। यह सुन कर मुसलमानों के पाँव उखड़ गये। परन्तु यह असत्य था, ह० मु० सल्ल० जीवित थे और जब पुनः ह० मु० सल्ल० को देखा तो कुरैश भयभीत होकर भाग खड़े हुए। इसके पश्चात् ह० मु० सल्ल० ने कुरैश का पीछा किया और ८ मील तक उन्हें निरन्तर भागने पर मजबूर कर दिया। इसी अवसर पर ह० मु० सल्ल० ने मुसलमानों को कुछ विशिष्ट निर्देश दिये थे जो कि कुरान शरीफ़ (आले इमरान) के अन्त में दर्ज हैं।

इस घटना के पश्चात् कुरैश ने यहूदियों से सम्पर्क बनाया और उनके साथ मिलकर पुनः लड़ाई की योजना बना डाली।

जंगे-खन्दक

इस बार एक सुसज्जित एवं विशाल सेना का मुक़ाबला मुसलमानों के साथ था जो उनके लिए कठिन परीक्षा की घड़ी थी, क्योंकि कुरैश और यहूद दोनों की सेनाएँ एकसाथ होकर मुसलमानों का विनाश करने पर तुली थीं। दुश्मन की सेना को देखते हुए यह निर्णय लिया गया कि मदीने का वह भाग जो खुला हुआ है, अर्थात् तीन ओर से घरों एवं खजूर के दरख्तों से नहीं घिरा है, उसे अविलम्ब खोदकर खाई बना ली जाय।

लगभग ३ हज़ार मुसलमानों ने २० दिन तक निरन्तर मेहनत करते हुए ५ गज गहरी खाई खोद कर तैयार कर ली। इस कार्य में ह० मु० सल्ल० स्वयं अन्य लोगों के साथ काम किया करते थे। दुश्मन की विशाल सेना आ पहुँची और तुरन्त घेरा डाल दिया जो एक महीने तक क़ायम रहा। इस बीच मुसलमानों को विभिन्न प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ा, उन्हें कई-कई दिनों तक भूखा रहना पड़ा। दुश्मनों की दस हज़ार सेना के लिए भी कठिनाई होने लगी थी। खुदा की ऐसी मेहरबानी हुई कि अचानक दुश्मनों के खेमे उखड़ गये। ठंडा मौसम और तूफ़ानी हवा के कारण उनके अन्दर बिखराव आ गया तथा यहूदी कबीलों ने कुरैश का साथ छोड़ दिया जिसके कारण कुरैश भी पीछे हटने और वापस जाने के लिए विवश हो गये। इस विषय की चर्चा कुरान शरीफ़ के सूरः ("अलअहज़ाब–३३") में दर्ज है तथा खन्दक की लड़ाई के नाम से प्रसिद्ध है।

जंगे-ख़ैबर

इस लड़ाई से पूर्व हुदैबिया का महत्वपूर्ण समझौता हुआ जिसमें निर्णय लिया गया कि आगामी वर्ष में मुसलमान 'हज़' करने तथा काबे का तवाफ़ करने के लिए मक्का में आ सकते हैं। परन्तु बिना हथियार लिये हुए और केवल ३ दिन के लिए ही मक्का में ठहरने की आज्ञा प्रदान की गयी। परिस्थितियों को देखते हुए मुसलमान यह समझौता करने पर विवश हो गये। फलस्वरूप सन् ७ हि० में ह० मु० सल्ल० मुसलमानों की एक बड़ी संख्या के साथ मक्का में प्रवेश किया तथा 'काबाशरीफ़' का तवाफ़ (दर्शन) किया तथा बनू नुज़ें एवं यहूदियों के गढ़ ख़ैबर को पूर्णतया इस्लाम धर्म का संदेश मानने के लिए प्रस्ताव रखा, परन्तु यहूदी इस पर सहमत नहीं हुए।

फलस्वरूप ह० मु० सल्ल० ने सन् ७ हिजरी, मुहर्रम के महीने में ख़ैबर के किले को घेर लिया तथा २० दिन तक लगातार घेरा डालने के पश्चात् ६३ यहूदी मारे गये तथा १५ मुसलमान भी शहीद हुए। परन्तु विजयश्री मुसलमानों को प्राप्त हुई।

जंगे-ख़ैबर की विजय से इस्लाम धर्म की छवि एवं शक्ति प्रबल हो गयी। दूर-दूर तक इस धर्म के विरोधी हो गये। इसके पश्चात् ह० मु० सल्ल० ने इस्लामी समाज को पूर्ण रूप से संगठित किया एवं नैतिक, सामाजिक, धार्मिक आर्थिक तथा समस्त दृष्टि से परिपूर्ण एवं सुसज्जित किया।

जंगे-मक्का

'काबा शरीफ़' अभी भी मक्का के मुशिरकों के क्षेत्राधिकार में था जहाँ एकेश्वरवाद को स्थापित कराने का मुख्य उद्देश्य ह० मु० सल्ल० के सम्मुख प्रश्नचिह्न के रूप में विद्यमान था।

इसी उद्देश्य के निमित्त ह० मु० सल्ल० ने सन् ८ हिजरी रमज़ान के महीने में लगभग १० हज़ार सेना के साथ मक्के पर चढ़ाई की। अबू सुफ़ियान नामक कुरैश सरदार इस्लाम धर्म से प्रभावित होकर मुसलमानों के साथ हो गया। मक्के पर चढ़ाई के समय विरोधी पहले तो लड़ने के लिए पंक्तिबद्ध हो गये, परन्तु बाद में वह बिना लड़े ही मैदान से हट गये। केवल एक स्थान पर हजरत खालिद को लड़ना पड़ा जिसमें १३ दुश्मन मारे

गये और ३ मुस्लिम शहीद हुए। परन्तु ह० मु० सल्ल० के हाथों कोई भी हताहत नहीं हुआ।

मक्के में प्रवेश करते ही ह० मु० सल्ल० ने ऐलान कर दिया कि सम्पूर्ण मक्का-वासियों को जान की 'अमा' दी जाती है।

तत्पश्चात् काबा शरीफ़ के अन्दर रखी सभी मूर्तियों को बाहर फेंक देने का आदेश ह० मु० सल्ल० ने फ़र्माया तथा काबे की दीवारों पर लगे देवी-देवताओं के चित्र को भी मिटाने का आदेश दिया।

'काबा' के अन्दर प्रवेश के समय ह० मु० सल्ल० की जबान पर कुरान की सूरा बनी इसराइल (१७-आयत-८१) थी जिसका अर्थ है, "कह दो सत्य आ गया और असत्य मिट गया।" इस अवसर पर काबे से ३६० मूर्तियाँ निकाल कर फेंक दी गयीं। मक्के पर विजय के पश्चात् ह० मु० सल्ल० ने समस्त मक्का वालों को क्षमा कर दिया जिससे वे अत्यधिक प्रभावित हुए और पूर्ण रूप से सच्चे मुसलमान हो गये।

विभिन्न जंगों के परिणाम

जंगे-मक्का के पश्चात् 'हुनैन' एवं 'तबूक' की महत्वपूर्ण लड़ाई भी हुई जिसका परिणाम भी मुसलमानों के हिस्से में आया और हिज़रत के नवें वर्ष में विभिन्न देशों से प्रतिनिधि-मण्डलों का आना प्रारम्भ हो गया था। जो भी कुरान शरीफ़ की आयतें सुनता, वह इस्लाम धर्म सहर्ष स्वीकार कर लेता था तथा ह० मु० सल्ल० के सरल व्यवहार से प्रभावित होकर एकेश्वर-वाद पर ईमान ले आता था।

ह० मु० सल्ल० ने अपने जीवन के अन्तिम १० वर्षों में ४७ लड़ाइयों में स्वयं हिस्सा लिया जिनमें ६ तो अधिक महत्वपूर्ण हैं तथा ३८ जंगें ऐसी हैं जो आपकी हिदायत के मुताबिक अन्य सरदारों की अध्यक्षता में हुईं। परन्तु प्रत्येक घटना की पूर्ण जानकारी आपको हुआ करती थी इस अवधि के दौरान सम्पूर्ण अरब से मूर्तिपूजा की प्रथा को समाप्त कर दिया गया, समाज में जुआ-शराब, ब्याज तथा व्यभिचार पर नियन्त्रण कर के स्त्रियों एवं पुरुषों के सम्बन्ध को सुनिश्चित किया गया। ईमान की शुद्धता एवं मानवता का विवेक-पूर्ण रहस्य स्पष्ट किया जो पूर्णतया कुरान पर आधारित था और आज भी मौलिक रूप में विद्यमान है।

ह० मु० सल्ल० का अन्तिम हज़ एवं स्वर्गवास

वफ़ात से पूर्व हज़ करने की इच्छा प्रबल हुई जिसके अन्तर्गत ह० मु० सल्ल० ने हिज्ररत के दसवें वर्ष हज़ करने का निर्णय लिया। इस अवसर पर आपके साथ बड़ी संख्या में लोग हज़ करने के लिए चल पड़े। इस अवसर पर अराफ़ात के मैदान में 'नौ' ज़िलहिज्जा को ह० मु० सल्ल० ने एक महत्वपूर्ण भाषण दिया जिसके अन्तर्गत हज़ अदा करने के वास्तविक स्वरूप एवं अत्यन्त दार्शनिक आदेश प्रदान किये जिसके अंश आज भी हदीसों में विद्यमान हैं।

भाषण के कुछ महत्वपूर्ण अंश प्रस्तुत हैं—

१. आपने फरमाया, "अरब को गैर-अरब पर और गैर-अरब को अरब पर कोई बड़ाई नहीं हासिल है। तुम सब आदम की औलाद हो और आदम मिट्टी से पैदा हुए थे और सभी इंसान आपस में भाई-भाई हैं।"

२. पिछले सभी खून को माफ़ (अनृत) करते हुए सबसे पहले 'आपने" अपने वंश का खून माफ़ कर दिया तथा ब्याज को भी अनृत घोषित किया।

३. आपने फरमाया कि औरतों के मामले में अल्लाह से डरो, तुम्हारा औरतों पर और औरतों का तुम पर हक़ है।

४. मैं तुम्हारे बीच ऐसी दो चीजें छोड़े जाता हूँ जिसे अगर मजबूती से पकड़ लिया तो कभी गुमराह न होगे और वह है अल्लाह की किताब कु० शरीफ़ और दूसरी, मेरे अहले बैत।

५. अन्त में आपने फरमाया "अगर अल्लाह के यहाँ तुमसे मेरे बारे में पूछा जायेगा तो क्या कहोगे ?" सब ने एक स्वर से कहा, "हम यही कहेंगे कि आपने अल्लाह का सन्देश हम तक पहुँचा दिया और अपना फ़र्ज़ (कर्तव्य) पूरा कर दिया। तब ह० मु० सल्ल० ने आसमान की ओर हाथ उठाते हुए कहा "हे अल्लाह! तू गवाह रहना।"

इस घटना के कुछ समय पश्चात् सन् ११ हिजरी सफ़र की १६ तारीख

को ह० मु० सल्ल० की तबियत अचानक ख़राब हुई और निरन्तर ख़राब होती गयी। कभी बीमारी बिल्कुल कम हो जाती और कभी बहुत अधिक बढ़ जाती थी।

आख़िरकार १२ रबी उल-अव्वल सन् १२ हिजरी को आप इस मायामयी संसार से कूच कर गये।

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन।

ह० मु० सल्ल० रंग-रूप एवं व्यक्तित्व

विशिष्ट एवं प्रामाणिक साक्ष्यों के अनुसार आपका व्यक्तित्व इतना मोहक एवं आकर्षक था कि जो भी एक बार आपका दर्शन कर लेता वह प्रसन्न चित्त होकर लौटता था : प्रमाणित ग्रन्थों एवं हदीसों के अनुसार "आप औसत क़द के जिस्म (शरीर) वाले थे, रंग आपका सफेदीपन लिए गेंहुआ सुर्ख़ (लाल) था, माथा चौड़ा तथा दोनों भवें मिली हुई थीं, नाक किसी क़दर लम्बी थी, चेहरे मुबारक पर गोश्त (मांस) न था, परन्तु कुशादा था, दाँत बहुत मिले हुए न थे, गर्दन लम्बी सर बड़ा और सीना चौड़ा था, सर के बाल बिल्कुल सीधे न थे, दाढ़ी आपकी घनी थी, चेहरा लम्बा तथा आँखे काली और बड़ी थीं। कन्धे पर गोश्त और ठोढ़ी की हड्डियाँ बड़ी थीं. सीने मुबारक पर नाफ़ (नाभी) तक बालों की एक हलकी सी लकीर थी, शानों (कन्धों) और कलाइयों पर बाल थे, हथेलियाँ गोश्त से भरी हुई और चौड़ी थीं, पांव की एड़ियाँ कोमल थीं, और तलवे बीच से थोड़ा खाली थे।

आपके पसीना में एक तरह की खुश्बू (महक) थी, कन्धों के बीच में कबूतर के अण्डे के बराबर मुहर नबूवत थी, तथा देखने में एक उभरा हुआ, गोश्त सा लगता था, जिस पर तिल और बाल थे। सर के बाल कन्धे पर लटकते रहते थे तथा बालों में प्रायः (अक्सर) तेल डालते थे, तथा हर दूसरे दिन कंघी करते थें, दाढ़ी में आपके कुछ बाल सफेद हो गये थें।

आपकी बातें बड़ी मधुर होती थीं, तथा आप ठहर-ठहर कर बातें करते थे। आप बहुत तेज चलते थे, चलने में ऐसा लगता था, कि किसी ढलवान ज़मीन पर उतर रहे हैं, जब कभी खुश होते तो आँखें

नीची करके सिर्फ मुस्कुराते, यही आप की हंसी थी, कभी आप ज़ोर से खुलकर न हँसते थे।

ह० जाबिर के अनुसार, एक रात पूरा चांद निकला था और सरकार (ह० मु० सल्ल०) मौजुद (विद्यमान) थें, "कभी मैं चाँद को देखता कभी हुजूर के चेहरा मुबारक को। मैं सच कहता हूँ, मुझे हुजूर चांद से कहीं ज्यादा अच्छे और भले मालूम होते थे।"

आपका आम लेबास (पोशाक, वस्त्र) चादर कमीज़ तहबन्द था, पायजामा आपने कभी नहीं पहना, अमामा (बड़ा रूमाल) आप कन्धे पर रखते थे। जो क़ाले रंग का हुआ करता था, अमामा के नीचे सर पर टोपी अवश्य होती थी। काला कम्बल तथा सफेद कपड़े आपको अधिक पसन्द थे। धारीदार यमनी चादरें भी आपको पसन्द थीं, जर्द रँग भी बहुत प्रिय था, सुर्ख रङ्ग से आपको सख्त नफ़रत थी, वह केवल औरतों के लिए ही मख़सूस था। खुश्बू आपको बहुत पसन्द थीं, यदि कोई खुश्बू की वस्तु हदिया (उपहार-भेंद) करता तो उसे आप वापस न करते थे।

नालैन (जूते) चप्पल की भाँति एक तल्लेदार बना होता था जिसमें तस्मे लगे होते थे। विस्तर एक चमड़े का गद्दा था, ज़िसमें खज़ूर के पत्ते भरे हुए थे, 'बान' की बनी हुई चारपाई भी थी, जिससे प्राय: शरीर पर निशान पड़ जाते थें, एक चाँदी की अंगूटी थी, जिसमें अरबी लिपि में (मुहम्मदुर्रसूलल्लांह) लिखा था। सलाती (हुक्मरान) को ख़त या पत्र लिखते तो उस पर उसी अंगूठी से मुहर लगाई जाती थी। कभी-कभी इसे आप दाहिने-हाथ की अंगुली में भी पहन लिया करते थें।

लड़ाइयों में ज़रह और मग़फर खुद (कवच) भी पहनते थें। तलवार का कब्ज़ा कभी लोहे और क़भी चांदी का भी हुआ करता था।

भोजन में किसी अच्छे खाने की फ़र्माइश कभी नहीं की, जो ख़ाना सामने आता उसे खुशी से खा लेते, दूध में कभी-कभी पानी भी मिला कर पिया करते थें। सिर्का, शहद, रोग़न ज़ैतून, कद्दू (लौकी) को आप बहुत पसन्द करते थें, यदि सालन या रसा में लौकी को काटें या टुकड़े होते तो आप उन्हें ढूंढ़-ढूंढ़ कर निकालते और खुश होकर नोश फ़रमाते या खाते थे।

गोश्त या मांस के किस्मों में, आप मुर्ग-बटेर दुम्बा, बकरी-बकरा, भेड़, ऊँट, खरगोश, मछली का गोश्त खाया करते थे। दस्त और गर्दन का गोश्त आप बड़े चाव से खाते थे, तर्बूज और पतली ककड़ियाँ आपको बहुत पसन्द थीं। कभी-कभी खजूरें, रोटी के साथ भी खाते थे। खाने के बर्तनों में एक लकड़ी का प्याला था जो चारों ओर लोहे के तारों से बँधा था।

भोजन कभी मसनद या तकिया का टेक लगा कर न करते, आप सिर्फ़ तीन उँगलियों से ही खाना खाया करते थे। इसके अतिरिक्त खाने में सफाई का ध्यान रखते और हर वस्तु में सफाई के महत्व पर बल देते थे।

हमेशा दाहिनी करवट सोते और दाहिना हाथ सर के नीचे रख लिया करते थे तथा सोते समय यह दुआ पढ़ते थे (अल्ला हुम्मा बेइस्मेका अमूतो व अहया) जिसका अर्थ है—"खुदा या तेरा नाम लेकर मरता हूँ। जिन्दा रहता हूँ" तथा जागते तो यह दुआ पढ़ते थे। "(अल्हमदोलिल्ला-हिल्लज़ी अहयाना बादा मा आमा तना व एलै हिन्नशूर), अर्थात् "उसका शुक्र है जिसने मौत के बाद हमको ज़िन्दा किया और उसी की तरह आखिर होगा।" आधी रात के बाद भोर मे जाग जाते, मिश्वाक (दातून) हमेशा सरहाने रहती, उठकर पहले मिश्वाक करते, फिर वज़ू करते, उसके बाद खुदा की इबादत में मशगूल हो जाते थे।

(सीरतुन्नबी बुखारी मुस्लिम तथा अन्य विशिष्ट ग्रन्थों से उद्धृत)

आश्चर्यजनक मौजजे अथवा किंवदन्तियाँ

हज़रत अब्दुल्ला बिन मसऊद और हज़रत अली तथा हज़रत जुबैर बिन मुतअम का कथन है कि 'मिना' में एक रात हम ह० मु० सल्ल० के साथ थे और देखा कि चांद के दो टुकड़े हो गये। ह० मु० सल्ल० के एक अँगुली के इशारे (संकेत) से चांद दो टुकड़ा हो गया था। इसका प्रमाण ह० अब्दुल्ला बिन अब्बास अब्दुल्ला बिन उमर और अवस बिन मालिक ने भी दिया था। उनका कथन है कि चांद का एक टुकड़ा जबलहेरा 'पर्वत' के इस ओर और दूसरा टुकड़ा पर्वत के उस ओर हो गया था।

इसी तथ्य को अरब और शाम के आने वाले मुसाफ़िरों से पूछा गया

तो उन्होंने भी बतलाया कि हमने भी उस रात को चाँद के दो टुकड़े हुए देखा है।

इस ऐतिहासिक घटना के पश्चात् यहूद भी ह० मु० सल्ल० को नबी एवं खुदा का रसूल मानने लगे थे।

पेड़ों से आवाज़ आना

हज़रत अली के कथनानुसार "मैं एक बार ह० मु० सल्ल० के साथ मक्का में निकला। मैंने देखा—जो भी पहाड़ और दरख्त (पेड़) सामने आता है, उससे अस्लामो अलैकुम या रसूलल्लाह की आवाज़ आती है, यह आवाज़ मैं भली भाँति सुन रहा था।"

पहाड़ का हिलना

एक दिन ह० मु० सल्ल० तथा ह० अबू बकर, ह० उमर तथा ह० उस्मान एक पहाड़ पर चढ़ रहे थे कि पहाड़ हिलने लगा। ह० मु० सल्ल० ने पहाड़ को अपने पाँव से ठोकर मार कर कहा, "रुक जा, तेरी पुश्त (पीठ) पर पैगम्बर सिद्दीक और शहीद हैं।" पहाड़ का हिलना रुक गया। सम्भवतः यह पर्वत उहद या हिरा था। (बुखारी मुस्लिम)

बुतों का गिरना

फ़तह मक्का के बाद ह० मु० सल्ल० ने काबा शरीफ़ में प्रवेश किया। आपके हाथ में एक छड़ी थी और आप कह रहे थे, "हक़ आ गया है और बातिल मिट गया" (जा अल हक्को वजहकल बातिलो इन्नल बातिला काना जहूका)। आप छड़ी से जिस बुत की ओर संकेत या इशारा करते, वह बुत बिना छुए ही ज़मीन पर गिर जाता था। इसी प्रकार सभी तीन सौ साठ बुत गिर गये। इसके पश्चात् आपने काबा को इबादतगाह बनाया जो पूर्ण रूप से पवित्र हो गया था।

(बुखारी मुस्लिम)

अंगूर के गुच्छे का चलना

ह० मु० सल्ल० के पास एक बद्दू आया। उसने कहा कि हम कैसे मान लें कि आप नबी हैं। आपने कहा कि अगर मैं इस अंगूर के गुच्छे को अपने

पास बुलाऊँ तो तुम मेरी नबूवत मानोगे, उसने कहा हां, मैं मानूंगा। आपने उसे बुलाया गुच्छा जिसकी ओर इशारा किया वह तुरन्त पेड़ से अलग होकर 'आप' के पास चला आया और आपकी आज्ञा से पुनः वापस चला गया, यह देखकर बद्दू मुसलमा हो गया और ईमान लाया।

(बु० मस्लिम)

पेड़ से कलमा पढ़ाना

ह० मु० सल्ल० सफ़र में थे, एक बद्दू के कहने पर आपने उसे कलमा पढ़ाया तो उस बद्दू ने कहा कि इसकी गवाही कौन देगा, कि सफ़र में आपने मुझे कलमा पढ़ाया है, हज़रत मु० सल्ल० ने एक पेड़ की ओर इशारा कर के उसे बुलाया, वह पेड़, दौड़ता हुआ आया, आपने तीन बार उस पेड़ से कलमा पढ़ाया, फ़िर वह आप की आज्ञा से अपनी जगह वापस चला गया। बद्दू ने कहा मैं अब अपने मकान जाता हूं, अगर मेरे लड़कों ने इस्लाम धर्म कबूल कर लिया तो सबको लाकर कलमा पढ़वाता हूं, नहीं तो मैं आजीवन आप के साथ रह कर जीवन व्यतीत कर दूंगा।

(बुख़ारी मुस्लि)

क़ुरान शरीफ़ और उसकी प्रमुख विशेषताएँ

अध्याय ५

कुरान शरीफ़ और उसकी प्रमुख विशेषताएँ

कुरान का स्वरूप

ह० मु० सल्ल० के स्वर्गवास से पहले पूरा कुरान लिपिबद्ध हो चुका था, और बहुत से मुसलमानों ने उसे ज़बानी याद कर लिया था। इस ग्रंथ की श्रेष्ठता को स्पष्ट करते हुए स्वयं ह० मु० सल्ल० ने कहा था, "यह अल्लाह की ओर से उतरी है तथा इसके प्रत्येक शब्द अल्लाह की ओर से अवतरित हुए हैं।"

इस प्रकार कुरान शरीफ कोई साधारण किताब नहीं है, यह एक ऐसा अद्वितीय ग्रंथ है जिसकी वर्णन-शैली तथा विषय सामग्री अन्य पुस्तकों से भिन्न है, इस किताब को समझने के लिए इसका गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करना नितांत आवश्यक है।

यह किताब मनुष्य को सीधा और सच्चा मार्ग दिखाने के लिए उतारी गयी है। खुदा ने मनुष्य को पृथ्वी पर एक विशेष उद्देश्य की पूर्ति हेतु बनाया है, सीधा मार्ग दिखाने के लिए समय-समय पर नबियों पर अपनी विशेष किताबें उतारीं तथा अपने बन्दों को स्वतन्त्रता प्रदान करके उसके सभी कार्यों का अवलोकन भी करता है, उसकी सभी गति-विधियों को देखता रहता है।

इस प्रकार मनुष्य प्रत्येक पल ईश्वर की कड़ी परीक्षा के सामने से गुज़रता रहता है। जिसका आभास प्राय: मनुष्यों को नहीं हो पाता, सद्मार्ग पर चलने वालों का सांसारिक जीवन तो सुन्दर होगा ही साथ ही आख़िरत के दिन भी उन्हें आनन्द की पूर्ति होगी।

ईश्वर द्वारा भेजे गये पैगम्बर प्रत्येक युग में तथा प्रत्येक जाति में उत्पन्न हुए हैं, सभी नबियों की शिक्षा एक ही प्रकार की रही है, सभी ने ईश्वर की

बन्दगी का मार्ग दिखाया और सत्य की ओर बुलाया। परन्तु कुछ लोग स्वयं गुमराह होकर अन्य लोगों को भी पथभ्रष्ट करने लगे। तब अन्त में अल्लाह ने हज़रत मु० सल्ल० को उसी काम के लिए अपना 'रसूल' बना कर सातवीं शताब्दी में अरब देश में पैदा किया तथा उन्हें आदेश दिया कि वह सत्य एवं सद्मार्ग की ओर लोगों को बुलाए तथा जनसमूह को संगठित करके एक ऐसा गरोह बनाए जो स्वयं और दूसरों को सत्य के मार्ग पर चलने का आमन्त्रण प्रदान करे और सांसारिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयत्न करें। वास्तव में कुरान शरीफ़ इसी आमंत्रण और मार्ग दर्शन की किताब है, जो अल्लाह ने हज़रत मु० सल्ल० पर उतारी है, जिसका पालन आजीवन करते हुए, आपने समस्त मानव जाति को एकेश्वरवाद का संदेश दिया और कुरान शरीफ़ के महत्व को प्रतिष्ठित किया।

अवतरण का स्वरूप

खुदा ने ह० मु० सल्ल० को जब नबूवत प्रदान की और आपको इस कार्य पर नियुक्त किया कि आप लोगों को सच्चे धर्म और सत्य मार्ग की ओर बुलाएं। इस महान कार्य का आरम्भ अपनी बस्ती से आरम्भ करें।

इस प्रकार 'कुरान' आवश्यकतानुसार थोड़ा-थोड़ा करके विभिन्न अवसरों पर उतरा है जो तत्कालीन प्रचलित अरबी भाषा हुआ करती थी। धर्म प्रचार के कारण ह० मु० सल्ल० को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, इसी कारण आपने हब्शा एवं मदीना की ओर प्रस्थान किया, परन्तु इस अवधि में भी कुरान का अवतरण होता रहा, तथा बहुत से लोग मुसलमान हो गये तथा इस्लामी राज्य की स्थापना भी हुई।

ह० मु० सल्ल० के नेतृत्व में चलाया गया धर्म आन्दोलन सफल हुआ जिसका पथ-प्रदर्शन कुरान शरीफ़ के माध्यम से स्वयं अल्लाह ने किया था, जिसमें तौहीद (एकेश्वरवाद) के साथ-साथ समस्त महत्वपूर्ण विषयों का समावेश था, प्रत्येक सूर : का अर्थ भिन्न-भिन्न हुआ करता था, परन्तु सब के गुण समान थे।

संकलन का स्वरूप

कुरान शरीफ की सूरतों का अवतरण जिस क्रम से हुआ है उन्हें उस क्रम से संकलित और संग्रहीत नहीं किया गया। ह० मु० सल्ल० ने खुदा की मर्ज़ी

एवं आदेशों के अनुसार कुरान शरीफ को क्रमबद्ध किया तथा एक श्रेष्ठ पुस्तक के लिए जो उचित था, उसी के अनुरूप आपने आदेश दिया कि अमुक सूर : को पहले और अमुक सूर : को बाद में रखा जाय।

शनैः शनैः जब सम्पूर्ण कुरान उतर चुका तो ह० मु० सल्ल० ने इसे वास्तविक रूप प्रदान कर इसे क्रमबद्ध और संकलित करने का आदेश दे दिया, तथा जिस क्रम में आज हमारे सामने मौजूद है, यह ह० मु० सल्ल० के आदेशानुसार लिपिबद्ध एवं संकलित किया जा चुका था।

कुरान की प्रामाणिकता

कुरान शरीफ़ सर्वप्रथम ख़जूर के पत्तों पर लिखा गया, इसके बाद हड्डियों और झिल्लियों पर भी लिखा गया था, परन्तु सच्चे मुसलमानों में इस दीन के प्रति इतना प्रेम हुआ कि कुरान ईमान वालों के सीने में नक्श होता गया। कुछ लोग कुरान को जुबानी याद कर चुके थे परन्तु ह० अबूबक्र के ज़माने में एक लड़ाई हुई जिसमें बहुत से मुसलमान शहीद हो गये जिसमें कुछ हाफ़िज़ कुरान भी थे तत्पश्चात् हज़रत उमर रजि० ने यह विचार प्रकट किया कि सम्पूर्ण कुरान की आयतों को एकत्र करके उन्हें जिल्दबद्ध किया जाय। इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए तत्कालीन नेक एवं परहेज़गार ज्ञानी व्यक्ति की तलाश हुई।

हज़रत अबूबक्र रजि० ने इस कार्य के लिए हज़रत ज़ैद बिन साबित अन्सारी को नियुक्त किया, हज़रत ज़ैद बिन साबित अन्सारी ह० मु० सल्ल० के विशेष कातिब रह चुके थे।

हज़रत अन्सारी इस असाधारण कार्य को सम्पन्न करने हेतु पूरी निष्ठा एवं लगन के साथ तन-मन से तत्पर हो गये। इस कार्य में आपके साथ कुछ अन्य सहाबी (सहयोगी) भी थे जो बड़ी तन्मयता एवं लगन से सम्पूर्ण खोज का कार्य करते और गवाहों से पूर्णतया सन्तुष्ट हो जाने के बाद हीं उसे लिपिबद्ध किया करते थे।

कुरान शरीफ की एक प्रति जब पूरी तरह तैयार हुई तो उसे हज़रत अबूबक्र रजि० के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। इस सुखद कार्य के लिए उन्होंने खुदा का शुक्र अदा किया।

इसके पश्चात् यह प्रति ह० अबूबक्र के उत्तराधिकारी के रूप में ह० उमर रजि० के पास रही, तत्पश्चात् ह० उमर की बेटी ह० हफ़सा के पास यह प्रति सुरक्षित रख दी गयी थी। तब तक असंख्य लोग इसी रूप में कुरान शरीफ को कन्ठस्थ (ज़बानी याद) कर चुके थे। इसके पश्चात् खलीफ़ा हज़रत उस्मान गनी रजि० ने भाषा एवं देश काल के उच्चारण के विभेद के कारण इस कुरान की कई प्रतियों को तैयार कराया, उसकी एक-एक प्रति मिश्र, बसरा, शाम, यमन तथा बहरैन के गवर्नरों के पास भेजा तथा इसी के अनुरूप कुरान शरीफ़ का पाठ करने का अनुरोध प्रकट किया। हज़रत उस्मान गनी रजि० की भेजीं हुई प्रतियाँ मक्का मदीना, दमिश्क और मराकश में आज भी मौजूद (विद्यमान) हैं। तथा आज जो कुरान हमारे बीच उपलब्ध हैं, वह उन्हीं मूल प्रतियों की प्रतिलिपियाँ हैं।

साहित्य एवं वर्णन-शैली

कुरान शरीफ की वर्णन-शैली एवं साहित्य अद्वितीय है, किसी अन्य पुस्तक में ऐसी श्रेष्ठ एवं अनुपम वर्णन-शैली का पाया जाना कठिन एवं दुर्लभ सा प्रतीत होता है। कुरान को समझने के लिए मनुष्य को स्वच्छंद भाव से इसके तथ्य एवं मार्मिक गुणों को समझना होगा। इससे स्पष्ट हो जाता है कि कुरान शरीफ़ अपनी वर्णन शैली और साहित्य की दृष्टि से एक अनूठा एवं महानतम ग्रंथ है।

शैली के आधार पर कुरान इसकी वाणी (कलाम) को दो भागों में विभक्त कर सकते हैं :—

१—प्रथम, तो यह कि किसी विषय पर प्रकाश डालते हुए 'बात' को सरल ढंग से स्पष्ट किया जाये।

२—दूसरे यह कि इस वाणी द्वारा मनुष्य अपने अन्त:करण के विकारों को दूर करके अपने 'निर्मल स्वरूप' का दर्शन करता है।

कुरान शरीफ़ के अन्तर्गत सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक विषयों पर भी प्रकाश डाला गया है। कुरान में ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख भी हुआ है परन्तु उसके लिए विशिष्ट वर्णन-शैली का प्रयोग किया गया है।

कुरान ११४ भागों में विभक्त है, जो 'सूरा' कहलाते हैं, प्रत्येक सूरा कुरान का एक अध्याय सा प्रतीत होता है तथा कुरान की सूरतों की केन्द्रीय कल्पना

का अनुभव हो जाने पर सम्पूर्ण सूरा एक अखण्ड रूप में दिखाई देने लगती है। प्रत्येक सूरा का उसकी पिछली और अगली सूरतों से गहरा सबन्ध होता है।

वर्णन-शैली के आधार पर कुरान के अन्तर्गत जो साहित्य समाहित है, उसमें स्वर-प्रवाह एवं शब्दों का मधुर विन्यास समाविष्ट है। इस अद्वितीय ग्रन्थ के मूल साहित्य का आनन्द प्राप्त करने के लिए अरबी भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है, इतिहास साक्षी है कि जिसने भी 'कुरान' को सच्चे मन से सुना वह प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका।

प्रमाणित पुस्तकों के अनुसार ह० उमर जो कि ह० मु० सल्ल० का सिर काटने के लिए खुली तलवार लेकर घर से निकले थे, वह ह० उमर कुरान शरीफ को सुन लेने के पश्चात् सच्चे मन से ह० मु० सल्ल० के अनुयायी बन गये।

तुफ़ैल दौसी जिन्हें मक्के के लोगों ने यह ताक़ीदी (चेतावनी) दे रखी थी कि ह० मु० सल्ल० की बातें न सुनना "वे कुरान सुनकर पुकार उठे खुदा की कसम इससे अच्छा कलाम मैंने कभी नहीं सुना है।"

उतबा बिन रबिया तथा कुरैश सरदार वलीद बिन मुगीरा ने जब कुरान का कुछ हिस्सा सुना तो वह बोल पड़े, 'खुदा की कसम, इस कलाम में एक अद्भुत माधुर्य है।'

इस प्रकार अनेक साक्ष्यों द्वारा स्पष्ट हो जाता है कि कुरान शरीफ की वर्णन-शैली एवं साहित्य में एक विशेष प्रकार का सौन्दर्य है जो आत्मा की शुद्धता और मस्तिष्क के लिए अत्यन्त लाभदायक है।

कुरान के दार्शनिक सिद्धान्त

कुरान शरीफ़ के अन्तर्गत जीवन के समस्त रहस्यों और गूढ़ अर्थों पर भी समुचित प्रकाश डाला गया है, तथा जीवन के वास्तविक लक्ष्यों को साकार करने में मनुष्यों के लिए दिव्य दृष्टि का ज्ञान प्रदान किया गया है। मनुष्य का सच्चा स्वरूप क्या होना चाहिए तथा सृष्टि की संरचना क्यों हुई, इसमें मनुष्य का क्या स्थान होना चाहिए ? इन सभी महत्वपूर्ण एवं दार्शनिक प्रश्नों का उत्तर कुरान शरीफ़ के अन्तर्गत देखा जा सकता

है। कुरान शरीफ़ का दार्शनिक सिद्धान्त विशेष रूप से सम्पूर्ण जगत को सुसंगठित ज्ञान प्रदान करता है, जिसमें मनुष्य की सफलता एवं विफलता का अर्थ ज्ञात होता है।

कुरान शरीफ़ के अनुसार "मनुष्यों को सत्य की खोज में पैगम्बरों एवं नबियों की बातें भी निष्पक्ष भाव से जान लेना नितांत आवश्यक है, क्योंकि उनका ज्ञान स्वयं ईश्वर प्रदत्त होता है, क्योंकि जिस वास्तविकता की सूचना इन नबियों ने हमें प्रदान की है, वह सभी लक्षण प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में आज हमारे सामने हैं।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि नबियों एवं पैगम्बरों की वाणी में सत्यता है, तथा जगत की सम्पूर्ण समस्याओं को समाधान उन महापुरुषों ने हमारे सामने प्रस्तुत किया है, उन पर मौलिक रूप से कोई आक्षेप नहीं किया जा सकता हैं।

कुरान, एक ईश्वरीय ग्रन्थ

इस्लाम धर्म के अनुसार कुरान, "अल्लाह की किताब" हैं। इस पर विचार करना अतिआवश्यक है। इस महत्वपूर्ण विषय पर यदि गम्भीरता पूर्वक विचार करें तो स्पष्ट होता है कि कुरान में लिखी सभी बातें ईश्वर की ओर (तरफ) से कही जा रही है, अथवा इसे आदेश देते हुए दर्शाया गया है।

अल्लाह का हवाला देते हुए स्थान-स्थान पर निर्देशात्मक 'वाक्य' दिखाई पड़ते हैं। जिससे प्रतीत होता है कि ये बातें स्वयं अल्लाह द्वारा कहीं जा रही है, तथा पथ प्रदर्शन हेतु प्रभु (खुदा) ने स्वयं अपने बन्दों एवं नबीए आज़म ह० मु० सल्ल० पर उतारा है।

कुरान के विषय में स्वयं ह० मु० सल्ल० ने बयान दिया है कि "यह खुदा का कलाम है"। (आप) एक सच्चे एवं ईमानदार मोमिन थे। जीवन में कभी आपके मुख से कोई झूठ बात नहीं निकली थी, इसलिए सभी लोग आपके जीवनकाल में ही आपको सादिक (सत्यवान) कहते थे। जो व्यक्ति अमीन एवं सादिक की पदवी धारण कर ले उस पर विश्वास करना अनिवार्य हो जाता है तथा जो व्यक्ति कभी भी किसी मामले में झूठ न बोला हो न झूठी बातें कहीं हो वह कुरान के विषय में झूठ क्यों बोलेगा और लगातार ऐसा झूठ जो २३ वर्षों तक झूठ बोला गया हो। कदापि नहीं ऐसा सादिक

पुरुष जो संसार में नबी बन कर आये जिसकी नबूवत सिद्ध हो चुकी हो, जिसके कालम को सुनते ही दुश्मन, बोल पड़े कि "आज तक ऐसा कलाम हमने नहीं सुना था"। और ईमान भी लाते थे। फिर हम कैसे मान लें कि ह० मु० सल्ल० अल्लाह से सम्बन्ध लगाकर इतना बड़ा झूठ बोल सकते हैं जो व्यक्ति किसी मामले में कभी भी प्रत्यक्ष एवं परोक्ष में झूठ न बोला हो। वह क्या अल्लाह के नाम पर बोल सकता है? और इस प्रकार यह भी कह सकता है कि अमुक कलाम अल्लाह ने मुझ पर उतारा हैं? जबकि ऐसा वास्तविक न हो, और क्या ईश्वर इतने बड़े झूठ को कभी सफलता प्रदान करेगा? इस आशय की पुष्टि स्वयं कुरान में स्पष्ट है। (कु० सूरा : ६६ आयत ४४, ४५, ४६, ४७, ४८ और ४९)

ह० मु० सल्ल० का अधिक समय पवित्र एवं शुभ कार्यों में व्यतीत हुआ, आप कभी बुराई के निकट नहीं गये तथा प्रत्येक अवस्था में अल्लाह के आगे झुके रहते थे, उसे याद करते और उस पाक बेनयाज़ से डरते रहते थे। उक्त सभी बातें कपोल कल्पित नहीं वरन् इतिहास इसका साक्षी हैं। यदि हम गम्भीरतापूर्बक विचार करें तो निःसन्देह कह सकते हैं कि ऐसा व्यक्ति जो आजीवन इबादत करता रहा हो, जिसकी शिक्षा में साम्प्रादायिकता और भेद-भाव की झलक भी नहीं दिखाई पड़ती वह व्यक्ति कदापि झूठ नहीं बोल सकता। जिस नबी ने सत्य के लिए जीवन का कठिन मार्ग अपनाया और अन्तिम क्षण तक सच्चाई के खिलाफ़ लड़ा हो और सम्पूर्ण जीवन को सत्य-धर्म एवं जन-सेवा के कार्यों में लगाया हो तथा अपने लिए या कि अपनी औलाद के लिए कोई वैभव की वस्तु और जायदाद नहीं बनाई हो। वह व्यक्ति झूठ बोलेगा, यह सोचना भी पाप है।

ह० मु० सल्ल० की जीवनी को देखें कि संसार से जब विदा हुए तो इस हाल में कि घर में तेल तक न था कि चिराग़ जलाया जा सके। जो व्यक्ति सदैव यह कामना करें कि खुदा एक दिन मुझे खाना दे, और एक दिन मुझे भूखा रखे जिससे 'मैं खुदा के सामने गिड़गिड़ा सकूँ, और तृप्त होने की अवस्था में खुदा की प्रसंशा कर सकूं जिसके हृदय की पवित्रताका यह हाल हो तो वह कदापि झूठ नहीं बोल सकता। यदि हम 'उन्हें' झूठा नहीं कह सकते तो निश्चय ही वह अल्लाह के रसूल थे और रसूल का यह स्वयं कथन है कि "कुरान अल्लाह की किताब है।"

ह० मु० सल्ल० लगभग ४० वर्ष तक सत्यनिष्ठ एवं सुशील तथा शान्तिप्रिय व्यक्ति के रूप में जाने पहचाने जाते रहे, और इस अवस्था तक कोई ऐसी बात या घटना नहीं हुई जिससे यह आभास भी हो सके कि ह० मु० सल्ल० किसी बहुत बड़े "दावे" की तैयारी में जुटे हुए हैं। ४० वर्ष की आयु प्राप्त होने पर सहसा आपने संसार के समक्ष (सामने) अपने आपको एक रसूल के रूप में प्रस्तुत किया और एक ऐसा कलाम दुनिया के सामने प्रस्तुत किया जो कभी किसी ने न देखा और न सुना था। वह कलाम कुरान के रूप में आज भी ईमान वालों के सीने में नक्श है।

यह असम्भव हैं कि कोई निरक्षर एवं अशिक्षित हो तथा दर्शन, भूगोल, इतिहास और राजनीति के अध्ययन से पूर्णतया वंचित हो तथा न तो वह दर्शन शास्त्र और अर्थशास्त्र का ज्ञाता हो —वह संसार को एक ऐसा ग्रंथ प्रदान करे जो प्रत्येक दृष्टि से पूर्ण ही नहीं वरन् अपने आप में एक अनूठा-अनुपम एवं अद्वितीय ग्रन्थ है।

कुरान और उसके रसूल "ह० मु० सल्ल०" के आगमन की शुभ कामना एवं सूचना पिछली आसमानी किताबों तौरेत ज़बूर और इन्जील में दी जा चुकी थी, तथा जिन गुणों का उल्लेख इन पिछले ग्रन्थों में हुआ था, वह पूर्ण रूप से कुरान में पाये जाते हैं। तौरेत ज़बूर इन्जील ग्रन्थों में आज भी ऐसे वाक्य पाये जाते हैं जिनसे कुरान और ह० मु० सल्ल० के आगमन की पुष्टि होती है। कुरान की दी हुई सभी भविष्य वाणी पूरी हुई हैं जिसका साक्षी स्वयं इतिहास है और भविष्य में भी कुछ पूर्व सूचनाओं के सत्य होने की पूर्ण संभावना है जिसके लक्षण दिखाई पड़ने लगे हैं।

हम निः संकोच कह सकते हैं कि ऐसी सूचना केवल अल्लाह ही दे सकता है जिसके ज्ञान में आदि और अन्त दोनों ही समान रूप में विद्यमान होता है तथा परोक्षा का ज्ञान खुदा (ब्रह्मा) के अतिरिक्त किसी और को नहीं हो सकता।

अतः यह मानना स्वाभाविक है, कि 'कुरान' अल्लाह का कलाम है : यह किसी मनुष्य की रचना नहीं हो सकती, जिसे ईश्वरीय ग्रन्थ कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं हैं।

कुरान की महत्वपूर्ण बातें

कुरान की शिक्षा अत्यन्त स्पष्ट और व्यापक है। मनुष्यों को एकेश्वर-वाद एक अल्लाह की ओर बुलाता है। केवल उसी की बन्दगी और इबादत की शिक्षा प्रदान करता है जिसने हमें पैदा किया और वही सारे संसार का मालिक और ख़ालिक है। जीवन की प्रत्येक अवस्था में उसी एक परमेश्वर की उपासना करो जिससे दोनों लोक में भलाई प्राप्त हो सके। तौहीद (एकेश्वरवाद) के विषय में विशेष चेतावनी दी गयी है तथा बहुदेववाद का कड़ा विरोध किया गया है, और आख़िरत में उसके लिए अत्यन्त कष्ट मिलने की संभावना व्यक्त की गयी है। प्रत्येक वर्ग एवं प्रत्येक धर्म के लोग इस ग्रन्थ का लाभ उठा सकते हैं क्योंकि कुरान के अनुसार सब बन्दे एक ही खुदा के पैदा किये हुए हैं।

इसके अतिरिक्त कुरान में समस्त ज्ञान और सतकर्म की शिक्षा को दर्शाया गया है जो पिछले आसमानी ग्रन्थों में भी पायी जाती थी और वही बातें कुरान के अनुरूप मानव कल्याण के लिए आज भी अभीष्ट हैं।

कुरान और उसकी प्रमुख विशेषताएं

कुरान शरीफ़ अन्य समस्त ग्रन्थों की अपेक्षा अपने अन्तर्गत कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ भी रखता है, इसकी स्पष्टोक्ति है कि "मैं अन्तिम ईश ग्रन्थ हुँ"। तथा ह० मु० सल्ल० आख़िरी पैग़म्बर एवं खुदा के रसूल हैं।" मेरा सम्बोधन अखिल विश्व है। यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के अधिशासक का निर्णय एवं घोषणा है। अतएव यही कारण है कि उसने विशेष संरक्षण में इस बात का प्रबन्ध कर दिया है कि अन्य ग्रन्थों के विपरीत न मैं कभी गुम हो सकता हूँ और न मुझे किसी प्रकार की कमी-बेशी हो सकती है और न मैं कभी निर्वतित किया जा सकता हूँ।

कुरान के अनुसार "निःसन्देह हमने दुनिया की हर क़ौम में एक पैग़म्बर भेजा, जिसने बताया कि ईश्वर की उपासना करो और दुष्ट वासनाओं के भुलावे में न आओ, (कु० सूरा ३५ आयत २५) तथा संसार की कोई क़ौम ऐसी नहीं है जिसमें कुकर्मों के परिणाम से डराने वाला ईश्वर का कोई पैगम्बर न पैदा हुआ हो।

(कु० सूर: ४३ आ० ५)

कुरान शरीफ़ में कहीं भी ऐसा उल्लेख नहीं है कि वह मनुष्य जाति के

लिए कोई नया पैगाम अर्थात संदेश लेकर आया है। कुरान में इस तथ्य को बार-बार दुहराया गया है कि धर्म तो शास्वत सत्य है। वह आदि और अन्त है। उसमें आये दोषों को ही दूर करने के लिए उसका अवतरण हुआ है जिस प्रकार लोगों के पथ प्रदर्शन के लिए खुदा ने तौरात और इन्जील प्रकट की थीं। तथा धार्मिक अंधविश्वास एवं रूढ़ियों के तिमिर में अरब जाति व्यभिचारिणी बन गयी थी। विभिन्न देवताओं के मानने के कारण अरब जाति की एकता भंग हो चुकी थी, दिन प्रतिदिन के संघर्षो के कारण अरब-समाज की गति शिथिल पड़ गयी थी, ऐसे समय में कुरान का अवरतण हुआ जिसकी कुछ प्रमुख विशेषताएं उल्लेखनीय हैं :—

१—धार्मिक विशेषता

कुरानशरीफ़ की सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक विशेषता यह है कि "वह सम्पूर्ण विश्व को भ्रातृत्व का संदेश देता है, तथा कुरान की निष्पक्ष दृष्टि में सभी मानव ईश-पुत्र हैं। कुरान का कथन है कि योनि-वर्ग वर्ण या जाति मनुष्यों को विभक्त नहीं कर सकती। कुरान के अनुसार समस्त मानव जाति एक ही योनि द्वारा संसार में प्रविष्ट हुए, सबने एक ही वसुन्धरा का अन्न खाया, जल और वायु पर सब का समान अधिकार है, सूर्य और चन्द्रमा सबके लिए समान उद्भासित होते हैं। फिर ऐसा कौन सा आधार है जिसके कारण मनुष्य-मनुष्य में विभेद उत्पन्न हो सकता है।

कुरान के मतानुसार सभी मनुष्यों का लक्ष्य एक है। इससे पहले सम्पूर्ण अरब में अन्धविश्वास का कोहरा जमा हुआ था। यहूदी, ईसाई, जरभस्ती धर्म के प्रवर्तकों ने विभिन्न कपोल-कल्पित धर्मो को प्रोत्साहन दिया, जिसके कारण अनेकेश्वरवाद को अधिक बल मिला। ह० मु० सल्ल० ने कुरान के माध्यम से इन सभी अरबों को श्रेष्ठ पुरुष बनाने का घोर प्रयत्न किया, अपने सद्प्रयत्नों से ही 'आपने' सम्पूर्ण अरब की दशा बदली, एकेश्वरवाद को प्रमुखता देकर लोगों को उपदेश दिया कि 'एक परमात्मा' की उपासना करो। उसे अल्लाह या रहमान के नाम से पुकारो तथा एक ही 'पालनहार' को जानों। उसके सभी नाम अच्छें हैं, अर्थात् शुभ और कल्याणकारी हैं।

इस प्रकार इस धर्म से मानव कल्याण और विश्वबन्धुत्व की भावना मुखरित होकर सम्पूर्ण संसार में फैल गयी।

आध्यात्मिक विशेषता

कुरान का आध्यात्मिक स्वरूप विश्वबन्धुत्व की भावना पर आधारित है, तथा सम्पूर्ण जगत के मानव को एक ही ज़ाति के अन्तर्गत रखा गया है, वह जाति हिन्दू-मुस्लिम सिक्ख ईसाई आदि न होकर केवल एक ही जाति अर्थात 'मानव जाति' है। कुरान के अनुसार—

"इन्न हाज़िही उम्मतुकुम उम्मतव्वाहितदत—त्वं—अना रब्बुकुम फ़अबुदुनि— (कु० २१–६२)

अर्थात "बेशक तुम सभी इन्सान एक जमाअत के हो और एक ही ईश्वर तुम्हारा पालन पोषण करता है, इसलिए सब लोग उसी एक ईश्वर की इबादत या उपासना करो।

सद्भाव, सद्मार्ग तथा शान्ति प्रियता ही कुरान की प्रमुख विशेषता हैं, एव अध्यात्मवाद के अन्तर्गत कुछ विशिष्ट शिक्षा कुरान ने मानव जाति को प्रदान की है।

कुरान के अनुसार जो व्यक्ति किसी अन्य की उन्नति, समृद्धि को देखकर द्वेष को अपने अन्दर स्थान नहीं देता, अवैध साधनों से जो धन नहीं अर्जित करता; दान देकर जिसका हृदय यह नहीं कहता कि मैंने दान दिया है, अपितु खुदा का शुक्र गुज़ार होता है। सादगी में ही जो वैभव के दर्शन पाता है एवं निःस्वार्थ त्याग को भावना के साथ जो 'संतोषी' होता है, वही ईश्वर का प्रिय बन्दा है। इसके अतिरिक्त विश्वबन्धुत्व विश्वभ्रातृता, की भावना को साकार रूप देने के लिए ही कुरान ने आध्यात्मिक आधार तैयार किया है जिसके अनुरूप चलते हुए मनुष्य मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है अर्थात संसार में एवं आख़िरत के दिन भी वह सुखी रहेगा और अपने आराध्य परमपरमेश्वर से मिल पायेगा, तथा माया-मोह के जाल से निकल कर वास्तविक सत्य की परख भी कर पायेगा।

इस प्रकार कुरान का अध्यात्मवाद बड़ा ही सरल एवं सारगर्भित है।

दार्शनिक विशेषता

कुरान की दार्शनिक विशेषता भी असाधारण है, वह मनुष्यों को सद्-मार्ग पर चलने तथा सत्कार्य करने की शिक्षा प्रदान करता है। उन्हें साहस और आत्मबल प्रदान करता है, जिसके द्वारा वे अल्लाह के मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं का मुक़ाबला कर सकते हैं।

एकेश्वरवाद, खुदा के गुण, आख़िरत, ईश-भय, धैर्य आदि विषयों की पुनरावृत्ति कुरान में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ी हैं, धर्म पर अज्ञानता की परछाई, एवं असत्य के आवरण को कुरान के माध्यम से दूर किया गया है। अंधविश्वास का फैला हुआ प्रकोप, कुरान की दार्शनिकता के अन्तर्गत लुप्त सा होता गया, विशेष रूप से निम्न बातों पर कुरान विशेष बल देता है—

१—नमाज़, २—रोज़ा, ३—हज, ४—ज़कात, ५—खैरात।

इन पाँच बातों को पूर्ण करने से मनुष्य संयमी एवं सुशील बन जाता है। इसके अतिरिक्त कुरान में सृष्टि रचना, प्रलय, रूह (आत्मा) और ब्रह्म (खुदा) आदि दार्शनिक विषयों पर मौलिक प्रकाश डाला गया है तथा कुरान में वास्तविकता की ओर ध्यान देकर सूक्ष्म संकेतों से सत्य की खोज एवं परम-परमेश्वर की महिमा को साक्षात् दर्शाया गया है जिसकी दार्शनिकता मौलिक सिद्धान्तों पर आधारित है।

नैतिक विशेषता

कुरान में व्यापक सत्यता और नैतिकता के मौलिक एवं व्यापक सिद्धान्तों का वर्णन प्रत्येक सूरा: (अध्याय) में देखा जा सकता है। सत्य एवं असत्य के संघर्ष पर प्रत्यक्ष रूप से प्रकाश डाला गया है तथा विश्व-बन्धुत्व की भावना को स्पष्ट किया गया है।

ईश्वर निराकार और सर्वव्यापक है, इस शास्वत सत्य को हम कुरान की प्रमुख नैतिकता के अन्तर्गत देख सकते हैं, रूढ़ियों और रीति-रिवाज़ों की परिधि से निकलने का प्रयत्न बड़ी सुगमता से किया गया है। अनेकेश्वरवाद और बहुदेववाद की प्रथा का विरोध कर विश्व-भ्रातृत्व, सच्चरित्रता और पवित्रता का संदेश दिया गया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कुरान के माध्यम से समस्त मानव जाति को नैतिकता की चरम सीमा पर पहुँचने का मार्ग दर्शाया गया है जो संसार के सभी मानव जाति के लिए कल्याणकारी है।

सामाजिक विशेषता

ह० मु० सल्लं० से पहले सम्पूर्ण अरब में घोर पाप और अत्याचार व्याप्त था, अंधविश्वास तथा बहुदेववाद की प्रथा चरम सीमा तक पहुंच गयी थी, केवल काबे में ही ३६० प्रस्तर मूर्तियाँ थीं, एवं काबे की परिक्रमा नग्नावस्था में करने की प्रथा प्रचलित थी। पशु बलि के साथ नर बलि का

भी उल्लेख मिलता है, कुरान ने इन कुरीतियों का दमन इस प्रकार किया कि आने वाली दूसरी कौम ने भी इसका स्वागत किया। अरब समाज की नारी घोर अनादर की पात्र थी, उसका गौरव पूर्ण रूप से मिट्टी में मिल चुका था। किसी अरब के लिए कन्या का पिता बनना लज्जास्पद समझा जाता था। इसीलिए कन्या को उत्पन्न होते ही दफ़ना दिया जाता था। वे कहते थे कि सबसे अच्छा दामाद कब्र है।

ह० मु० सल्ल० ने ऐसी कुप्रथा का अन्त किया जिससे समाज में नारी को बराबर का दर्जा प्रदान किया जा सका, वह कुरान की सामाजिक विशेषता का एक ज्वलन्त उदाहरण है। बहुपत्नी और बहुपति रखने की प्रथाएँ भी प्रचलित थीं। एक अरब महिला ने अपने जीवन काल में ४० पुरुषों से विवाह किया था, व्यभिचार और बेशर्मी की बात साधारण समझी जाती थी। ब्याज खाने, जुआ खेलने और मदिरापान की प्रथा भी साधारण मानी जाती थी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अन्धविश्वासों एवं रूढ़ियों के कारण एक प्रकार की अव्यवस्था उत्पन्न हो गयी थी, जो कुरान के आविर्भाव से दिन प्रति दिन समाप्त होने लगी, जिसमें ह० मु० सल्ल० का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

'आप' का मुख्य उद्देश्य सामाजिक उत्थान, ईश्वर की आराधना और लोक कल्याण की भावना को जनप्रिय बनाना था। सदाचार एवं भ्रातृ-भाव को धर्म का अटूट अंग बतलाकर ह० मु० सल्ल० ने जो आदर्श हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया, वह आज कुरान की प्रमुख सामाजिक विशेषता के रूप में विद्यमान है।

राजनैतिक विशेषता

कुरान की राजनैतिक विशेषता को जानने के लिए तत्कालीन प्रमुख बातों का जानना आवश्यक है :—

सत्य और असत्य का संघर्ष हुआ और सत्य के विरोधियों ने कुरान की आवाज़ को दबाना चाहा एवं ह० मु० सल्ल० की बातों पर ध्यान न देने का असफल प्रयास भी किया, तथा सम्पूर्ण इस्लामी मिशन का विरोध करके सत्य के अनुयायियों को हर प्रकार का कष्ट पहुंचाया, उन्हें घर-बार छोड़कर हब्शा और मदीना की ओर हिजरत (पलायन) पर बाध्य किया गया।

ह० मु० सल्ल० मदीना में ह० अबू अय्यूब अन्सारी, के घर पर कुछ दिनों तक रहे और वहीं आपने, मस्जिदे नबवी की बुनियाद रखी तथा सहायता देने वाले मदीनावासियों को अन्सार की संज्ञा प्रदान की गयी तथा मक्का से मदीना जाने वालों को मुहाजिर कहा गया, तत्पश्चात् सत्य का प्रचार प्रारम्भ हुआ और धर्म की मौलिकता का स्वरूप जनसाधारण को बतलाया गया।

इस प्रकार हिज़रत के नौ वर्ष बाद चारों ओर से प्रतिनिधि मण्डल मदीना आने लगे। कुरान के अन्तर्गत इस्लाम धर्म के महत्वपूर्ण आदर्श को देखकर लोग इसकी प्रशंसा करने लगे, इन्हीं आदर्शपूर्ण राजनैतिक सिद्धान्तों के आधार पर ही अन्ततः सत्य की विजय हुई और सप्पूर्ण अरब में कुरान की व्याख्या उत्कृष्ट होकर सम्पूर्ण संसार में फैल गयी। कुरान के अनुसार आठ-नौ वर्षो की इस लम्बी अवधि में कुरान के जो हिस्से अवतरित हुए हैं उनमें राजनैतिक विषयों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है।

आर्थिक विशेषता

ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि— तत्कालीन आर्थिक स्थिति अत्यधिक दयनीय थी। सम्पूर्ण अरब में कृषि को मर्यादा के विरुद्ध समझा जाता था, दास प्रथा प्रचलित थी जिसके अन्तर्गत कैदी पुरुषों एवं हरण की हुई स्त्रियों और बच्चों का क्रय-विक्रय होता था, ऊँट पालना और उसके क्रय-विक्रय को हैसियत के अनुरूप समझा जाता था। ख़जूर का विशेष महत्व था, और उसके वृक्ष बड़ी संख्या में लगाये जाते थे, रेगिस्तान के कारण समस्त अरब में ख़जूर की अच्छी नस्लें पायी जाती थीं।

ह० मु० सल्ल० कुरान के माध्यम से इन अरबवासियों को श्रेष्ठ पुरुष बनाने का घोर प्रयत्न करते रहे, तथा उन्हीं सद्प्रयत्नों के फलस्वरूप अरब की दशा बदली और वे आर्थिक रूप से आज आत्म-निर्भर हो गये हैं।

ऊँट, भेड़ (दुम्बा) के अतिरिक्त ज़ैतून के तेल का भी महत्व है जो अरब के प्रत्येक भाग में उपलब्ध थे।

इस प्रकार सोई हुई अव्यवस्थित जाति को सुसमृद्ध एवं आत्म निर्भर बनाने में कुरान का महत्वपूर्ण योगदान है।

क़ुलजम स्वरूप और इस्लाम धर्म, पारस्परिक अध्ययन

(उपास्य, नाम, प्रकृति, स्वरूप, गुण तथा कार्य)

अध्याय ६

कुलजम स्वरूप और इस्लाम धर्म, पारस्परिक अध्ययन

पारस्परिक अध्ययन के अन्तर्गत हमें मुख्यत: उपास्य, धाम, नाम, प्रकृति, स्वरूप तथा गुण-कार्य की विवेचना कुलजम स्वरूप के आधार पर करना है—

उपास्य

महामति प्राणनाथ ने अक्षरातीत परब्रह्म की उपासना की है। इस अक्षरातीत परब्रह्म को उन्होंने श्री कृष्ण नाम से संबोधित किया है। सामान्यत: हिन्दू धर्म में श्रीकृष्ण को महाविष्णु का सगुण अवतार माना जाता है। किन्तु महामति प्राणनाथ के कृष्ण सगुण-निर्गुण से परे अक्षरातीत हैं।

इस अक्षरातीत परब्रह्म को श्रीकृष्ण नाम से संबोधित किया गया है। उनके निम्नलिखित चौपाई से स्पष्ट है—

"निजनाम श्री कृष्ण जी अनादि अनादि अकरा अंक्षरातीत १२"

एवं,

परब्रह्म तो पूरन एक है, एतो अनेक परमेश्वर कहावे,
अनेक पन्थ सबद सब जुदे, और सब कोई सास्त्र बोलावें।

अर्थात् पूर्ण ब्रह्म, परमात्मा तो एक ही है, परन्तु अज्ञानतावश कुछ लोग अपने आप को ही परमेश्वर मानने लगे हैं, अनेकों पंथ प्रचलित होकर अपने-अपने वेद एवं शास्त्र की सार्थकता सिद्ध करने में लगे हुए हैं।

देते देखाई तत्व पाँचों, मिल रचियों ब्रह्मांड।
जिनसे उपजे से। कहुए नाहीं, आपन पोते पिंड।

पाँच तत्व सर्वव्यापी हैं जिनसे समस्त संसार की संरचना की गयी है। परन्तु ये पाँच तत्व मूलतया किसी से नहीं उत्पन्न हुए इनकी उपत्ति केवल शून्य से हुई है, जिसका कोई रंग-रूप एवं आकार नहीं हैं।

महामति प्राणनाथ कहते हैं—

कोई कहे ऐ ब्रह्म का आभा, आभा तो आपसी भासे।
तो ऐ आभाक्यों कहिए, जो होत है. झूठे तमासे।

अर्थात् वे कहते हैं कि ब्रह्म की समस्त संसार एक प्रतिच्छाया है तथा यही सत्य है, परन्तु संसार का कार्यभार तो असत्य के खेल पर आधारित है। फिर यह सत्य की छाया कैसे हो सकती हैं।

एक अन्य स्थान पर प्राणनाथ कहते हैं—

''महामत होसी सब जहिर, मिले अक्षरातीत भरतार।
''बैराट होसी नेहे चल उड़यों माया, मोह अहंकार।।

वे कहते हैं कि नश्वर जगत तथा निर्गुण ब्रह्म का वास्तविक प्रणेता जब मिल जायेगा तब सब माया मोह तथा दम्भ अहंकार का भेद खुल जायेगा। किन्तु सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड अक्षर ब्रह्म में विलीन होकर अमर हो जायेगा।

इस प्रकार उपरोक्त अवलोकन से स्पष्ट होता है कि महामति प्राणनाथ सब के मूल में श्रीकृष्ण को मानकर अक्षरातीत परब्रह्म के रूप में केवल उनकी ही उपासना करते हैं। उनके अनुसार सब का ईष्ट एक ही ब्रह्म है जो क्षर-अक्षर से परे अक्षरातीत परब्रह्म है तथा उसकी महिमा का वर्णन उन्होंने अपनी अद्वितीय पुस्तक कुलजम स्वरूप में अनेकों स्थान पर विस्तार-पूर्वक किया है। अपने परब्रह्मम में वे किसी को और भागीदार नहीं मानते। उनका ईष्ट अजर-अमर और सर्वव्यापी है एवं वही घट-घट में समाहित है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महामति प्राणनाथ ने पूर्ण रूप से एकेश्वरवाद पर अपना विश्वास रखते हुए समस्त मानव जाति को तौहीद का मार्ग दिखलाया है।

ब्रह्म का धाम

परम सत्ता की समस्त लीलाएँ परम धाम में ही सम्पन्न हुआ करती हैं

तथा साधक की साधना का लक्ष्य भी परमधाम से भी परे नहीं है। महामति प्राणनाथ श्रीकृष्ण के ब्रजभूमि एवं वृन्दावन से आगे; अक्षरातीत का परमधाम मानते हैं।

उनके अनुसार परब्रह्म सर्वव्यापी है, उसी ने सूरज-चाँद बनाया, आकाश में सुन्दर तारों का जाल बनाया। पाताल में अनेकों प्रकार के जीव-जन्तु एवं बहुमूल्य वस्तुओं का सृजन किया तथा समस्त सृष्टि का निर्माता होने के नाते सामान्य दृष्टि से सब को संचालित करता है और हर स्थान पर उसकी मौजूदगी अनिवार्य हुआ करती है।

प्राणनाथ के अनुसार परमधाम की कल्पना भी अद्‌भुत है–आकाशलोक में एक विशिष्ट स्थान है, जो पूर्णरूप से से सुसज्जित एवं नूर से मामूर अर्थात् प्रकाशमय है।

सुन्दर स्वर्णिम महल अनेकों प्रकार के अद्वितीय पेड़-पौधे तथा सरसब्ज बाग़ात जिसके चारों ओर बहती हुई बिशाल नहरें हैं जिसमें नाना प्रकार के स्वाद, गुण तथा रंग हैं।

प्रकृति का सम्पूर्ण मनोरम् दृश्य स्वर्ग लोक में देखने को मिलता है, जहां समस्त संसार का मालिक अपने पूर्ण वैभव के साथ विराजमान है। तथा वहां तक पहुंचने का साधन भी बताया है। जो व्यक्ति निस्वार्थभाव से उस परमात्मा की उपासना करता है उसे स्वर्गलोक में सादर बुलाया जायेगा, परन्तु यह सब उन व्यक्तियों के लिए एक प्रलोभन मात्र एक कल्पना है। वास्तविक रूप से तो समस्त संसार एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ही परमात्मा का धाम स्वरूप है। परन्तु मनुष्य अपनी साधना, लगन, तपस्या एवं सच्चाई के बल पर इसी संसार में अपने सत्कर्मो द्वारा स्वर्ग का फल भोग सकता है।

उपर्युक्त सम्पूर्ण तथ्यों का अवलोकन करने पर यह ज्ञात होता है कि ब्रह्म या ईश्वर या परमात्मा का कोई सुनिश्चित निवास स्थान नहीं है, वह सर्वव्यापी है और सब जगह विद्यमान है।

ब्रह्म के नाम

धार्मिक ग्रंथों में ब्रह्म को अलग-अलग नामों से अलंकृत किया गया है। कुलजम स्वरूप में महामति प्राणनाथ ने कहा है —

याही विध गिरोह के नाम लिखे अनेक
जुदे-जुदे नामों पर सिफ़त, पर गिरो एकको एक

वे कहते हैं कि विभिन्न जाति, समुदाय के लोग उन्हें अलग-अलग नामों से याद करते हैं और उनकी प्रशंसा करते हैं परन्तु ब्रह्म सृष्टि को विभाजित करना कठिन ही नहीं वरन् दुर्लभ है।

कुलजम स्वरूप के अनुसार,
एक अनेक सब इनमें, इत सांच झूठ विस्तार।
अक्षर ब्रह्म क्यों पावहीं, भई आड़ी निराकार।।

अर्थात् महामति प्राणनाथ के उपास्य श्रीकृष्ण के लिए "शब्द" का प्रयोग किया गया है, जब कि अक्षर ब्रह्म बुद्धि के प्रतीक हैं। ज्ञानी तो परब्रह्म में विलीन हो सकता है। परन्तु अज्ञानी अक्षरब्रह्म को भी प्राप्त करने में असमर्थ रहता है। ब्रह्म के नाम, तथा उसका स्वरूप अलग नहीं है, यह कुलजम स्वरूप में स्पष्ट रूप मे महामति प्राणनाथ ने दर्शाया है---

"नाम सारों जुदे धरे लई जुदी रसम।
सब में उत्तम और दुनियां सोई खुदा सोई ब्रह्म।।

इस प्रकार अनेकों नामों से सम्बोधन करने वाला वही एक परब्रह्म है जो अदृश्य और अजेय है।

ब्रह्म की प्रकृति

प्राणनाथ जी ब्रह्म की समस्त रचना और उनकी शक्ति को ही प्रकृति की संज्ञा मानते हैं तथा इसकी पुष्टि अनेकों ग्रंथों के माध्यम से हो चुकी है, प्रकृति की रचना एवं उसका प्रलय सुनिश्चित है। वे कहते हैं--

प्रकृति का कोई अलग से अस्तित्व नहीं हो सकता, क्योंकि ब्रह्म की समस्त शक्ति इसी प्रकृति में अदृश्य है, और प्रकृति से अनेकों ब्रह्मांड की संरचना सम्भव है। कुलजम स्वरूप के अनुसार--

मूल प्रकृति मोह अहं ये उपजे तीनों गुन।
सो पांचों में पसरे, हुई अंधेरी चौदे भुवन।।

अर्थात्, मूल प्रकृति से माया मोह एवं अहंकार तीन गुणों की उत्पत्ति

हुई तथा वे पाँच तत्वों में विभक्त हो गये, जिससे चौदह तबकों में माया रूपी अंधकार फैल गया।

ब्रह्म का स्वरूप

महामति प्राणनाथ के अनुसार "समस्त ब्रह्माण्ड में अक्षरातीत का स्वरूप मौजूद है i" उनके इस दोहे से स्पष्ट है—

पाँच तत्व गुन तीनोही, ए गोलक चाँदे भवन।
निरगुन सुन या निरंजन, ज्यों पैदा त्योंही पतन।

अर्थात्, पाँच तत्वों और तीन गुणों का स्वरूप तथा गोल पृथ्वी के साथ-साथ चौदहों तबक में जो निर्गुन एवं निरंजन शून्य से उत्पन्न होते हैं उसी में पुन: विलीन हो जाते हैं, अक्षरातीत परब्रह्म के द्वारा ही क्षर लोक की उत्पत्ति होती है। माया रूपी अदृश्य शक्ति परमात्मा के वास्तविक रूप को पहचानने में बाधक सिद्ध होती है। इसी कारण ब्रह्म के स्वरूप को सुनिश्चित नहीं किया जा सका,

पढ़-पढ़ कर थाके पंडित करी न तिरने किन।
त्रिगुन त्रिलोकी, हो एक, खेले तीनों काल मगन।

कहने का आशय है कि वेद-कतेब पढ़ते-पढ़ते लोग थक गये, परन्तु ब्रह्म के स्वरूप का वास्तविक वर्णन करने में असमर्थ रहे, तीनों काल में त्रिलोकी का रूप धारण कर के यही तीनों गुणों द्वारा प्रसन्नचित्त रहती है। ब्रह्म के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए प्राणनाथ कहते हैं—

आद अंत याकों नहीं, नहीं रूप रंग रेख।
अंग न इन्द्री तेज न जोत, ऐसी आप अलेख।

ब्रह्म का कोई आदि और अन्त नहीं है, न ही उसका कोई स्वरूप और आकार है, तथा उनका रंग रूप अंग इन्द्रिय तेज भी नही है, वह अदृश्य, अजेय और अमर हैं।

कोई कहे जो निरगुन न्यारा रहत सबन से असंग।
कोई कहे ब्रह्म जीव न दोए सब ऐके अंग।

अर्थात् कुछ लोगों का कथन है कि ब्रह्म केवल निर्गुण स्वरूप है तथा

वह सबसे भिन्न है, उसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती। वह सब में मिला और सब से जुदा है। इस प्रकार जीव और ब्रह्म का विश्लेषण करना असम्भव है।

इस प्रकार महामति प्राणनाथ द्वारा रचित ग्रन्थ कुलजम स्वरूप से स्पष्ट विदित होता है कि क्षर-अक्षरातीत का स्वरूप समन्वयात्मक है, और परब्रह्म का कोई निश्चित निवास स्थान नहीं है, और न ही उनका निश्चित आकार है, वह सदैव प्रत्येक स्थल एवं घट-घट में व्याप्त है, तथा आदि से लेकर प्रलय के बाद भी वह अजेय और अमर रहेंगे।

ब्रह्म के गुण तथा कार्य

प्राणनाथ के अनुसार, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का रचयिता ब्रह्म को ही माना जाता है। सभी जीवात्माएं ब्रह्म से जुड़ी हैं। वही सारे जगत का पालनहार और सुख-दुःख को देने वाला हैं, उसकी अनुकम्पा से मनुष्य देवतुल्य बन सकता है, और उसके क्रुद्ध होने से देव मनुष्य से भी नीचे स्तर का जीव बन जाता है, उसकी लीला अपरम्पार है, प्राणनाथ ब्रह्म को एक मानते हैं और एकेश्वरवाद पर बल देते हुए समस्त मानव जाति के कल्याण को उस एक ब्रह्म से जोड़ते हुए उसी परमात्मा को मूलाधार मानते हैं। वे कहते हैं—

जिन खिन में तत्व पाँच समारे नाम करे खिन माहिं।
ए कहां से उपाय कहां ले समाए, ए विचारत क्यों नाहिं।

अर्थात्, समस्त संसार को जिस परमात्मा ने पाँच तत्वों के सम्मिश्रण से क्षणमात्र में ही बना दिया और क्षण भर में ही नष्ट कर सकता है, इस कार्य भार पर कभी कोई ध्यान पूर्वक सोचें तो सच्चाई का ज्ञान हो, ये सब कहां से उत्पन्न हो जाते हैं। और कहां विलीन होते है।

कुलजम स्वरूप में विभिन्न स्थानों पर प्राणनाथ जी ने स्पष्ट कहा है कि उस एक परब्रह्म का ना तो कोई रूप है, न रंग, उसी ने समस्त ब्रह्माण्ड की संरचना की है और उसके गुण तथा कार्य की समीक्षा करना किसी साधारण व्यक्ति के लिए कठिन ही नहीं वरन् असम्भव हैं, उसकी जितनी भी प्रशंसा करें कम हैं।

इस्लाम धर्म और कुलजम स्वरूप, पारस्परिक अध्ययन

पारस्परिक अध्ययन हेतु इस्लाम धर्म के आधार पर यहां भी मुख्यतः उपास्य, धाम, नाम, प्रकृति, स्वरूप, गुण तथा कार्य की विवेचना करना आवश्यक है।

उपास्य

इस्लाम धर्म की सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा यह है कि अल्लाह केवल पूजनीय है, उसके अलावा कोई पूज्य नहीं है, ला इलाह इल्लल्लाह का तात्पर्य ही यही है कि समस्त ब्रह्माण्ड का रचयिता एवं समस्त जगत का पालनहार एवं हाकिम केवल एक अल्ला है। खुदा होने में उसका कोई भागीदार (शरीक) नहीं, सिवा उसके किसी का हुक्म नहीं चलता, किसी अन्य के बस में कुछ भी नहीं, है, वही सब की आवश्यता पूरी करता है तथा सब के कष्टों का निवारक भी वही अल्लाह है।

इस्लाम धर्म के अनुसार अल्लाह ही केवल वन्दगी व इबादत के लायक है और उसी के सम्मुख नतमस्तक होना उचित और अनिवार्य है। इस्लाम धर्म के अन्तर्गत आने वाले सभी पीर-पैग़म्बर तथा ह० मु० सल्ल० ने भी संयुक्त रूप से यही घोषणा की है। इस्लाम धर्म के सब से महत्वपूर्ण धार्मिक ग्रन्थ "कुरान शरीफ़" के अन्तर्गत खुदा के लिए उल्लिखित है कि,

"वमाँ अरसलना मन क़ब्लेका मिर्रसूलिन्
इल्ला नूहेयाँ एलैहे अन्नहू ला इलाहा इल्ला-अना फ़ॉबुदून।"

(कु० श० सूर : ।, अंबिया-२५)

अर्थात्, हमने तुम से पहले भी जो रसूल भेजा, उसे हमने यही 'वह्य' की कि मेरे सिवा कोई इलाह (पूज्य) नहीं तो तुम मेरी ही इबादत (पूजा) करो। अल्लाह के साथ किसी को शरीक (सम्मिलित) करना या उसके अतिरिक्त किसी अन्य की उपासना करना और उससे मदद माँगना, घोर अपराध एवं पाप तुल्य है, खुदा उससे बेहद नाराज़ होता है, जैसा कि कुरान से विदित होता है,

"इन्नाल्लाहा-ला यग़फ़ेरेर अंइंयुश्रका बे ही
व यग़फ़ेरो मा दूना ज़ालेका लेमइ यशाओ,
वमई युश्रेका बिल्लाहे फ़क़द दल्लाबईद।

(कु० श० सूर : निसा ११६)

अर्थात् अल्लाह निस्सन्देह इस बात को कभी क्षमा नहीं करेगा कि उसके साथ किसी को शरीक किया जाय और इसके नीचे जिसके लिए चाहेगा क्षमा कर देगा, और जो अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराता हैं, वह भटक कर बहुत दूर जा पड़ा ।

अल्लाह की बन्दगी (उपासना)

अल्लाह ने हमें पैदा फ़रमाया और वही हमारा मालिक है, उसका कोई शरीक नहीं, वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा । अर्थात् आदि से अन्त तक उसका ही बोल-बाला है। उसने सूरज चाँद बनाया, उसी ने ज़मीन आसमान बनाया, उसी ने सब को बोलने समझने का ज्ञान प्रदान किया । अर्थात् वह एक दिव्य ज्योति की भांति सभी के अन्दर विद्यमान है । उसका अंश प्रत्येक प्राणी एवं जगत में व्याप्त है, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में उसकी लीला अपरम्पार है, वही हमारी समस्त आवश्यकताएं पूरी करता है तथा हम सिर से पैर तक उसके उपकारों में डूबे हुए हैं ।

अतः हमारा कर्तव्य है कि हम उसके सामने नतमस्तक हो जाएं । श्रद्धा एवं निष्ठा के साथ निःस्वार्थ उसका गुणगान करें, तथा उसके प्रति सदैव वचनबद्ध रहें । और अपना सर्वस्व उस पर निछावर कर दें । बस यही अल्लाह के प्रति बन्दगी और उपासना है ।

इस्लाम धर्म में अनेक स्थलों पर स्पष्ट रूप से उल्लिखित है कि "हम उसकी इबादत इस प्रकार करें कि उससे भक्तिभाव की अभिव्यक्ति के साथ-साथ अल्लाह के प्रति वफ़ादारी और बन्दगी के लिए भी वचनबद्ध रहें ।

इस्लामी जीवन का मुख्य आधार इबादत हैं । यदि मनुष्य इस पर ईमान रखेगा तो बेशक अल्लाह की अनुकम्पा उस पर होगी, इसलिए इबादतें उसे अधिक प्रिय हैं ।

हजरत मु० सल्ल० ने फ़रमाया है—

"इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर आधारित है—

१—इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई अन्य बन्दगी के लायक नहीं तथा मु० सल्ल० उसके बन्दे और रसूल हैं ।

२—नमाज़ का आयोजन करना ।

३—ज़कात देना (उचित व्यक्ति को)

४—हज करना (काबा शरीफ़) का।

५—रमज़ान शरीफ़ के रोज़े रखना।

(बुखारी मुस्लिम)

यही इस्लाम धर्म के पाँच आधारभूत स्तम्भ हैं, जिस पर इस्लाम धर्म की विशाल इमारत तामीर की गयी है। मजहबे इस्लाम पर चलने के लिए इन पाँचों चीजों का हक़ अदा करना होगा। इसीलिए कुरान और हदीस में इन पाँचों चीज़ों पर अमल करने पर बल दिया गया हैं। ऐसा करने पर उचित बदला देने के लिए खुदा खुद वचनबद्ध है। परन्तु इसमें लापरवाही करने पर उसे कड़ी यातना का सामना करना होगा। इस प्रकार इन इबादतों का असाधारण एवं विशेष महत्व है। इस्लाम धर्म के अनुसार—

"जिस प्रकार अल्लाह की उपासना एवं बन्दगी आवश्यक है, उसी प्रकार यह भी आवश्यक है कि हम जीवन में उसी के कानूनों का अनुशीलन करें क्योंकि हमारा ईमान और हमारा एक अल्लाह को मानना इसी बात की अपेक्षा करता है। यदि हम इन बातों का सच्चाई के साथ पालन नहीं करते तो हमें अपने आप को वास्तविक मोमिन नहीं समझना चाहिए।

अल्लाह समस्त ब्रह्माण्ड का रचयिता है और जगत का पालनहार है, और वही हर स्थान पर हुकूमत भी कर रहा हैं।

> "इन्ना रब्बाकुमुल्लाहोल्लाज़ी ख़रक़स्समावाते
> वल अर्दा युग़शियल्ला अन्नहारा, यत लुबोहु
> ख़स्यंतो वश्शम्स वल् क़मरा वन्नजूमा—
> मुसख्खरातिम बेअमरेही अला लहुल एक्लको
> वलअम्रो, तबारकल्लाहो रब्बुल आलमीन।

(कु० श० सूरा : आरफात—५४)

अर्थात्, वास्तव में तुम्हारा रब, अल्लाह है जिसने आकाशों और धरती को छः दिनों (युगों) में पैदा किया, और फिर राज-सिंहासन पर विराजमान हुआ, वह रात को दिन के साथ ढंकता है, जो इसका पीछा

करने की तेज़ी में है। सूरज-चाँद और तारों को ऐसे तौर पर पैदा किया कि वे उसके हुक्म से काम में लगे हुए हैं। जान लो। उसी की सृष्टि है और हुक्म भी। अल्लाह सारे संसार का 'रब' बड़ी बरकत वाला है। यही अल्लाह जो सारे संसार का अकेला शासक है, वही इन्सानों का भी शासक है, जैसा कि आगे कु० श० से विदित है—

१—"कुल औज़ो बे रब्बिन्नास"

२—"मलेकिन्नास"

३—"इलाहिन्नास",

१—कहो, मैं पनाह लेता हूं, लोगों के पालनकर्ता की।

२—लोगों के सम्राट की।

३—लोगों के इलाह (पूज्य) की।

लाइलाह इल्ललाह, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह।

इस्लाम का बुनियादी कलिमा है, जिसमें स्पष्ट कहा गया है कि अल्लाह एक है और वही पूज्यनीय है। तथा मु० रसूल्ल० अल्लाह के रसूल हैं सभी को इन बातों पर अमल करते हुए ऐकेश्वरवाद (तौहीद) के मार्ग पर चलना चाहिए।

अल्लाह का धाम

मक्का शरीफ़ में तामीर "काबा शरीफ़" को अल्लाह का घर बताया गया है। परन्तु खुदा का धाम सुनिश्चित करना कठिन ही नहीं वरन् असम्भव है क्योंकि समस्त ब्रह्माण्ड का रचयिता होने के नाते वह तो हर स्थान पर विद्यमान है, उसकी पहचान एवं परख असाधारण कार्य है। आत्मा को परमात्मा में विलीन करने पर उसका अपना स्वरूप (जलवा) देखा जा सकता हैं, कोहे तूर पर मूसा अलै० ने थोड़ी सी नूर की झलक देख कर ताब न ला सके और बेहोश हो गये। परन्तु उस पाक बेन्याज़ की बनाई हुई प्रत्येक चीज़ अद्वितीय है। वह तो सारे जगत का मालिक और खालिक है, उसी का नूर सब में समाया है, ज़र्रे-ज़र्रे में उसका नूर मौजूद है, मनुष्य को खुदा ने सब से बेहतर और बरतर बनाया है। मनुष्य यदि कड़ी साधना करे

तो अवश्य ही उसका दर्शन पा सकता है। ईमान वालों के लिए खुदा हर चीज़ आख़िरत के बाद मुहैया करायेगा और सभी गुनाहों को क्षमा कर देगा।

"यग़फिर लकुम जुनूबकुम वयुद ख़ेल्कुम जन्नातिन
तजरी मिनू तहतेहल् अन्हारो, वम साकिन तय्यबतन्
फ़ी जन्नातें अ़दनिन् ज़ालेकल फ़ौजुल अज़ीम।
(कु० अससफ्फ : १२)

अर्थात्, खुदा तुम्हारे गुनाहों को क्षमा प्रदान कर देगा। और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, और अच्छे-अच्छे घरों में जो सदा रहने के बाग़ों में होंगे, यह है बड़ी सफ़लता।

इस्लाम धर्म के अनुसार परम धाम की कल्पना भी अद्वितीय है, जो जन्नत के नाम से प्रसिद्ध है। अल्लाह का निवास स्थान मुख्य रूप से अर्श से संबंधित किया गया है, इसीलिए क़हीं-कहीं उसे अर्श आजम के नाम से सम्बोधित किया जाता है। अर्श या सिंहासन पर विराजमान होने की वास्तविकता को विस्तारपूर्वक समझना कठिन है, परन्तु यह सम्भव भी हो सकता है कि अल्ला ताला किसी विशेष स्थान को अपना राज्य सिंहासन बनाया हो और उसे केन्द्र मान कर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड पर अपनी निगाह रखता हो। परन्तु अल्लाह केवल अर्श का ही नहीं वरन् समस्त सृष्टि का रचयिता एवं निर्माता है, और जगत के कार्य व्यापार को भली-भाँति देखता-सुनता रहता है। तो ऐसी अवस्था में खुदा का निवास स्थान संकुचित नहीं हो सकता।

एक समय में प्रत्येक स्थान पर उसकी दृष्टि समान रूप से होती है। परन्तु उसके अर्श और जन्नत (स्वर्ग) की व्याख्या करने पर एक अद्भुत एवं अद्वितीय मन्जर देखने को मिलता है, यह कुरान शरीफ़ और हदीस से विदित है कि जन्नत की परिकल्पना में कहा गया है—

"ऐसे बाग़ जिनमें नहरें बह रही होंगी, फल तथा पाक पत्नियाँ। वहाँ किसी के प्रति कपट का भाव नहीं होगा। सोने के कंगन तथा उत्तम रेशमी वस्त्र पहनने को मिलेगा तथा ऐसा मनोरम दृश्य कि वहाँ से जाने को मन

नहीं करेगा। रहने के लिए ऊँचे-ऊँचे महल जिसके नीचे नहरें बह रही होंगी।"

"कुरान शरीफ़ में लिखा है कि कोई क्या जाने अल्लाह ने 'जन्नत' में आँखों की ठण्डक का कैसा-कैसा सामान मुहैया किया है। वहाँ धूप की न तो तेज़ी न तो कड़ी सर्दी, फ़लों से लदे हुए पेड़, चाँदी और शीशे के बर्तन, मन चाहे मेवे, अंगूरों के बाग़, एक ही उम्र की नव-युवतियाँ। छलकते हुए गिलास, सुगन्धित फूल और नेमत भरे बाग़, ऊँचे तख़्त तथा बेहतरीन मसनदें होंगी।

इस प्रकार अल्लाह का निवास स्थान अर्श और उससे सम्बन्धित जन्नत की व्याख्या अवर्णनीय है। परन्तु समस्त सृष्टि का निर्माता होने के कारण उसे तो सब जगह रहना पड़ता है, और उसका धाम सुनिश्चित करना असम्भव है क्योंकि वह हर जगह घट-घट में व्याप्त है।

अल्लाह का नाम

जिस प्रकार खुदा का धाम सुनिश्चित नहीं किया जा सकता उसी प्रकार खुदा का नाम भी संकुचित नहीं है उसे हर युग, हर धर्म में अलग-अलग नामों से पुकारा जाता रहा है, और वही एक ज़ात सब का हितैषी और पोषक है, हर स्थान पर वह अपने पूर्ण वैभव के साथ सुसज्जित है, उसका कोई एक नाम नहीं।

वह एक अद्भुत शक्ति का द्योतक है, जहाँ भी जिसने उससे मदद माँगी, वह उसके कष्ट का निवारण उसी शक्ति के रूप में उसका सहायक सिद्ध होता है, जैसा कि तौरेत ज़बूर और इन्जील में पहले ही बताया जा चुका था, फिर ह० मु० सल्ल० के द्वारा जब कुरान का अवतरण हुआ तो, उसमें भी साफ-साफ बतलाया गया कि "ऐ लोगो, मैं तुम सबका मालिक और ख़ालिक हूँ। मैं तुम्हारी मदद करने को हर समय तैयार हूँ, यदि तुम "मेरी इबादत निःस्वार्थ भाव से करोगे।"

एक अन्य साक्ष्य में ह० मु० सल्ल० ने फरमाया है—"ऐ लोगो, दो ज़बड़ों के बीच में जो है (ज़बान) तथा दो पैरों के बीच में जो है,

अर्थात् गुप्तांग। यदि तुम उसकी पाकीज़गी की जमानत मुझे दो तो जन्नत के लिए मैं तुम्हारी ज़मानत लेने को तैयार हूँ।"

(बुख़ारी शरीफ़)

कहने का तात्पर्य है कि यदि रसूल में यह विशेषता है तो उसके खुदा में क्या यह सलाहियत नहीं कि वह अपने नेक बन्दों की हर सम्भव मदद कर सके। अल्लाह के बहुत से नाम बताए गये हैं परन्तु वह अल्लाह किसी हद तक सीमित और संकुचित नहीं है, उसका निवास जब सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में हो सकता है तो उसके असंख्य नाम और भी हो सकते हैं। जिसने हमारे लिए सारी चीज़ें पैदा फ़रमाई और वे सभी वस्तुएं संचित कीं, जिनकी हमें आवश्यकता थी। समस्त वस्तुओं पर जिसका अधिकार है, यदि वह हमारा पालनहार है, तो वही हमारी रक्षा कर सकता है, चाहे हम उस शक्ति को किसी भी नाम से सम्बोधित करें।

इस्लाम धर्म के अन्तर्गत अल्लाह को खुदा, खालिक़, रज़्ज़ाक, क़हहार, सत्तार, जब्बार, हकीम, करीम हफ़ीज़, रहीम, रहमान, इत्यादि अनेक बहु-संख्यक नामों से सम्बोधित किया है। परन्तु विस्तारपूर्वक अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि एक असीम शक्ति जो कि अदृश्य और अजेय और अमर है, वही खुदा और अल्लाह आदि नामों से जाना जाता है।

अल्लाह की प्रकृति

विस्तारपूर्वक अध्ययन के पश्चात् हमें ज्ञात होता हैं कि अल्लाह एक ही है, उसके अतिरिक्त जो कुछ है उसी की रचना हैं और इस समस्त रचना के अन्तर्गत अल्लाह की वास्तविक प्रकृति का साक्षात दर्शन अनादिकाल से होता आया है। सम्पूर्ण सृष्टि में उसका जलवा मौजूद है, और जो कुछ भी हम देख और सुन रहे हैं सब उसी का खेल है और इस प्रकृति में वह पूर्णरूप से विद्यमान है। आकाश से पाताल तक उसका नूर मौजूद है, और उसकी अदृश्य शक्ति हर जगह समान रूप से पायी जाती है। वह धर्म-जाति एवं किसी समुदाय विशेष का आराध्य नहीं। वह तो सभी का हैं और सभी पर समान रूप से अपनी अनुकम्पा छिड़कता है क्योंकि अन्न, जल, फूल, फल, बिना किसी भेदभाव के सब को लाभ पहुँचाते हैं, और यह समस्त प्राकृतिक वस्तुएं तो उसी ने बनायी हैं जिसने हमें और सभी कुछ बनाया है।

अत: हम कह सकते हैं कि समस्त संसार के मनुष्यों को वह इस प्रकार देखता है, जैसे हथेली पर सरसों (राई) का दाना। उससे कोई वस्तु छिपी नहीं है, वह हमारे दिल की धड़कनों और हमारी मनोवृत्ति तक से हर पल अवगत होता रहता है।

कुरान शरीफ़ के अनुसार,

अल्लाहो लतीफुम्बेइबादेही। एवं

"वहोवलक़वीउलअज़ीज !!"

अर्थात्, अल्लाह ताला, अपने बन्दों की ज़रा-ज़रा सी चीज़ का ख्याल रखता है और वह बलवान और शक्तिशाली है।

उपरोक्त सभी साक्ष्यों से विदित होता है कि अल्लाह की प्रकृति वृहत है एवं उसकी शक्ति असीम है। प्रकृति और अल्लाह को अलग नहीं किया जा सकता, यह एक सिक्के के दो पहलू के समान : जिसे अलग करना असम्भव है।

अल्लाह का स्वरूप

इस्लाम धर्म के अनुसार अल्लाह अद्‌भुत शक्ति का मालिक़ और खालिक है तथा एक पवित्र सत्ता उसके हाथ में है, और हर चीज़ पर उसकी बादशाही है। आकाश और धरती तथा जो कुछ इनके बीच में है, सब का एक अकेला "रब" वही अल्लाह है, जो बड़ा कृपालु और प्रभुत्वशाली है। परन्तु वह अल्लाह कहां है, कैसा है, इस तथ्य को सुनिश्चित करना मानव के ही लिए नहीं वरन् पीर-पैगम्बर और औलियाए-एकराम के लिए भी दुर्लभ था और आज भी उसकी पहचान करना असाधारण सी बात है। उसका कोई रंग-रूप, हाथ-पैर, शरीर नहीं वह तो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की संरचना करने वाला एक "इलाह" है। जो आदि से अन्त तक अकेला रहेगा, किसी के साथ उसे शरीक़ करना इस्लाम धर्म में सिर्क़ माना गया है।

कुरान शरीफ़ में उल्लिखित है कि "अल्लाह से कोई बात छुपी नहीं है, वह हर जगह हर समय सबके पास मौजूद है, और सब कुछ देखता और सुनता रहता है।

"यालमो ख़ाएनता अल् ऐयुने वमा तुख़्फ़ीस्सुदूर् !
इलल्लाहा हो वस्समीउल्बशीर !!

(कु० श० सूर० अलमोमिन : १६–२०)

अर्थात्, वह निगाहों की चोरी को जानता है, और सीने के अन्दर छिपे हुए भेद को भी वह जानता है। निस्सन्देह अल्लाह ही सुनने वाला और देखने वाला है।

इस्लाम धर्म के प्रवर्तक ह० मु० सल्ल० ने खुद इस बात की गवाही दी है कि अल्लाह एक है, उसका कोई आकार नहीं है, वह सर्वशक्ति सम्पन्न हैं तथा समस्त सृष्टि में उसकी ही हुकूमत हैं, वह कृपाशील, दयावान तथा हर त्रुटि से पाक-बेन्याज़ है। उसकी कीर्ति बहुत बड़ी हैं। वह न पत्नी रखता है, न बच्चे, तथा न किसी का बाप है, न किसी का बेटा। इन सभी बातों का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि समस्त ब्रह्माण्ड की संरचना करने वाला कितना शक्तिशाली तथा उच्च तत्वदर्शी है। उसकी मज़बूत पकड़ संसार और उसके परे हर स्थान पर अद्भुत रूप में उजागर है। उसकी प्रशंसा भी हम करने में असमर्थ हैं क्योंकि उसने जो भी कार्य सम्पन्न किया है, कोई बिना अर्थ के नहीं और सभी बातें सत्य एवं उचित प्रतीत होती हैं।

इस्लाम धर्म तथा कोई भी धर्म उस "रब" का गुणगान करने को बाध्य है। ह० मु० सल्ल० अल्लाह के स्वरूप की व्याख्या करते समय एक स्थान पर कहते हैं—

"धरती और आकाश का कोई कण भी उससे छिपा नहीं है।"

(कु० श० सूर : ३४ : ३)

अल्लाह के अस्तित्व एवं उसके स्वरूप का वर्णन कुरान शरीफ़ के अनुसार—

"अल्लाह जानता है, जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, कोई गुप्त वार्ता तीन व्यक्तियों की ऐसी नहीं होती कि जिसमें चौथा वह

न हो और न कोई पाँच आदमियों की ऐसी बात होती है जिसमें छठा उसका स्वरूप न हो ।

(कु० शरीफ़ सूर : अलमुजादला ५८–७)

अर्थात्, अल्लाह का स्वरूप बहुत बड़ा और बहुत छोटा हो सकता है, जैसा भी चाहे, जहाँ भी चाहे, हर रंग-रूप में वह अपने आप को परिवर्तित कर सकता है, उसी का नूर समस्त सृष्टि में व्याप्त है ।"

अल्लाह के गुण तथा कार्य

इस्लाम धर्म में अल्लाह की इतनी प्रशंसा की गयी है कि लिखने के लिए क़लम कागज कम पड़ जायेंगे, और यदि स्याही के स्थान पर समुद्रों का पानी प्रयोग किया जाय तो वह भी कम पड़ जायेगा । सारी दुनियाँ ही नहीं वरन् समस्त ब्रह्माण्ड उसी का रचाया हुआ है, उसमें इतनी शक्ति है, कि वह क्षणमात्र में ऐसे अनेक ब्रह्माण्ड की रचना कर सकता है ।

अल्लाह के गुण उसकी विशेषता एवं उसके कार्यों की समीक्षा करना ऐसा ही है, जैसे सूरज को चिराग़ दिखाना, वास्तव में खुदा का ही ज़हूर चारों ओर हम देख रहे हैं । उसने सूरज चाँद बनाया, उसने तारों को चमकाया, समस्त परिन्दे उसी का गुणगान करते रहते हैं । आकाश और पाताल का वही सम्राट हैं । सर्वोत्तम संरक्षक, मित्र और सर्वोत्तम सहायक वही एक अल्लाह हैं ।

उसके पास परोक्ष की कुन्जियाँ है, जिन्हें उसके अतिरिक्त कोई नहीं जानता । अपने मन की बात ज़ाहिर (प्रकट) करो या छिपाओ, अल्लाह छिपी और खुली सब बातें जानता है ।

उपर्युक्त सभी बातें क्या उसके गुणों की दलील में कम हैं । क्या इससे भी बड़ी कोई और शक्ति कहीं है, जो इनसे ऊपर की विशेषता का मालिक हो । हमें मानना ही पड़ेगा कि केवल एक ही अदृश्य शक्ति है जो सम्पूर्ण सृष्टि में अपनी पैठ रखता है, और उसके ज्ञान के घेरे में सभी चीज़ें आ जाती हैं । गर्भ में क्या है वह जानता है, और वही उसका रचयिता होता है तथा सीने में छिपा हुआ भेद भी वह जानता है । वह मनुष्य की रगे जान

(प्राण-नाड़ी) से बहुत क़रीब है। उसको हर प्रकार की जानकारी है, जैसा कि इस्लाम धर्म की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक कुरान शरीफ़ से विदित है।

"आलेमुलग़ैवे फ़ला युज़हेरो, अला ग़ैबेही।"

(कु० श० सूर : ७२–२६)

उक्त आयत से साबित होता है कि अल्लाह को हर चीज़ का इल्म गैब (जानकारी) है। अल्लाह क्षमा करने वाला और सहनशील है परन्तु वह लोगों के अत्याचार पर उन्हें एक निश्चित समय तक मुहलत (अवसर) देता है। प्रत्येक दृष्टिकोण से देखने पर हमें ज्ञात होता है कि "अल्लाह की बन्दगी और उसकी इबादत हम जितना करें कम हैं", जैसा कि कुरान शरीफ़ के पहले सूर : अल फातिहा से विदित है—

अलहम्दोलिल्लाहे रब्बिल् आलमीन,

अर्रहमा निर्रहीम !! (कु० श० सूर : १-१-२)

अर्थात्, सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का रब, पालन-हार (प्रभु शासक) हैं, और वह अत्यन्त कृपाशील एवं दयावान है।

कुलजम स्वरूप और इस्लाम धर्म, तुलनात्मक अध्ययन

वेद एवं कतेब दोनों स्रोतों से एकेश्वरवाद की वास्तविकता सिद्ध हो चुकी है। अतएव इस मिथ्या संसार के वासी परस्पर धार्मिक मतभेद को त्याग कर यदि महामति प्राणनाथ के विचारों से सहमत हो जायें तो आज भी समस्त संसार स्वर्गमय हो जाये तथा परमधाम के परम ब्रह्म स्वतः साक्षात् प्रकट होकर सत्, चित् और आनन्द के वास्तविक स्वरूप को उजागर कर देंगे।

वेद एवं कतेब के अनुसार ब्रह्म या खुदा ही उपास्य माने गये हैं। परन्तु महामति प्राणनाथ दोनों नामों को एक ही महाशक्ति का बोधक मानते हैं। कुलजम स्वरूप में अनेकों स्थानों पर उन्होंने एकेश्वरवाद (तौहीद) का नारा बुलन्द किया है।

सब जातें नाम जुदे धरें सब का ख़ाविन्द एक !
एक की बन्दगी याही की, पीछे लड़ें बिना पाए विवेक !

(खुलासा २/२२)

इस प्रकार प्रत्येक जाति, धर्म एवं समाज के प्राणियों के प्रति, यह खुला संदेश है जिसके अनुसरण से सभी आपसी मतभेद स्वतः मिट सकते हैं।

बोली जुदी सबन की, और सबका जुदा चलन।
सब उरझे नाम ज़ुदेधर, पर मेरे तो केहेना सबन !

(सनन्ध १४)

उपर्युक्त चौपाई में स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ता है कि प्राणनाथ जी हर सम्भव यह प्रयत्न करते हुए प्रतीत होते हैं कि परम सत्ता या ब्रह्म अथवा खुदा (अल्लाह) एक ही नाम है और वह एक मात्र शक्ति (इलाह) पूजनीय हैं—

ख़सम एक सबन का, नाहीं दूसरा कोए !
ए विचार तो करे जो आप सॉंचे होए !!

(सनन्ध / २२)

करना सारा एक रस हिन्दू मुसलमान !
धोंका सब का मान के कहूंगी सबका ज्ञान !!

(सनन्ध / २७)

अर्थात्, हिन्दू तथा मुसलमान दोनों को समझाते हुए महामति प्राणनाथ उनके अन्तर विवेक को ज्ञान का दान-प्रदान करते हुए उनका मार्ग दर्शन कर रहे हैं—

ब्राह्मण कहे हम उत्तम, मुसलमान कहे हम पाक।
दोऊ मुट्ठी एक ठौर की, एक राख दूजी ख़ाक ॥

(सनन्ध ४०/४२)

आपसी झगड़ों की ओर भी इशारा करते हुए प्राणनाथ औरंगज़ेब की कट्टर धर्मनीतियों का साहसपूर्ण उत्तर देते हैं तथा सावधान करते हुए कहते हैं—

दिल पाक जो लों होए नहीं, कहां होए वजूद ऊपर से धोए,

धोए, वजूद पाक दिल, कबहूँ न हुआ कोए।

(सनन्ध / १६)

कहने का तात्पर्य है कि वास्तविक शुद्धता तो हृदय की है, ऊपर से कितना ही कोई सफाई करे, परन्तु कभी पाक नहीं हो सकता।

इसी संदर्भ में प्राणनाथ जी कुलजम स्वरूप के माध्यम से उन सभी अलगाववादी तत्वों को पुनः सचेत करत हुए कहते हैं—

जो कुछ कह्या कतेब ने, सोई कह्या वेद।

दोऊ बन्दे एक साहेव के, पर लड़त बिना पाए भेद ।।

(सनन्ध २०/१०)

अर्थात्, वेद और कतेब दोनों ही एक बात कहते हैं, एक परमात्मा के दोनों ही बन्दे हैं। परन्तु विवेक के अभाव में वे आपस में लड़ते है।

इसी प्रकार और भी कहते हैं—

नाम सारे जुदे धरें, लई सबों, जुदी रसम।

सब में उत्तम और दुनियाँ सोई खुदा सोई ब्रह्म।

इस प्रकार समस्त दृष्टिकोण से अध्ययन के पश्चात् अन्ततः यह निष्कर्ष निकलेता है कि उपास्य, नाम, प्रकृति, स्वरूप, तथा गुण-कार्य के आधार एवं एतबार से वही माबूद (परब्रह्म) सर्वव्यापी है तथा उसी का जलवा समस्त ब्रह्माण्ड में समाहित है।

इस्लाम धर्म के अनुसार, कुरान शरीफ़ में भी स्पष्ट रूप से उल्लिखित सभी बातें इन्हीं सिद्धान्तों पर आधारित हैं।

कुरान शरीफ के सूर : यूसुफ से विदित है—

अल्लाहो बेहा मिन् सुल्तानिन् ।।

(सूर : युसुफ १२–४०)

अर्थात्, सम्पूर्ण "ब्रह्मांड" में "अल्लाह के अतिरिक्त किसी का शासन नहीं।" उसकी महानता के सम्बन्ध में कहा गया है—

वहोवा शदी दुल्मेहाल (सूरा : अर–२ अद् १३-१३)

अर्थात् वह "अल्लाह" शक्ति वाला है।

इस प्रकार कुलजम स्वरूप और कुरान शरीफ के पारस्परिक अध्ययन से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि उक्त छः आधारों के अनुसार काफी हद तक साम्यता पायी जाती है।

यदि उपास्य, नाम, प्रकृति, स्वरूप तथा गुण-कार्य को ही आधार मान कर कुलजम स्वरूप और इस्लाम धर्म का पारस्परिक अध्ययन हम करते हैं तो सब जगह वही बातें केवल अलग-अलग लिपि में हमें दिखाई पड़ती हैं। वैसे तो समस्त धार्मिक ग्रन्थ अपना एक विशिष्ट स्थान रखते हैं और उच्च आदर्श प्रस्तुत करते हैं, परन्तु कुलज़म स्वरूप और इस्लाम धर्म में हमें एक जैसी विशेषताएं दिखाई पड़ती है।

इस्लाम धर्म के महानतम ग्रंथ कुरान शरीफ़ और कुलज़म स्वरूप में अल्लाह तथा परब्रह्म के लिए एक जैसी विशेषता कही गयी है। इन दोनों के अनुसार "खुदा या ब्रह्म ही केवल इल्लाह (पूज्य) है। वह घट-घट में व्याप्त है और आकाश-पाताल में हर स्थान पर उसका ही स्वरूप प्रज्ज्वलित है। यदि ज्ञान के अभाव में कोई व्यक्ति उपरोक्त तथ्य को समझने में असमर्थ

हो तो उसके लिए वह स्वतः जिम्मेदार है। परन्तु कुलजम स्वरूप और इस्लाम धर्म में कहीं पर टकराव नहीं है।

यदि प्राणनाथ कृत कुलजम स्वरूप के मूल आदर्शों को, तथा इस्लाम धर्म की प्रमुख विशेषताओं को ध्यान में रख कर उच्च आदर्श प्राप्त करना है तो एक मात्र तौहीद अथवा एकेश्वरवाद से ही सम्भव है तथा विश्व बन्धुत्व की भावना भी सहज रूप से साकार हो सकती है।

उपासना या इबादत का स्वरूप

(भक्ति, ज्ञान, कर्म)

अध्याय ७

उपासना या इबादत का स्वरूप

महामति प्राणनाथ सदैव अपने अनुयाइयों को प्रेम भाव का पाठ पढ़ाया करते थे, तथा इसी मार्ग का अनुशीलन करते हुए अपनी समस्त शक्ति का पुंज विश्व के कोने-कोने में विखेरते रहे। आपके अनुसार प्रेम साधना या इबादत का स्वरूप मुख्यत: तीन सिद्धान्तों पर आधारित है, जो निम्न-लिखित हैं—

१—भक्ति

२—ज्ञान

३—कर्म

१. भक्ति

वास्तविक साधना के अनुसार सत्य धर्म की सुखद अनुभूति में ही उपासना या इबादत निहित है। अतएव नि:स्वार्थ भाव से किया गया कर्म एव श्रद्धापूर्वक ईश्वर के प्रति अपने आप को पूर्ण समर्पित करना ही वास्तविक भक्ति है। प्रेम साधना को प्राथमिकता देते हुए महामति जी श्रीकृष्ण को अपना मुख्य उपास्य मानते हैं परन्तु श्रीकृष्ण के रूप में उन्होंने बुद्ध निष्कलंक ईसा एवं हज़रत मु० सल्ल० को अपना आराध्य माना है तथा सभी महान शक्ति के प्रतीकों को पूजनीय मानते हुए तौहीद अथवा एकेश्वरवाद पर बल दिया है और समस्त संसार को एक पाठ पढ़ाते हुए आपने स्पष्ट रूप से बताया कि परब्रह्म ही सर्वव्यापी तथा सर्वोपरि है तथा वही एक सबका पालनहार और अभीष्ट है। ऐसे उपास्य पर सर्वस्व अर्पित करते हुए महामति प्राणनाथ कहते हैं—

इन खसम के नाम पर करौं कोट बेर वारों तन ।
टूक टूक कर डार हूँ कर मनसा वाचा, करमन ।।

(कि० प्र० ६०/१८)

अर्थात्, ऐसे सृजनहार पर मैं करोड़ों बार अपना तन, मन, धन, न्योछावर कर दूं । भक्ति भाव का दूसरा रूप स्पष्ट करते हुए श्री प्राणनाथ जी कहते हैं—

जो पट आड़े धमाके मैं ताए देऊँ जा बार ।
कोई विध करके उड़ाइए ए जो लाग्यो देह विकार ।।

(कि० प्र० ७५/६७)

अर्थात्, ईश्वर प्राप्ति में जो भी बाधाएं उत्पन्न होंगी हम उसे जला कर ख़ाक कर देंगे, वह चाहे जिस प्रकार की हो, घुन की भाँति लगे समस्त विकारों को देह से अलग करना ही आवश्यक है । महामति प्राणनाथ के अनुसार इबादत या उपासना का स्वरूप बहुत ही अनूठा एवं सारगर्भित प्रतीत होता है, वे कहते हैं—

मैं जान्या अपने तन को मारो भर-भर बान ।
तिन से झूठी देह को, फ़ना करो निदान ।।

(के० प्र० ८५/२२)

अर्थात्; परमात्मा के प्रति प्रेम साधना व्यक्त करते हुए उपासक यह कामना करता है कि तीव्र बाणों से आघात पहुंचाकर मैं अपने शरीर को छलनी कर दूं और परमात्मा की राह में समर्पित हो जाऊँ । भक्ति का दूसरा स्वरूप प्रस्तुत करते हुए प्राणनाथ जी कहते हैं—

बिना आकीने इस्क कबहूँ न उपज्या किन ।
स्यानों ग्यान विचारिया, हाए हाए करी खराबी तिन ।।

(सनन्ध २६-१७)

अर्थात्, श्रद्धा एवं बिश्वास के बिना प्रेम भक्ति उत्पन्न होना कठिन है, परन्तु उपदेशकों ने अपने ज्ञान के आधार पर श्रद्धा एवं प्रेम के मार्ग में बाधा उत्पन्न कर दी, यह बड़ा बुरा किया——

मैलाई ना छूटी मन की ऊपर भए उजल।
ना आया आकीन रसूल पर हाए हाए छेतरे छल ।।

(सनंध २६-१८)

अन्दर विकार भरे हुए हैं और ऊपर से भक्ति भाव दिखलाकर स्वच्छ बनते हैं तथा जिनका पैगम्बर के वचनों पर विश्वास नहीं आया है वह उपहास के पात्र है और वे अवश्य ही ठगे गए हैं।

विकार सारे अंग के काम क्रोध दिमाग।
सो बिना विरहा ना जलें होए नहीं दिल पाक ।।

(सनंध २७-१३)

सम्पूर्ण शरीर विकारों से भरा हुआ है, काम, क्रोध, लोभ तथा अहं-कार आदि के समन्वय से मनुष्य परे नहीं है परन्तु इसे निर्मल बनाने के लिए विरह वेदना एवं प्रेम भक्ति ही सार्थक एवं सहायक सिद्ध हो सकती है, तथा इसी के द्वारा विकार दूर हो सकते हैं।

आखर भी इस्क बिना, हुआ न काहुं सुख।
सो इस्क क्यों छोड़िए, जो रसूलें कह्या आप मुख ।।

(सनन्ध २७-१४)

यह बात स्पष्ट है कि प्रेम भक्ति के बिना अविनासी सुख नहीं मिल सकता। ऐसे प्रेम भक्ति के पथ से विमुख क्यों हो रहे हो जब कि प्रेम भक्ति की प्रशंसा स्वयं रसूल अर्थात ईशदूत ने की है।

महामति प्राणनाथ के अनुसार भक्ति वह प्रेम साधना है जिसके द्वारा मनुष्य देवतुल्य होकर अपने परब्रह्म से एकाकार हो सकता है, परन्तु इसके

लिए कड़ी तपस्या एवं त्याग की आवश्यकता होती है। इसी तथ्य को स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं।

हाड़ हुए सब लकड़ी सिर श्रीफल विरह अगिन।
मांस मीज लोहू रंगा या विध होत हवन॥

(सनन्ध ७-३)

अर्थात्, लकड़ी के स्थान पर हड्डियों को रख कर विरह भक्ति की ज्वाला को प्रज्ज्वलित किया तथा मस्तक, मांस, मज्जा एवं रक्तयुक्त नाड़ियों को इस अग्नि-तपस्या में डालकर हवन को पूरा किया।

रोम-रोम सूली सुगम खन्ड खन्ड खाडा धार।
पूछ पिया दुख तिन को, जो तेरी विरहिन नार॥

(सनन्ध ७-४)

फांसी पर लटका कर तलवार से टुकड़े-टुकड़े कर देना सरल है, परन्तु अंगना के लिए प्रियतम का वियोग असह्य है।

ए दरद तेरा कठिन भूखन लगे ज्यों दाग।
हेम हीरा सेज पसमी अंग लगावे आग॥

(सनन्ध ७-६)

आपके बियोग का दुख अत्यन्त कठिन है, भूषण बाण की भांति चुभते हैं। स्वर्ण की हीरों जड़ित कोमल शय्या शरीर ज्वाला प्रज्ज्वलित करती है।

इस्क बड़ा रेसबन में न कोई इस्क समान।
एक तेरे इस्क बिना उड़ गई सब जहान॥

(सनन्ध ९-१)

प्रेम भक्ति सबसे महान है, जिसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता। ईश्वर की प्रेम भक्ति के बिना यह समस्त विश्व कुछ भी नहीं है।

एक अनेक हिसाब में और निराकार निरगुन।
न्यारा इस्क हिसाब थे, जो कछू ना देखे तुम बिन।।
(सनन्ध ९-४)

एक जीव से लेकर शून्य निराकार तक सबकी गणना कर डाली परन्तु प्रेम भक्ति की बात निराली है जिसकी दृष्टि केवल 'आप' (परमेश्वर) में लगी हुई है।

विरहा गत रे जान सोई जो मिल के विछुरी होए।
ज्यों मीन विछुरी जल थे या गत जाने सोए। मेरे दुलहा।।
तारूनी तलफे विलखे विरहनी विरहनी विलखे कलपे कामिनी।
(सनन्ध ८-१)

'प्रेमभक्ति' का एक और स्वरूप स्पष्ट करते हुए महामति प्राणनाथ जी कहते हैं कि वियोग की रीति को जुदाई वाले ही समझ सकते हैं। मेरे प्रियतम पानी से अलग होने पर मछली की क्या दशा होती है उसे मछली ही जानती है, तरुणी (अंगना) तड़पती है, वियोग से व्याकुल है। विरहनी विलखती है, और कामिनी कलपती है।

बिछुरा तेरा बल्लभा तो क्यों सहे सुहागिनी।
तुम बिना पिंड ब्रह्माण्ड होए गयी सब अग्नि।।
(सनन्ध ८-२)

अर्थात्, प्रियतम का वियोग, एक पवित्रता के लिए असह्य है, आपके बिना शरीर में तथा समस्त संसार में सर्वत्र आग की लपटें दिखाई पड़ती हैं।

इस्क को एह लछन जो नैनों पलक ना ले।
छोड़े फिरे न मिल सके, अन्दर नजर पिया में दे।।
(सनन्ध ९-९)

वास्तविक प्रेम भक्ति की यही निशानी है, जिसके नेत्र कभी बन्द न हों। अथक परिश्रम करने पर भी मिलन नहीं होता फिर भी अंतर दृष्टि प्रियतम से जुड़ी हुई है।

> एक अनेक हिसाब में, और निराकार निरगुन।
> न्यारा इस्क हिसाब थें, जो कुछ ना देखे तुम बिन।
> (सनन्ध ६–४)

एक (जीव) से लेकर शून्य निराकार तक सबकी गणना कर डाली परन्तु प्रेम भक्ति की बात निराली है जिसकी दृष्टि केवल आप (प्रियतम) में लगी हुई है।

महामति प्राणनाथ जी प्रेम भक्ति की सर्वोच्च व्याख्या करते हुए कहते हैं लोक, अलोक की गिनती है। क्षर, अक्षर (दोनों) की सीमा निर्धारित है परन्तु परब्रह्म का प्रेम निराला है, जो इन सब सीमाओं को पार कर 'अक्षरातीत' से मिला देता है।

इस प्रकार प्रेम साधना में भक्ति का महत्व दर्शाते हुए महामति प्राण-नाथ जी ने वास्तविक उपासना या इबादत में इसकी महिमा की व्याख्या बड़े रोचक ढंग से की है जो अद्वितीय है।

ज्ञान

प्रेम साधना के अन्तर्गत जिस प्रकार 'भक्ति' का महत्व है, उसी प्रकार ज्ञान की प्रधानता स्पष्ट है।

हक़ीकत अथवा सत्यता को समझने के लिए 'ज्ञान' का होना अति-आवश्यक है। अतः इबादत या उपासना के लिए 'ज्ञान' की प्रधानता अनिवार्य है। अपने विवेक अथवा ज्ञान के आधार पर ही प्रत्येक व्यक्ति अपने चारों ओर बिखरी ईश्वरीय प्रदत्त अनेक वस्तुओं का अवलोकन करता है, तथा उसके प्रति अनुकूल व्यवहार प्रकट करता है।

महामति प्राणनाथ वाह्य आडम्बरों पर आधारित किसी बात को

नहीं मानते थे, वरन् स्वतः ज्ञान के आधार पर उसका स्पष्टीकरण करते हुए एक स्थान पर कहते हैं—

कोई कहे दान बड़ा, कोई कहे ग्यान।
कोई कहे विग्यान बड़ा, यों लरें सब उनमान ।।
(सनन्ध १५–३)

अर्थात्, कोई कहता है कि दान बड़ा है और कोई ज्ञान को बड़ा कहता हैं तथा कोई विज्ञान की महिमा बतलाता है परन्तु बिना 'विवेक' के सभी आपस में लड़ते हैं।

इसी तथ्य को और स्पष्ट करते हुए महामति प्राणनाथ जी आगे कहते हैं—

ए मत वेद वेदान्त की शास्त्र सबों ए ग्यान।
सो साधू लेकर दौड़हीं आगे मोह न देवे जान ।।
(सनन्ध ५–३४)

अर्थात्, वेद शास्त्र, पुराण सबका एक ही अभिप्राय है, साधु सन्त इनका ज्ञान लेकर ही आगे बढ़ते हैं, परन्तु अज्ञानता एवं मोह के कारण वे आगे बढ़ने में असमर्थ हो जाते हैं।

करना सारा एक रस हिन्दू मुसलमान।
धोखा सबका भान के, सबका कहूंगी ग्यान ।।
(सनन्ध ३–३)

महामति प्राणनाथ के अनुसार 'समस्त' को एक समान बनाना है, चाहे वह हिन्दू हो अथवा मुसलमान हो, सभी लोगों का संशय दूर करके, सबको विवेक और 'ज्ञान' के आधार पर सत्यधर्म का बोध कराना है।

ग्यान लिया कर दीपक अंधेर आप ना गम।
इतदीपक उजाला क्या, करे, ए तो चौदे तबकों तम ।।
(सनन्ध ४–२३)

अर्थात्, दीपक की भाँति अल्प ज्ञान होने से अपनी भी परख करना असम्भव है तो इस प्रकार का दीपक क्या प्रकाश करेगा जहाँ चौदह लोक ही अंधकार में डूबा हुआ है।

यामें ज्यों ज्यों खोजिए, त्यों त्यों बंध पड़ते जाए :
कै उदम जो करही, तो भी तिमर ना छोड़े ताए ।।

(सनन्ध ४–३६)

महामति प्राणनाथ जी कहते हैं कि इस विश्व में जितना अन्दर प्रवेश किया जाए, उतना ही कष्टदायक बन्धन प्रतीत होता है, असंख्य ज्ञानियों ने इस अज्ञानता के अंधकार से निकलने का प्रयास किया परन्तु असफल रहे। इसी संदर्भ में वे आगे कहते हैं—

वरना वरनों खोजिया जेती बुनी आदम।
एता दृढ़ किने ना किया, कहा खसम कौन हम ।।

(सनन्ध ५–१०)

अर्थात्, वर्ण एवं आश्रम, तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, ब्रह्मचारी, गृहस्थ, बानप्रस्थी, संन्यासी तथा सभी मानव जाति, उसकी खोज करते रहे, परन्तु यह सुनिश्चित नहीं कर पाये कि मैं स्वयं कौन हूँ और परब्रह्म का निवास स्थान कहाँ हैं।

कतेब बुजरक कहावहीं सो याही सुन चाहे।
सो गले सब इतही, आगे ना निकसे पाए ।।

(सनन्ध ५–३९)

अर्थात्, कतेब के ज्ञाता कहलाने वाले ज्ञानी भी शून्य निराकार तक पहुँच सके, और अंतिम सीमा तक पहुँच कर सब समाप्त हो गये और आगे कदम बढ़ाने में असफल रहे।

जो कोई ऐसा मिले सो देवे सब सुध।
माएनें गुझ बताए के, कहे वतन की बिध ।।

(सनन्ध ५–६२)

महामति प्राणनाथ कहते हैं, कि योग्य गुरु यदि मिल जाय तो वही सब प्रकार की जानकारी प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हो सकता है तथा सभी प्रकार के गूढ़ार्थ को सरल बना कर परब्रह्म धाम का परिचय करा सकता है।

महामति प्राणनाथ के अनुसार उपर्युक्त तथ्य बहुत ही दुर्लभ हैं, इसी संदर्भ में वे आगे कहते हैं—

ऐसा तो कोई न मिल्या जो दोनों पार प्रकास।
मगन पिया के प्रेम में भी स्यापन ग्यान उजास ।।

(सनन्ध ५–६१)

अर्थात्, ऐसा गुरु प्राप्त नहीं हो सका जो दोनों प्रकार की जानकारी दिला सके, तथा परमेश्वर के प्रेम का अनुभव जिसे हो, और सत्य का ज्ञान करा सके।

इस प्रकार 'प्रेम साधना' में विवेक अथवा 'ज्ञान' का प्रमुख स्थान है जिसके अभाव में भक्ति भी अधूरी रह जाती है, और 'भक्ति' के अभाव में उपासना या इबादत असम्भव है।

कर्म

उपासना या इबादत का स्वरूप मुख्यत: कर्म पर आधारित है तथा भक्ति एवं ज्ञान के साथ सम्पूर्ण कर्म का समर्पण ईश्वर के प्रति किया जाता है।

प्रेम साधना एवं सत् कर्म के आधार पर ही ईश्वर की प्राप्ति सम्भव है और दोनों लोक में उसकी ही साधना सफल होगी जो पूर्ण रूप से कर्म पर विश्वास रखता है और उस पर अमल करता है।

महामति प्राणनाथ कर्मकाण्ड एवं वाह्य-आडम्बरों पर विश्वास नहीं करते थे। वे प्रेम-भक्ति एवं सत्-कर्म के द्वारा परमात्मा से मिलने का मार्ग प्रशस्त करते हुए कहते हैं—

कोई कहे करम बड़ा कोई कहेवि काल ।
कोई कहे साधना बड़ा. यों लरें सब पंपाल ।।

(सनन्ध १५–४)

अर्थात्, कोई कहता है कि कर्म सब से बड़ा है और कोई काल को प्रधानता देते हैं तथा कोई प्रेम साधना की प्रशंसा करते हैं। परन्तु प्राणनाथ के अनुसार यह सभी वाह्य आडम्बर एवं कर्मकाण्ड के विवाद में पड़े हुए हैं।

कर्म की सत्यता को और अधिक स्पष्ट करते हुए महामति प्राणनाथ जी कहते हैं—

कोई कहे बड़ा तीरथ, कोई कहे बड़ा तप ।
कोई कहे सील बड़ा, कोई कहेवे सत् ।।

(सनन्ध १५–५)

अर्थात्, कोई तीर्थयात्रा की बड़ाई करता है तो कोई तप को ही बड़ा मानता है, कोई शील एवं विवेक को बड़ा कहता है और कोई सत्य की प्रशंसा करता है, परन्तु 'सत्कर्म' के बिना सभी अधूरा है।

कोई कहे बड़ी करनी, कोई कहे मुगत ।
कोई कहे भाव बड़ा, कोई कहे भगत ।।

(सनन्ध १५–७)

महामति प्राणनाथ के अनुसार संसार में सभी के मत भिन्न हैं। कोई कहता है कि कर्म प्रधान है और कोई मुक्ति को ही सर्वोत्तम मानता है। किसी को भाव में आस्था है और कोई भक्ति को श्रेष्ठ मानता है, इस प्रकार विभिन्न मतों के विभेद में वास्तविक सत्कर्म से सभी लोग दूर हट गये हैं।

ना जीव करम न काल कोई, गंध नहीं बल ग्यान ।
तीर्थंकर भी इत गले, जो कहावे सदा प्रवान ।।

(सनन्ध ५–४६)

कर्म की वास्तविकता को दर्शाते हुए प्राणनाथ जी कहते हैं—"कर्म और मृत्यु का फेरा नहीं अर्थात् पुनरावृत्ति नहीं होती, यह ज्ञान की शक्ति एवं गंध से परे है, तीर्थंकर भी यहां आकर चले गये और केवल सत् कर्म से ही वे अमर हैं। सत् कर्म के विषय में लोगों को जागृत करने के उद्देश्य से ही महामति प्राणनाथ कहते हैं—

ए खाबी दम सब नींद लो दम नींद के आधार।
जो कदी आगे बल करे, तो गले नींद में निराकार।।

(सनन्ध ५–४६)

अर्थात्, इस सुनहरे ख्वाबों की दुनिया में लोग नींद में डूबे हुए हैं—यह लोग इसी नींद में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। यदि कभी इस भव-सागर रूपी सांसारिकता से आगे निकलने की चेष्टा की तो नींद रूपी महासागर की परिधि में फंस कर उसी में डूब गये अर्थात् वास्तविक सत् कर्म से बहुत दूर चले गये।

ए जो साधू सास्त्र पुकार हीं सो तो सुनता है संसार।
पर गुझ किन हूँ न पाइया, सोई सबद है पार।।

(सनन्ध ५–५६)

सांसारिकता के माया मोह से बाहर निकलने तथा इस भवसागर रूपी मृत लोक से साफ बचकर निकलने का मार्ग महामति प्राणनाथ ने कई स्थलों पर लोगों को बतलाया और इसी संदर्भ में वे कहते हैं कि—

संत वाणी को सभी लोग सुनते हैं परन्तु वास्तविक प्रेम वाणी को सुनने में प्रायः लोग असमर्थ रहे जबकि यही सत्कार्य उन्हें इस भवसागर से पार ले जाने वाले हैं।

खुदा न देवे दुख किन को पर मारत है तकसीर।
पटक-पटक सिर पीटहीं रोंसी राने राए फ़कीर।।

(सनन्ध २६–५)

महामति प्राणनाथ कहते हैं कि खुदा किसी को कष्ट नहीं देता, परन्तु अपराधी को उसके अपराध की सजा अवश्य मिलती है। उसका मीज़ान (तराजू) सब के लिए एक समान हैं, वे कहते हैं कि गरीब-अमीर राजा-प्रजा साधु-सन्त एवं गृहस्थ, सभी अपराधी हो सकते हैं तो सभी को समान पीड़ा को सहन करना पड़ेगा।

एता मासक पुकारिया पर तो भी न छूट्या फंद।
दन्त बीच जुबाँ काटहीं, हाय-हाय हुए बड़े अंध ॥

(सनन्ध २६–१०)

महामति प्राणनाथ कहते हैं कि उस पाक बेन्याज़ (ईश्वर) ने हमें बहुत आवाज़ें लगाईं परन्तु हम ग़ाफ़िल रहे और मुड़ कर देखा भी नहीं, इस प्रकार से व्यस्त हो गये थे कि सत् कर्म की ओर ध्यान ही नहीं गया और अन्त में दाँतों से जबान (जिह्वा) को काटेंगे और स्वीकार करेंगे कि हमारे जैसा अन्धा कोई नहीं है।

कर्म की प्रधानता को स्पष्ट करते हुए महामति प्राणनाथ कहते हैं कि—

हद की बांधी सब दुनियाँ, हक तरफ न करे नज़र।
पीठ दे हद बेहद को, यों हादी हक देवे ख़बर ॥

(सनन्ध ३०–४)

महामति प्राणनाथ कर्म के विषय में बहुत जागरूक हैं, इसी विषय में वे कहते हैं कि कर्म बन्धन में लोग जकड़े हुए हैं, परब्रह्म (खुदा) की ओर किसी का ध्यान ही नहीं जाता, जबकि सत्गुरू हमें क्षर, अक्षर से परे अक्षरातीत परब्रह्म का संदेश सुनाते हैं और सत् कर्म की ओर निरन्तर हमें उन्मुख करते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उपासना या इबादत के अन्तर्गत भक्ति, ज्ञान, तथा कर्म का महत्वपूर्ण स्थान हैं, और बिना इन तीनों गुणों के सहयोग से कोई भी परमात्मा के समीप 'सच्चा' नहीं सिद्ध हो सकता। अतएव महामति प्राणनाथ अपनी पुस्तक ''कुलजम स्वरूप'' के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व को जागृत करते हुए भक्ति, ज्ञान एवं कर्म के सद्मार्ग पर सभी का आह्वान करते हैं।

नैतिक एवं सामाजिक दर्शन

(माया और इब्लीस)

अध्याय ८

नैतिक एवं सामाजिक दर्शन (माया और इब्लीस)

इस अध्याय के अन्तर्गत 'माया' का विशेष उल्लेख किया गया है। अतएव सर्वप्रथम यह समझ लेना अति आवश्यक है कि माया का अभिप्राय क्या है ?

माया की संरचना एवं स्वरूप

महामति प्राणनाथ के अनुसार, "माया का काल्पनिक स्वरूप समस्त नैतिक एवं सामाजिक दर्शन में विद्यमान है। यह एक असत्य आवरण है जिसके पीछे अज्ञानता का एक समूह अकर्मण्य है।

माया मोह अहंकार थे, ए सबे उत्पन्न।
अहंकार मोह माया डंडी तन कहाँ है. ब्रह्म वतन ।।

(कि० २६–२)

अर्थात्, माया, मोह का यह जाल जब नष्ट हो जाएगा तो अहंकार भी समाप्त हो जाएगा। सब कुछ विनाश हो जाने पर केवल परब्रह्म का अस्तित्व (वजूद) ही शेष रह जाएगा।

चौदे भवन लग एही अंधेरी, झूठ को खोल झुठाई।
प्रकट नाम व्यास पुकारे सुकदेव साख पुराई ।।

(कि० ६–३)

महामति प्राणनाथ जी कहते हैं, कि "आकाश से पाताल तक चौदा तबक (लोक) के समस्त प्राणी 'माया' के अन्धकार में फंसे हुए हैं। कल्पना

के इस स्वरूप को एवं अहंकार के झूठे प्रलोभन को व्यास एवं शुकदेव जी ने भी परित्याग करना बताया है ।

'माया' के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए महामति प्राणनाथ कहते हैं कि भ्रम में पड़कर समस्त संसार अनोखा खेल खेल रहा है । त्याग की भावना को भुला कर विलासिता का जीवन अपनाने के लिए विवश करने वाली शक्ति 'माया' ही तो है, जो सर्वथा मिथ्या के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है । वे कहते हैं--

> ए भरम बाजी रची रागत, बहु विधे संसार ।
> ए जो नैनं देखे श्रवन सुते सब मूल बिना विस्तार ।।
>
> (कि० ८-५)

अर्थात्, सम्पूर्ण विश्व एक पहेली के अनुरूप प्रतीत हो रहा है, तथा समस्त कार्य व्यापार की ओर आँखें लगी हुई हैं, और कान सब बातों को सुनता रहता है, इन सब के पीछे माया का जाल फैला हुआ है, जिसे सहजता से देखना एवं उसे परखना असाधारण कार्य है ।

यदि गहनता के साथ अध्ययन किया जाय तो ज्ञात होता है कि माया अथवा इब्लीस का स्वरूप बहुत वृहत् है तथा इसकी 'संरचना' में मुख्यतः निम्नलिखित पदार्थों का योगदान विद्यमान है ।

छिति, जल, पावक, गगन, समीर, अहंकार, बुद्धि एवं मन । इन्हीं तत्वों पर माया की संरचना एवं स्वरूप आधारित है । इसी प्रकरण में महामति प्राणनाथ कहते हैं--

> किन माया पार न पाइयां किन कह्यो ना मूल वतन ।
> सरूप न कह्यो ब्रह्म को, कहे उत चले ना मन वचन ।।
>
> (कि० ७३-३)

अर्थात्, न तो आज तक कोई 'माया' का पार पा सका और न तो उसके वास्तविक धाम को जान सका, सच्चे परमेश्वर की व्याख्या समझे बिना वहाँ तक पहुंचने में सभी असमर्थता व्यक्त करते हैं ।

'माया' या इब्लीस' की विवेचना करते हुए महामति प्राणनाथ कहते हैं कि—

दजाल नजरों न आवही सब में किया दखल।
जाव दोस्त को दुसमन, कोई ऐसी फिराई कल ।।

(सनन्ध ३१-६)

अर्थात्, शैतान स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं पड़ता परन्तु सब में व्याप्त है। अन्दर से बुद्धि इस तरह घुमा दी है जिसके कारण सज्जन भी दुर्जन से प्रतीत होते हैं।

ए दजाल बड़ा जोरावर मूल गफलत याके साथ।
मनसा वाचा करमना ए सब इनके हाथ ।।

(सनन्ध ३१-११)

महामति प्राणनाथ कहते हैं कि यह शैतान (इब्लीस) बड़ा शक्तिशाली है जिसने नींद को अपना मंत्री बना रखा है, तथा मन, वचन, और कर्म से सबको वशीभूत कर रखा हैं जो चिर निद्रा में डूबे हुए हैं।

या बिध बांधी दुनियाँ खोल ना सके कोई बंध।
राह हक की छुड़ाए के ले डारे गफलत फंद ।।

(सनन्ध ३१-१६)

महामति प्राणनाथ कहते हैं कि "माया और इब्लीस" सभी को इस प्रकार अदृश्य बन्धनों से जकड़ लिया है कि सत्य मार्ग पर अवरोध उत्पन्न हो गया है और असत्य मोह के जाल में सभी फंसते चले जा रहे हैं।

नींद को रात कदर कहीं, दुनी ढूंढे खेल में रात।
कहे जो आजूज माजूज एतिन में गोते खात ।।

(सनन्ध ४१-४७)

अर्थात्, अज्ञानता की नींद को ही रात्रि की संज्ञा दी गयी है। कोई दूसरी रात पृथक नहीं है जिसे ढूंढ़ा जाये। 'मायावादी खेल' के अन्तर्गत आजूज-माजूज भी चक्कर काट रहे हैं।

दरिया रूप अंधेरी आदम रूप दजाला।
ए ही सरूप कुलीअ का, वैर बिखे लानती चाल ।।

(सनन्ध ४१-४८)

माया एवं मोह सागर को ही रात्रि की संज्ञा प्रदान की गयी है जिसके अन्तर्गत मानव के वेश में इब्लीस बसता है जिसके रोम-रोम में दुष्टता भरी हुई है, और वही कलयुग का दूसरा रूप धारण किये हुए है।

अजा जील जीव दुनी का ए जो कह्या माहें सब।
किया भूल पत्थर पर सेजदा, कहे हम किया ऊपर रब्ब ।।

(सनन्ध २४-२७)

महामति प्राणनाथ कहते हैं, कि "प्रत्येक मानव जाति के अन्दर इब्लीस (शैतान) का प्रवेश है जो गम्भीर अवज्ञाकारी है, वही सब के मन में बसा हैं और मूर्ति पूजा करवा रहा है फलस्वरूप लोग पत्थर को पूज्य मानते हैं और परब्रह्म का बोध करते हैं। यह उपक्रम माया और इब्लीस की प्रेरणा के अन्तर्गत ही किया जा रहा है।

बाहरे देखावें अबलीस वह कहया बैठा दिल पर।
कहे दोजख जलसी अबलीस, आप पाक होत यों कर ।।

(सनन्ध २४-२९)

अर्थात्, इब्लीस-शैतान, को बाहर ढूंढ़ते हैं जबकि वह दिल में प्रविष्ट हैं, शैतान को दोषी एवं दोज़खी ठहरा कर स्वयं पवित्र एवं निर्दोष बनना चाहते हैं, यह न्यायोचित नहीं हैं।

इस प्रकार वाह्य आडम्बरों एवं रूढ़ियों से ऊपर उठकर महामति

प्राणनाथ समस्त मानव जाति के लिए एक सुखद संदेश देते सत्य मार्ग का आवाहन करते हैं--

ए खेल झूठा जो देख हीं सो तो साँचे हैं साबित ।
तो कहा बड़ों की बुजरकी, जो झूठ न कर ही सत ।।

(सनन्ध २५-२८)

अर्थात् मायावी नाटक को देखने वाले लोगों यह पूर्णतया नश्वर और असत्य है । ब्रह्म सृष्टि ही सत्य है, इसमें कोई शक और सन्देह की बात नहीं है तथा महान आत्माओं का यशगान तभी होगा जब इस नश्वर को भी अमरत्व में बदलने का प्रयत्न करोगे ।

ए झूठा छल कठन कहूँ न किसी की गम ।
कहाँ वतन कहाँ खसम कौव जिमी कौन हम ।।

(सनन्ध ५-५)

महामति प्राणनाथ कहते हैं कि समस्त संसार मायावी कपट रूप धारण किये हुए है, जो अत्यन्त भ्रामक है, इसके विषय में किसी को पूर्ण जानकारी नहीं है । फिर हम निःसन्देह कैसे कह सकते हैं कि परब्रह्म कहाँ है ? उसका धाम कहाँ हैं ? हम कौन हैं और हमारा निवास कहाँ हैं ?

ऊपर तले माँहे बाहेर दसो दिसा सब एह ।
छोड़ याके कोई ना कहे ठौर खसम का जेह ।।

(सनन्ध ५-१९)

अर्थात्, समस्त ब्रह्माण्ड में एवं सभी दिशाओं में 'माया' का ही स्वरूप व्याप्त है । इसको अलग करके परमात्मा का निवास स्थान सुनिश्चित नहीं किया जा सकता ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि माया और इब्लीस सभी पर हावी हैं और उन्हीं की प्रेरणा कुप्रथाओं और दुष्कर्मो में व्याप्त होती हैं ।

भूल गइया खेल में, जो मोमन है समरथ।
नूर इमाम को मुझपे, केहे, समझाऊँ अरथ ॥

(सनन्ध १२–७)

महामति प्राणनाथ कहते हैं कि "इस मायावी संसार में आकर ब्रह्म सृष्टि भूल गये। जो पूर्णरूप से अपने को जागृत कहलाते हैं, वे नहीं जानते कि परब्रह्म की कृपा दृष्टि मेरे ऊपर है, जिसके द्वारा मैं सभी भेद को समाप्त कर दूंगा।"

माँग लिया खसम पें ए छल तुम देखना।
जो कदी भूली छल में, तो फेर न आवे ए दिन ॥

(सनन्ध १२–१४)

अर्थात्, आत्माओं की ओर संकेत करते हुए प्राणनाथ जी कहते हैं कि परब्रह्म से तुमने यह 'माया' देखने को माँगी है, कदाचित इस 'माया' में भूल गये हो तो पुनः यह अवसर प्राप्त नहीं होगा।

सुन निराकार पार को खोज खोज रहे कै हार।
बो होतों बहुविध ढूंढया, पर किया न किनें निरधार ॥

(कि० ५२–४)

महामति प्राणनाथ के अनुसार इस मायामय संसार से परे शून्य के पार की खोज करते-करते लोग थक गये एवं विभिन्न प्रकार से अलग-अलग अपना मत व्यक्त करते रहे, परन्तु माया से परे 'निरंकार' की वास्तविकता सुनिश्चित करने में सभी असमर्थ रहे।

अन्ततः महामति प्राणनाथ स्वयं इस 'माया' और परब्रह्म के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहते हैं—

निबेरा क्षीर नीर का महामत करे कौन और।
माया ब्रह्म चिन्हाए के, सतगुरु बतावें ठौर ॥

सत्गुरु की महत्ता को दर्शाते हुए महामति प्राणनाथ कहते हैं कि क्षीर-नीर तथा ब्रह्म-माया का वास्तविक स्वरूप एवं गुण-कार्य की विवेचना बिना सत्गुरु के असम्भव है। अतएव माया के जाल से निकल कर मोक्ष की ओर लौटने में ही सब का कल्याण सम्भव है।

नैतिक एवं सामाजिक दर्शन

'कुलजम स्वरूप' के अनुसार महामति प्राणनाथ जातिप्रथा, रूढ़िवादिता एवं वंश परम्परा को नहीं मानते। वे मनुष्य के कर्म को प्राथमिकता प्रदान करते हुए उनकी सामाजिक उपयोगिता पर बल देते हैं। कुलजम स्वरूप में स्पष्ट रूप से बतलाया गया है कि मनुष्य को सर्वप्रथम मनुष्य के रूप में ही अपनी उपयोगिता सिद्ध करना चाहिए। उसके पश्चात् नैतिक एवं सामाजिक सुधार पर बल देना चाहिए। नैतिक एवं सामाजिक दर्शन की प्रधानता को सुनिश्चित करने के पश्चात् ही महामति प्राणनाथ ने धर्म-दर्शन एवं भक्ति-भाव की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया तथा जाति-पाँति एवं लिंग-भेद के बन्धन से ऊपर उठकर आपने मुक्त-भाव से समाज की सेवा की है। 'माया' और 'इब्लीस' के बन्धन से निकल कर वास्तविक जीवन की ओर ले जाने का सफल प्रयास भी आपने किया।

> इन खेल में जो खेल हैं सो के हेत न आवे पार।
> इन भेषों में भेष सो भही, सो कहूँ नेक विचार।।
>
> (सनन्ध १४–३)

महामति प्राणनाथ के अनुसार, इस मायामय नाटक की बहुत-सी लीलाएँ हैं जिनका वर्णन करना कठिन कार्य है परन्तु इस स्वांग में जिन्होंने वेष धारण किए हैं, उनके सम्बन्ध में अपना विचार प्रकट करता हूँ।

नैतिक एवं सामाजिक दर्शन का रहस्योद्घाटन करते हुए महामति प्राणनाथ कहते हैं—

> अजूं देखाऊँ नीके कर ए जो खेंचा खैंच करत।
> ए झूठै झूठा राज हीं, पर सुध न काहूँ परत।।
>
> (सनन्ध १५–१)

अर्थात्, और भी स्पष्ट रूप से दिखलाते हुए प्राणनाथ कहते हैं कि ये जो खैंच तान में लगे हुए हैं, स्वयं असत्य रूपी माया के प्रपंच में रचे-बसे हुए हैं। किसी को किसी तरह की जानकारी नहीं है। वास्तविकता को स्पष्ट करते हुए आगे वे कहते हैं—

अब गुझ बताऊँ खेल का, झूठे खेले कर साँच।
ए नीके देखो मोमिनों, ए जो रहे मेहेजबों राँच ।।

(सनन्ध १४–१)

अर्थात्, इस मायामय संसार का रहस्य स्पष्ट करते हुए प्राणनाथ कहते हैं कि मिथ्या होने पर भी मायामय नाटक को लोग 'सत्य' मान कर चल रहे हैं, ब्रह्म सृष्टि की ओर संकेत करते हुए उन्हें पूर्ण रूप से जागृत करते हैं और सम्प्रदायवाद से मुक्त होकर नैतिक एवं सामाजिक दर्शन का स्पष्ट रूप प्रस्तुत करते हैं।

"प्रणामी" समाज के अन्तर्गत हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, क्षत्रिय, ब्राह्मण तथा निम्न स्तर के शूद्र को भी एक समान अधिकार प्राप्त हैं।

मध्य युग में सामाजिक दशा इतनी बिगड़ चुकी थी कि संकीर्णता के अतिरिक्त भक्ति-भाव का कोई महत्व नहीं रह गया था।

नैतिक एवं सामाजिक दर्शन के वास्तविक दर्पण को दिखलाते हुए महामति प्राणनाथ, समाज के सभी वर्गों की उन्नति एवं भलाई के लिए प्रयत्नशील रहे तथा शासन की कट्टर पन्थी नीतियों के विरुद्ध अपनी आवाज़ बुलन्द करने में तनिक भी संकोच नहीं किया।

ऐसी विषम परिस्थिति में जबकि नारी की दशा अत्यन्त दयनीय हो गयी थी, महामति प्राणनाथ नैतिकता के वास्तविक स्वरूप को ध्यान में रख कर, अपनी सुयोग्य पत्नी बाई जी को अपने साथ रखते थे तथा नारी को समान अधिकार दिलाने के लिए ही आपने ऐसा आदर्श लोगों के सम्मुख प्रस्तुत किया।

इस प्रकार मनुष्य के आदर्श जीवन में रहन-सहन, पाप-पुण्य, भक्ति-

भाव, धर्म एवं कर्म में वे नारी को बराबर का भागीदार बनाना चाहते थे, जिससे स्पष्ट होता है कि नैतिक एवं सामाजिक दृष्टि से 'आप' ने एक महान समाज सुधारक के रूप में 'उदित' होकर इस भवसागर रूपी संसार से सभी को मुक्त करने का निर्णय लिया था।

माया और इब्लीस से बार-बार सावधान करते हुए मनुष्य को वास्तविक जीवन में उच्चकोटि की दार्शनिकता से अवगत कराया।

"नैतिक एवं सामाजिक दर्शन" के अन्तर्गत महामति प्राणनाथ विश्व के सभी प्राणियों से हार्दिक सद्भाव रखते हैं तथा सब के सम्मुख एकता का मार्ग ग्रहण करने का प्रस्ताव भी रखते हैं।

खसम एक सबन का नाहीं दूसरा कोए।
ए विचार तो करें जो आप साचें होए॥
(सनन्ध १५–२२)

महामति प्राणनाथ कहते हैं कि परब्रह्म सब का एक है, उसके अतिरिक्त और दूसरा कोई स्वामी नहीं है, परन्तु इस प्रकार का विचार वही कर सकता है जो स्वयं सच्चा हो। अतः सभी को 'सच्चा मानव' बनने हेतु नैतिक एवं सामाजिक बुराइयों से ऊपर उठना आवश्यक है।

आपसी मतभेदों के कारण ही 'नैतिक एवं सामाजिक दर्शन' की आन्तरिक छवि धूमिल होते देख कर महामति प्राणनाथ बोल पड़े—

कोई कहे सदा सिव बड़ा, कोई कहे आद नारायण।
कोई कहे आदे आद, माता, यो करत तानों तान॥
(सनन्ध १५–१२)

एवं,

कोई कहे सकल व्यापक देखीता सब ब्रह्म।
कोई कहे ए सब से न्यारा यों करे लड़ाई भूले भरम॥
(सनन्ध १५–१४)

अर्थात्, कोई सदा शिव को महान बतलाते हैं तथा कोई आदि नारायण की बड़ाई करते हैं, कोई आदि भक्ति की प्रशंसा करते हैं।

इस प्रकार सभी आपसी मत-भेद में पड़कर समाज का नैतिक पतन करने में व्यस्त हैं तथा ब्रह्म को कभी व्यापक मानते हैं तथा कभी उसे सर्वत्र मानते हैं, कोई उसे सबसे पृथक मानता है, इस प्रकार आपसी मतभेद के कारण सभी संशय में पड़कर एक दूसरे से लड़-झगड़ रहे हैं।

महामति प्राणनाथ के अनुसार, मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसे सभी से मिल-जुल कर रहना चाहिए, और भक्ति, ज्ञान; कर्म के द्वारा 'माया' या 'इब्लीस' पर विलय प्राप्त करना चाहिए जिससे मृत्यूपरान्त 'मोक्ष' की प्राप्ति हो सके तथा आत्मा-परमात्मा से मिल कर अमर हो जाय। परन्तु आज कल लोग ईर्ष्या एव द्वेष की भावना से प्रेरित होकर एक-दूसरे का अहित करने में जुटे हुए हैं और अन्तिम सफ़र की कल्पना भी नहीं करते, जब उन्हें मृत्यु के पश्चात् अपने ही भाई-बन्धु अपने हाथों से जला कर उन्हें नष्ट कर देंगे। इसी भावना से प्रेरित होकर महामति प्राणनाथ कहते हैं—

रूह गयी, जब अंग थे, जब अंग हाथों जालें।
सेवा जो करते सनेह सों, सो सन मंध ऐसा पालें।।

(सनन्ध १६-१२)

समाज के सभी वर्गों को सचेत करते हुए प्राणनाथ कहते हैं, शरीर से आत्मा जब निकल जाती है तब उसी शरीर का अग्नि संस्कार उसके सगे-सम्बन्धी अपने हाथों से करते हैं तथा जिसकी इतने प्यार से सेवा-सुश्रुषा करते थे, उसी के साथ इस प्रकार का सम्बन्ध निभाते हैं। 'माया-मोह' के प्रपंच में फंस कर मनुष्य यह समझता है कि हमें सदैव इसी संसार में रहना है और समस्त सांसारिक वैभव को एक साथ भोग लेने की इच्छा रखता है, तथा इस नश्वर शरीर को विशेष रूप से सजीला बनाये रखने का प्रयत्न भी करता है, और यह भूल जाता है कि जिस काया (शरीर) पर इतना मान-गुमान है उसे एक दिन नष्ट होकर शून्य में विलीन हो जाना है। इसी तथ्य को स्पष्ट करते हुए प्राणनाथ कहते हैं—

हाथ पाँव मुख नेत्र नासिका सोई अंग के अंग।
तिन छूत लगाई घर को प्यार था, जिन संग ।।
(सनन्ध १६-१३)

अर्थात्, हाथ-पाँव, मुख, नैन तथा नासिका सभी अंग यथावत रहते हैं परन्तु उसी के द्वारा मकान अछूत (अपवित्र) बन गया जिसके साथ मृत्यु से पहले अगाध प्रेम था। अतः इस नश्वर शरीर पर घमंड करना सर्वथा भूल है तथा इसी प्रसंग में महामति प्राणनाथ आगे कहते हैं--

अंग सारे प्यारे लगते खिन एक रह्यो न जाए।
चतन चले पीछे सो अंग, उठ-उठ खाने धाए ।।
(सनन्ध १६-१४)

समाज के सभी वर्गों को सावधान करते हुए तथा जीवन के वास्तविक स्वरूप को दर्शाते हुए महामति प्राणनाथ कहते हैं कि--"ये दुनियावी लोग माया में फंस कर मन मोहक शरीर के साथ इस तरह रच-बस गये कि क्षण भर का भी वियोग नहीं सह सकते, परन्तु निष्प्राण हो जाने के पश्चात् वही शरीर अब भयानक लगने लगा।"

नैतिक एवं सामाजिक दर्शन का वास्तविक रूप स्पष्ट करते हुए जीवन के गूढ़ रहस्य का विमोचन करते हुए महामति प्राणनाथ कहते हैं—

सनमंधी जल चल गया अंग बैर उपज्या ताए।
सो तब ही जलाए के, लियो सौ घर बटाए ।।
(सनन्ध १६-१५)

अर्थात्, शरीर से जब आत्मा (रूह) निकल गयी तब सब उसके शरीर के दुश्मन बन गये, उसी क्षण उसे अग्नि में भस्म करके तत्काल बंटवारा कर लेते हैं।

छोड़ सगाई रूह की करें सगाई आकार।
वैराट को हेड़ा या विध, उलटा से कै प्रकार ।।
(सनन्ध १६-१५)

अर्थात्, आत्मा का सम्बन्ध छोड़ कर लोग शरीर से सम्बन्ध रखते हैं जो नष्ट हो जाने वाली है, तथा सम्पूर्ण विश्व में ऐसी कुप्रथा व्याप्त है जो वास्तविकता से परे उनके उलझनों में फंसे पड़े हैं।

उपरोक्त सभी साक्ष्यों द्वारा महामति प्राणनाथ 'जीवन' के सर्वाङ्गीण विकास हेतु नैतिक एवं सामाजिक दर्शन का बहु दर्पण समाज के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं जो अनूठा एवं अद्वितीय है।

कुरान शरीफ के अनुसार

नैतिक एवं सामाजिक दर्शन के अन्तर्गत "सच्चे मुसलमान" की व्याख्या करते हुए महामति प्राणनाथ कहते हैं—

कहो कलमाहक कर ल्यो भाएने कुरान।
पाक दिल रूह पाक, दम, या दीन मुसलमान।।

(सनन्ध २१–९–११)

अर्थात्, कुरान का कथन है कि खुदा के कलाम को सच्चे दिल से पढ़ो और उसी के अनुसार इबादत करो, जिसके द्वारा हृदय और आत्मा, पवित्र एवं निर्मल होकर मनुष्य का जीवन सफल बनाते हैं। प्राणनाथ के अनुसार वास्तव में सच्चे मुसलमान का धर्म इन्हीं तत्वों पर आधारित होना चाहिए।

पाँच बख़त सल्ली करे दिल दरदा आन सुभान।
सुने ना कान कुफार की, या दीन मुसलमान।।

(सनन्ध २१–१२)

अर्थात्, नैतिक एवं सामाजिक दर्शन की रूप-रेखा खींचते हुए महामति प्राणनाथ मुसलमानों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करते हैं, और दिल में दर्द रख कर पाँच बार अल्लाह की बन्दगी (नमाज) अदा करने हेतु सन्देश देते हैं, तथा प्रत्येक बुराई से दूर रह कर अपना 'कर्तव्य पालन' करने का निर्देश भी देते हैं जो कि वास्तविक मोमिन का फर्ज़ अथवा कर्तव्य है।

कसनी लेवे आप सिर साफ़, रोजे रमज़ान ।
रात दिन याही जो समें, या दीन मुसलमान ।।

(सनन्ध २१–१३)

महामति प्राणनाथ के अनुसार मोमिन यदि उत्तम बनना चाहता है तो वह शरीर को कष्ट देकर परिश्रम के साथ रमज़ान शरीफ़ के महीने में निर्मल होने के लिए रोज़ा (व्रत) रखे और रात-दिन इबादत में मश्गूल (व्यस्त) रहे, यही लक्षण सच्चे मुसलमान के हैं जो नैतिक एवं सामाजिक जीवन में सफलता प्रदान करते हैं :

माएने ले चीन्हें आप को, को रसूल पेहेचान ।
वतन सुध करे हक़ की या दीन मुसलमान ।।

(सनन्ध २१–१४)

अर्थात्, कुरान शरीफ़ के वास्तविक एवं गूढ़ अर्थ को समझकर, अपनी पहचान करना चाहिए, तभी ह० मु० सल्ल० की पहचान हो पायेगी, और अपने असल घर (परमधाम) एवं परमब्रह्म की ओर ध्यान आकृष्ट होगा, तभी एक सच्चे मुसलमान की परिभाषा भी सार्थक होगी ।

यामे कई ना विराना अपना, ए देखे सब समान ।
यासे न्यारे ज़ाने मोमन या दीन मुसलमान ।।

(सनन्ध २१–२३)

नैतिक एवं सामाजिक दर्शन की परिभाषा को चरितार्थ करते हुए महामति प्राणनाथ मुसलमानों का सम्बोधन करते हैं । वे कहते हैं कि ऐ मोमिनो समस्त विश्व को समान दृष्टि से देखो यहां अपना पराया कोई नहीं है ; तथा ब्रह्म आत्माओं की हक़ीकत को भली-भाँति समझो, यही उच्च कोटि के मोमिन के गुण हैं ।

देखन मोमन खातर रचिया खेल सुभान ।
अब मोमन क्यों भूल ही पाई हक़ीकत फ़ुरमान ।।

(सनन्ध १६–३६)

महामति प्राणनाथ के अनुसार ब्रह्म सृष्टि को दिखलाने वास्ते ही परब्रह्म (खुदा) ने विश्वरूपी मायामयी नाटक की रचना कर दी, अतएव सच्चे मोमिन गफ़लत की नींद नहीं सो सकते क्योंकि इन्हें सत् सन्देश (कुरान) प्राप्त हो चुका है ।

समस्त मानव जाति के व्यक्तिगत चरित्र को ऊँचा उठाने के उपाय तथा ईश्वर के प्रति प्रेम एवं उपासना का स्वरूप स्पष्ट करते हुए महामति प्राणनाथ जीवन के नैतिक एवं सामाजिक उत्थान पर सदैव बल देते रहे । इसके लिए आप ने कुरान शरीफ़ का गहन अध्ययन भी किया तथा ह० मुहम्मद सल्ल० की महानता को स्वीकार करते हुए 'उनके' बतलाये मार्ग का आप ने आजीवन अनुसरण किया, तथा लोगों को बतलाया कि ह० सु० सल्ल० वास्तव में ईश दूत नबी हैं—

सबद सारे बैराट के बोलत अगम-अगम ।
कोई ना कहे रसूल बिना, जो खुद पें आए हम ।।

(सनन्ध ५–६३)

अर्थात्, समस्त विश्व की वाणी, परमात्मा तक पहुँचने में अपने को असमर्थ मानती है । परन्तु ईशदूत ह० मु० सल्ल० ने सिद्ध कर दिया कि 'मैं' परमात्मा के पास से आया हूँ ।

ए नबिए जाहेर कह्या, मैं पार से आया रसूल ।
खुद की सुध सब ल्याइया, निद्रा न मेरा मूल ।।

(सनन्ध ५–६४)

महामति प्राणनाथ कहते हैं कि पैगम्बर ने स्वयं स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है कि मैं ईशदूत नबी, बन कर आया हूँ । परमात्मा की विवरण एवं पवित्र पुस्तक 'कुरान' मेरे साथ है तथा मेरा 'मूल' मोह तत्व नहीं है । अर्थात् माया-मोह से परे निर्विकार है ।

कुरान शरीफ के सविस्तार अवलोकन से ज्ञात होता है कि—सम्पूर्ण अरब वासियों की स्थिति में सुधार लाने के लिए ह० मु० सल्ल० ने घोर

प्रयत्न किया और एकेश्वरवाद के द्वारा सभी धार्मिक कुप्रथाओं का समाधान ढूंढ़ निकाला।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सम्पूर्ण कुरान, नैतिक एवं सामाजिक दर्शन के विशाल आधार पर सुसज्जित है जबकि ह० मु० सल्ल० से पहले बहुदेववाद की सीमा अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँच गयी थी, मूर्ति-पूजा की प्रथा बहु प्रचलित थी, तथा समाज में नारी का स्थान शून्म के बराबर भी नहीं था, लड़कियों को पैदा होते ही जीवित अवस्था में कब्र के अन्दर दफ़न कर दिया जाता था। पति-पत्नी स्वतन्त्र रूप से विवाह का विच्छेदन (तलाक) कर सक़ते थे तथा व्यभिचार पर एक दूसरे की निन्दा भी नहीं करते थे। ब्याज़, जुआ तथा शराब आम बातें थीं। इस प्रकार हम जब तत्कालीन वस्तु स्थिति का अध्ययन करते हैं तो नैतिक एवं सामाजिक दर्शन के सभी लक्षण साक्षात दिखलाई पड़ते हैं जो किसी भी देश एवं समाज के नाम पर कलंक स्वरूप था।

ह० मु० सल्ल० के अथक प्रयास, कड़ी मेहनत एवं सत्यनिष्ठा के कारण ही सभी कुप्रथाएँ एवं रूढ़िवादिता का अंत हुआ तथा पुन: समाज में नारी को उच्च स्थान प्राप्त हो सका।

महामति प्राणनाथ का सम्पूर्ण जीवन मनुष्यों की भलाई एवं उसके विकास में समाप्त हुआ, समाज में फैली हुई सभी बुराइयों को दूर करने हेतु आपने कुरान शरीफ़ का अध्ययन किया तथा हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए नैतिक एवं सामाजिक दर्शन की रूपरेखा प्रस्तुत की जिसके आधार स्वरूप 'कुलज़म स्वरूप' का आविर्भाव हुआ। इसी तथ्य को स्पष्ट रूप देते हुए प्राणनाथ कहते हैं।

करना सारा एक रस हिन्दू मुसलमान।
धोखा सब का भान के, सब का कहूँगी ज्ञान ।।

(सनन्ध ३–३)

अर्थात्, समस्त को एक समान बनाना है, हिन्दू हो या मुसलमान सबका संशय दूर करके सभी को सत्य का बोध कराना है जिससे लोग नैतिक एवं सामाजिक दर्शन का वास्तविक रूप पहचान लें तथा माया

और इब्लीस के बहकाने में पड़ कर एक दूसरे का अहित ना सोचें और ना करें।

मैं देखे सब खेल में, पंथ पैंड़े दरसन।
देखी इस्क बंदगी सबकी, जैसा आकीन सबन ।।

(सनन्ध ३–५)

सम्पूर्ण विश्व का अवलोकन करते हुए महामति प्राणनाथ कहते हैं, मैंने सभी धर्म मार्गों को भली-भाँति देखा है, सभी के प्रेम और भक्ति के दर्शन भी किये तथा सभी प्रकार के श्रद्धा एवं विश्वास का परिचय प्राप्त किया है। यदि मानव प्राणी इस मायामय भवसागर से पार होना चाहता है तो उसे शरीयत और कर्मकाण्ड के स्तर से ऊपर उठना होगा।

मोक्ष अथवा नजात तथा जागनी का स्वरूप

(कुलजम स्वरूप द्वारा सोदाहरण)

अध्याय ६

मोक्ष अथवा नजात तथा जागनी का स्वरूप

महामति प्राणनाथ के अनुसार, इस मायामय सांसारिक बन्धन से निकलकर यदि कोई व्यक्ति उच्च-ज्ञान के द्वारा अज्ञानता से परे हो जाय तो उसे सहज ही मुक्ति प्राप्त हो जाती है। और यही मुक्ति उस व्यक्ति के लिए 'मोक्ष' का मार्ग प्रशस्त करती है। अर्थात् निरंतर अच्छे कर्म करते रहने से ही मोक्ष की प्राप्ति सम्भव है।

महामति प्राणनाथ कहते हैं कि अच्छे कर्मों के फलस्वरूप मनुष्य को अच्छा फल भी मिलता है, अतएव उसी फल की प्राप्ति के आधार पर मोक्ष का मार्ग भी प्रशस्त होता है। परन्तु यह तभी सम्भव है जब मनुष्य अपने अन्दर के विकार को समाप्त कर दे, तथा सम्पूर्ण रूप से पवित्र एवं निर्मल बन जाये।

> विकार सारे अंग के काम क्रोध दिमाग़।
> सो बिना विरहा ना जले होए नहीं दिल पाक ॥
>
> (सनन्ध २७–१३)

महामति प्राणनाथ कहते हैं, सम्पूर्ण शरीर विकारों से भरा हुआ है, तथा काम, क्रोध, लोभ एवं अहंकार से मानव जाति अलग नहीं हैं, किन्तु इसे स्वच्छ एवं निर्मल बनाने के लिए प्रेम-भक्ति एवं कड़ी साधना की आवश्यकता है, जिससे सम्पूर्ण विकार नष्ट हो जाएँ, तत्पश्चात् ही मनुष्य 'मोक्ष' की कल्पना कर सकता है।

क़यामत अथवा प्रलय की पुष्टि एवं श्रेष्ठता को स्पष्ट करते हुए महामति प्राणनाथ कहते हैं कि जब प्रलय होगा तब सभी वस्तुएँ नष्ट हो

जाएंगी, केवल एक परमात्मा ही अपने वास्तविक स्वरूप में शेष रहेगा और पुण्य आत्माएँ अपने परब्रह्म से एकाकार होकर उसी में विलीन हो जाएँगी, और यही मिलन ही मूल रूप से मोक्ष की चरम स्थिति होगी। प्रलय के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए 'वे' कहते हैं।

आकाश जिमी, जड़ मूल से, पहाड़ आगजल वाए।
फिरया कतरा नूर का और दिया सब उड़ाए ॥
(सनन्ध ३७–६३)

अर्थात्, पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश से निर्मित ये 'विश्व' अक्षर की दृष्टि पड़ते ही पल भर में नष्ट हो जाएगा, केवल परमात्मा का अस्तित्व ही शेष सुरक्षित रहेगा।

इन घाव के पड़ घाव से, उडसी, चौदे तबक।
और आवाज के नूर से बैठे भिस्त में कर हक़ ॥
(सनन्ध ३७–६४)

महामति प्राणनाथ कहते हैं, एक 'भोंपू' के बजने से समस्त विश्व नष्ट हो जाएगा, साथ ही साथ सबको जीवन मुक्ति अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति भी हो जायेगी, और सांसारिक क्रम चक्र समाप्त हो जाएगा।

आख़िरत अथवा कयामत की पुष्टि आसमानी किताबों 'तौरेत' जबूर इन्जील तथा कुरान से भी हो चुकी है। तथा सम्पूर्ण धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन के पश्चात् महामति प्राणनाथ प्रलय के विषय में इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं।

पहले दिये सब उड़ाए के चौदे तबक दम जे।
काजी कजा के नूर से भिस्त में बैठे नूर लें ॥
(सनन्ध ३७–६५)

अर्थात्, पहले चौदह लोक के प्राणियों का अन्त कर दिया जाएगा, उसके बाद परब्रह्म (खुदा के प्रताप तुफैल) से सबको दिव्य तन होकर

अखण्ड मुक्ति अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति होगी। सभी सांसारिक वस्तुएँ परब्रह्म का यशगान करते हुए अपने-अपने कर्तव्य का पालन कर रहीं हैं, परन्तु मनुष्य माया चक्र में फँस कर भवसागर में गोता लगा रहा है और अपना कर्तव्य भूल गया है। इसी तथ्य को स्पष्ट करते हुए महामति प्राणनाथ कहते हैं,

जिमि हद न छोड़हीं ना हद छोड़े जल।
रुत रंग सब हुकमें होवे चल विचल।।
(सनन्ध ३८—२३)

अर्थात्, पृथ्वी, जल तेज, वायु, आकाश सब मर्यादा का पालन कर रहे हैं, बिना आज्ञा चल-विचल नहीं हो सकते, किन्तु परमात्मा के एक संकेत मात्र से ही सब नष्ट हो जाएंगे।

इस प्रकार हम देखते हैं कि समस्त ब्रह्माण्डों पर एक पूर्ण ब्रह्म (अक्षरातीत) का शासन है और उसी की आज्ञा-पालन में ही सबकी भलाई निहित है, जिसके माध्यम से ही मनुष्य मुक्ति की चरम सीमा तक पहुँचने में सफल हो सकता है।

महामति प्राणनाथ के अनुसार मनुष्य की मुक्ति तभी सम्भव है जब वह सत् कर्म करे और माया के जाल से निकलने का प्रयास करे। इसके लिए अथक परिश्रम एवं नियम-संयम की आवश्यकता हैं, मनुष्य छल-कपट एवं व्यभिचार से दूर रह कर निःस्वार्थ भाव से प्रेम भक्ति का मार्ग ग्रहण करे तथा अपने चारों ओर फैले माया के प्रदूषण को अपने सत्कर्मों द्वारा नष्ट कर दे तभी परमात्मा उसे मोक्ष प्रदान करता है।

इस प्रकार सिद्ध हो जाता हैं कि सभी बातों का सार कर्म पर ही आधारित है, तथा ज्ञान के अनुसार कर्म एवं कर्म के अनुसार व्यक्ति फल अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति करता है।

नींद उड़ाए जब चीन्होंगे आप को,
तब जानोगे मोहोल यों रचनाओं।।
तब आपै घर पाओगे, अपनों देखोगे, अलख लखानों।।
(कि० २-४)

महामति प्राणनाथ कहते हैं, जब भ्रम रूपी नींद से जागोगे तब अपने आप को तथा इस संसार रूपी विशाल महल की वास्तविकता से अवगत हो जाओगे तभी मोक्ष की मन्ज़िल भी मिल पायेगी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महामति प्राणनाथ कर्म को प्रधान मानते हैं, तथा जो व्यक्ति ज्ञान अर्जित करके सत्कर्म की ओर बढ़ता है। उसे मोक्ष अथवा नजात की प्राप्ति अवश्य ही होगी। महामति प्राणनाथ कहते हैं कि ब्रह्म तथा माया का अन्तर केवल एक सत्गुरू ही कर सकता है, तथा भ्रम की नींद से जागृत करके वास्तविक 'धाम' तक पहुँचने में सहायता प्रदान करता है, तथा आत्मा का परमात्मा से पुनर्मिलन करा के उसे मोक्ष अथवा नजात दिला सकता है।

मोक्ष अथवा नजात की प्राप्ति के लिए, महामति प्राणनाथ समस्त मानव जाति को वाह्य आडम्बरों एवं कुप्रथाओं से दूर रहकर सत् कर्म के लिए सब का आवाहन करते हुए कहते हैं।

ए खेल झूठा जो देखें ही सो तो साचें है साबित।
तो कहा बड़ों की बुजरकी, जो झूठ न कर ही सत् ॥

(सनन्ध २५–२८)

महामति प्राणनाथ कहते हैं माया रूपी नाटक को देखने वालो, यह पूर्णतया नश्वर और मिथ्या है, केवल 'परमात्मा' का अस्तित्व ही सत्य है, यह बात निर्विवाद है कि पुण्य आत्माओं के बताए हुए मार्ग पर चल कर ही अमरत्व को प्राप्त किया जा सकता है तथा अच्छे कर्मों के बदले सांसारिकता से ऊपर उठकर ही 'मोक्ष' रूपी मुक्ति को प्राप्त किया जा सकता है।

मोक्ष की प्राप्ति के लिए सत् गुरू की नितान्त आवश्यकता है। आत्म स्वरूप को पहचानने के बाद मनुष्य अच्छें कर्म की ओर उन्मुख होता है, जिससे अखन्ड शान्ति की प्राप्ति होती है, अज्ञानता के कारण लोग माया के प्रपंच में उलझे हुए हैं, यदि एक सत्गुरू मिल जाये तो सभी संशय दूर कर के इस भवसागर से पार कर दे।

जाको तुम सत् गुरू कर सेवो ताको इतनी पूछो खबर ।
ए संसार छोड़ चलेंगें आपन, तब कहाँ है अपनो घर ।।
(कि० ११–३)

अर्थात्, आदर्श गुरू ही वास्तविक धाम की जानकारी दे सकता है, वही माया मोह के भवसागर से पार ले जाकर असीम सुख की अनुभूति कराने में समर्थ है, तथा मोक्ष अथवा नजात के मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं को दूर करते हुए सत्कर्मों के बदले वही परम गुरू ही मुक्ति तथा शान्ति दिला सकता है ।

यामे सत्गुरू मिले तो संसे मानें पैंड़ा देखावें पार ।
तब सकल सबद को अरथ उपजे, सब गम पड़े संसार ।।
(कि० २३–७)

महामति प्राणनाथ सत्गुरू की महत्ता को स्वीकार करते हुए कहते हैं कि यदि सच्चा गुरू मिल जाये तो सभी बुराइयाँ दूर हो सकती हैं । तब सत्कर्म द्वारा 'ज्ञान' अर्जित करके इस माया रूपी सागर से पार होना आसान हो जाएगा ।

जागनी का स्वरूप

सत्य की वास्तविकता से अवगत कराने को 'जागनी' कहा गया है । अनेकों महापुरुष पीर, पैगम्बर, और सूफ़ी सन्तों ने जो अथक प्रयास किया है, उसे हम 'जागनी' कहते हैं । जिस प्रकार मनुष्य स्वप्न देखता है तथा उसके प्रभाव से जो अनुभूति प्राप्त करता हैं, वह सत्य से परे है, और निद्रा टूटते ही वास्तविकता का आभास हो जाता है । इसी प्रकार आत्मा जब देह रूपी आवरण के अन्तर्गत सोने लगती है तो इसको 'जगाना' आवश्यक हो जाता है ।

समयानुसार अनेकों धार्मिक गुरू एवं (औलियाएकराम) ने मनुष्य को उसकी वास्तविकता से अवगत कराया है और परमात्मा के स्वरूप एवं उसके साथ 'आत्मसात' हो जाने की जो राह हमें दिखलाई हैं. उसमें

'जागनी' की ही प्रमुखता है। इसी संदर्भ में महामति प्राणनाथ ह० मु० सल्ल० की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं :—

> जिन सिर लई बात रसूल की, कदम धरे कदम।
> इन कलमें के हक से; न्यारा नहीं खसम ।।
>
> (सनन्ध १९-३१)

अर्थात्, जिन्होंने ह० मु० सल्ल० के मन्तव्य को स्वीकार कर लिया तथा उनके मार्ग का अनुसरण करते रहे। उनके बतलाए हुए कलमा को जिसने दृढ़तापूर्वक स्वीकार किया है, वे परम परमेश्वर (परब्रह्म) के निकट-वर्ती हो गये। इसी संदर्भ में जागनी के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए महामति प्राणनाथ कहते हैं कि—

> कछुक करके आकीन, कलमा सुन सी कान।
> तिन भी सिर कजा समें, लगती जाए आसमान ।।
>
> (सनन्ध १९-३७)

महामति प्राणनाथ कहते हैं, कि थोड़ा सा भी विश्वास करके जो कलमा अथवा मन्त्र को सुन लेंगे, उन्हें भी अंत समय में मुक्ति मिल सकती है, अतएव जागनी के महत्व को समझते हुए मनुष्य को सत्य मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। दुष्कर्म करने वालों को सावधान करते हुए प्राणनाथ कहते हैं।

> बैठे न पर सके, सके न रोए विकल।
> आखर जाहेर हुए, पीछे, आग हुए जल बल ।।
>
> (सनंध २७-२३)

अर्थात्, पाप एवं दुष्कर्म करने वालों की ऐसी दशा होगी, उन्हें उठते-बैठते सोते-जागते किसी भी हालत में चैन नहीं मिलेगा—अन्त में पाप प्रगट होने पर तो उन्हें जलाया ही जाएगा। इसी तथ्य को और स्पष्ट करते हुए महामति प्राणनाथ आगे कहते हैं।

पीछे पछतावा क्या करे, जब लगी दोजख आए ।
इसी वास्ते, पुकारे रसूल, मेहेर दिल में ल्याए ।।

(सनन्ध २६-३३)

महामति प्राणनाथ कहते हैं, पीछे पश्चाताप करने से क्या लाभ होगा जब अग्नि सिर पर जलने लगेगी । इसी कारण ईश दूत (रसूल) ने पहले से ही चेतावनी दे दी थी, परन्तु 'जागनी' स्वरूप इस कृपा दृष्टि को विरले ही समझते हैं और लाभान्वित होते हैं ।

महामति प्राणनाथ जीवनपर्यन्त इसी आदर्श पथ पर चलते रहने की प्रेरणा देते रहे तथा सोये हुए पथभ्रष्ट लोगों को 'जागनी' के माध्यम से ईश्वर की पहचान एवं सत्य की परख दर्शाते रहे ।

अब नींद हमारी क्यों रहे, इन बखत दिए जगाए ।
जागे पीछे, झूठी भोम में, क्यों कर रह्यो जाए ।।

महामति प्राणनाथ कहते हैं कि वास्तविकता को समझ लेने के पश्चात् अब हम निद्रावस्था में क्यों पड़े रहें जब कि हमारे गुरू ने हमें नींद से जगा दिया है, और जागने के बाद अब इस नश्वर संसार में हम क्यों फंसे रहें । उच्चकोटि के मार्ग दर्शक एवं संदेशवाहक के रूप में महामति प्राणनाथ आगे कहते हैं—

मोहे भेजी धनी ने, तुम को बूलावन ।
साथ जी मिलके चलिए, जाइए अपने वतन ।।

अर्थात्, महामति प्राणनाथ ने सबको बतला दिया कि परमात्मा ने आप सब को सप्रेम वापस बुलाया है । और मैं संदेश लेकर आप सब को 'जगाने' तथा अपने प्रियतम तक पहुंचाने के लिए ही आया हूं ।

इस प्रकार 'जागनी' की कुंजी लेकर महामति प्राणनाथ इस भवसागर में पधारे तथा 'सत्य-ज्ञान' को सर्वत्र बिखेर दिया । उपर्युक्त तथ्य को और स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं—

महामत कहें मूल पतियाँ आओ निज बतन।
विलास करो विध विध के, जागो अपने तन ।।

(कि० ८०–१५)

महामति प्राणनाथ कहते हैं कि प्रियतम के साथ अठखेलियाँ करती हुई सब सखियाँ अपने घर की ओर चलो क्योंकि नाना प्रकार के सुखों का भोग करते हुए वहाँ पर तुम सब अपने मूल स्वरूप को पहचान कर जागृत हो जाओ और मोक्ष को प्राप्त कर लो।

महामति प्राणनाथ कहते हैं कि 'मोक्ष' की प्राप्ति के लिए 'जागनी' का 'उपक्रम', अत्यन्त फलदायक है तथा इसके लिए प्रेम साधना अत्यन्त आवश्यक है, प्रेम मार्ग को कठिन एवं दुरूह बतलाते हुए महामति प्राणनाथ कहते हैं—

कठिन निपट विकट घाटी प्रेम की
अबंक बंको सूरों किने न अगमाए।
धर तरवार पर सचर सिनगार कर।
अंग सांगा रोम-रोम भराए ।।

(सनन्ध ६–२)

अर्थात्, वे कहते हैं, प्रेम मार्ग का चढ़न। अत्यन्त मुश्किल अथवा दुरूह है, कंटकाव्रत होने से शूरबीर भी नहीं चल सकते, शृंगार करके तलवार की धार पर चलना होगा तथा सामने बरछियों की मार पड़ेगी जिससे रोम-रोम पीड़ित हो जाएँगे, परन्तु प्रेम-मार्ग से पार होते ही 'मोक्ष' का दरवाजा अपने-आप खुल जाएगा। इसी सन्दर्भ में आगे कहते हैं—

घाट अब घाट सिल पाट अति सलबली,
तहां हाथ ना टिके पपील पाए।
वाओ वाए वढ़े आग फैलाए चढ़े,
जले पर अनल ना चले उड़ाए।

(सनन्ध ६–५)

अर्थात्, माया रूपी (भवसागर) का किनारा इतना दुर्घट, चिकना तथा फिसलने वाला है, कि हाथ तो क्या चींटी का पैर भी नहीं जमता, वायु के प्रवाह से आग प्रज्ज्वलित हो उठती है तथा आग में पंख जल जाने के कारण हवा भी उड़ाने में सहायक नहीं होती।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रेम की डगर बड़ी कठिन हैं परन्तु इसको पार करना ही मनुष्य का वास्तविक धर्म है, जो केवल 'जागनी' के माध्यम से ही सरलतापूर्वक सम्भव हो सकता है।

पेहेन पाखर गज घंट बजाए चल बैठ संकोड़ सुई नाके समाए,
डार आकार संभार जिन ओसरे, दौड़ चढ़ पहाड़ सिर झांप खाए।
(सनन्ध ६–६)

महामति प्राणनाथ कहते हैं, यदि मोक्ष की प्राप्ति चाहते हो तो 'जागनी' के माध्यम से हाथी के समान झूल पहन कर घंटों की आवाज करते हुए आगे बढ़ो, तथा संकुचित बन कर सुई के छिद्र में घुसना है और ऊँचे पर्वत पर चढ़कर गहरी खाई में सिर के बल छलांग भी लगाना है। कहने का तात्पर्य यह है कि ईश्वर के अनन्य भक्त को प्रत्येक समय सावधान एवं 'जागृत' रहना चाहिए तथा प्रत्येक कठिनाई के सहन करने का साहस भी होना चाहिए, तभी दुर्गम मार्ग को पार करना सम्भव हो सकता है।

बहुत बंध फ़न्द धंध अज़ू के बीच में।
सो देखे अलेखे मुख भाखन आवे।
निराकार सुन पार के पार पीउ वतन।
इत हुकम हाकिम बिना कौन आवे।
(सनन्ध ६–७)

महामति प्राणनाथ कहते हैं, इसके मध्य अनेक प्रकार के भयावह बंधन हैं, जो देखने में स्पष्ट हैं परन्तु अवर्णनीय हैं शून्य निराकार (क्षर) के आगे अक्षर का धाम है, इससे आगे परब्रह्म का परमधाम है, यहाँ अक्षरातीत के

आदेश के बिना किसी का भी प्रवेश असम्भव है, परन्तु 'जागनी' के माध्यम से सभी कार्य सुगमता पूर्वक सम्भव हो सकते हैं--

मन तन वचन लगे तिन उतपन,
आस पिया पास बाध्यो विश्वास।
कहे महामत इन भाँत तो रंग रत्ती दे,
पियाएँ आग्याँ जाग करूँ विलास।

(सनन्ध ६-८)

अर्थात्, 'जागनी' द्वारा 'मन' में वचनों की चोट से आशा का अंकुर जाग उठा तथा प्रियतम से मिलने का भरोसा हो गया। महामति प्राणनाथ कहते हैं, जो लोग इस प्रकार बिरह रस में लीन हो जाएँ, उन्हें परब्रह्म अवश्य ही जागृत करके ब्रह्मानंद रस का पान करायेंगे, और मुक्ति प्रदान करेंगे।

महामति प्राणनाथ, अपने 'प्रियतम' से मिलने का सुगम साधन 'विरह' को मानते हैं, इसके द्वारा मनुष्य जागृत होकर परब्रह्म से जा मिलता है, तथा मोक्ष प्राप्त करता है। इसी तथ्य को स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं--

ए विध मोहे तुम दई अपनी अंगना जान।
पर्दा बीच टालने, ताथें विरहा प्रवान।।

(सनन्ध ७-१२)

अर्थात्, परम परमेश्वर ने हमें अपनी अर्धांगिनी समझ कर ही यह 'विरह वेदना' प्रदान की है, वे कहते हैं कि परब्रह्म से मिलने का सुगम साधन विरह ही है।

इस्क बड़ा रे सब में ना कोई इस्क समान।
एक तेरे इस्क बिना उड़ गई सब जहान।।

(सनन्ध ६-१)

प्रेम साधना को उचित एवं उत्तम बतलाते हुए महामति प्राणनाथ कहते हैं प्रेम सबसे महान है जिसकी समता कोई नहीं कर सकता, एक आपके

प्रेम बिना सम्पूर्ण विश्व कुछ भी नहीं है, अतएव प्रेम साधना के माध्यम से 'जागृत' होकर मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति करना नितांत आवश्यक है।

एक अनेक हिसाब में और निराकार निर्गुन।
न्यारा इस्क हिसाब थे, जो कछू न देखे तुम बिन ॥

(सनन्ध ६—४)

प्रेम की प्रधानता को स्पष्ट करते हुए महामति प्राणनाथ कहते हैं कि जीव से लेकर शून्य, निराकार तक सब की गणना करने के पश्चात् ज्ञात हुआ कि प्रेम की महिमा निराली है जिसकी दृष्टि केवल प्रियतम में लगी रहती है, अतएव प्रेम साधना ही एक मात्र ऐसा साधन है जिसके द्वारा 'जागृत' होकर इस माया रूपी भवसागर से मुक्त हो सकते हैं।

लोक आलोक हिसाब में, हिसाब जो हद बेहद।
न्यारा इस्क जो पीउ का, जिन किया आद लों रद ॥

(सनन्ध ६—३)

मोक्ष अथवा नजात के उचित मार्ग को दर्शाते हुए महामति प्राणनाथ कहते हैं कि लोक अलोक की गिनती है, एवं क्षर-अक्षर की भी सीमा निर्धारित है, परन्तु परब्रह्म का प्रेम निराला है, जो इन सभी सीमाओं को पार कर अक्षरातीत से मिला देता है, अतएव, प्रेम साधना ही 'जागनी' का मुख्य स्वरूप है, जिसके द्वारा समस्त संसार के लोगों को मुक्ति मिल सकती है।

———

उपसंहार

अध्याय १०

उपसंहार

महामति प्राणनाथ कृत कुलजम स्वरूप और इस्लाम धर्म के मूल तत्वों अर्थात् दार्शनिक, धार्मिक, नैतिक एवं सामाजिक के तुलनात्मक अध्ययन के फ़लस्वरूप एक निष्पक्ष शोधकर्ता को यह स्पष्ट हो जाता है कि सातवीं शताब्दी में विकसित मूलतः कुरान शरीफ पर आधारित इस्लाम धर्म एवं सत्रहवीं शताब्दी में आविर्भूत महामति प्राणनाथ कृत कुलजम स्वरूप में एक विशिष्ट प्रकार की मौलिक साम्यता पायी जाती है।

यद्यपि इस्लाम धर्म एवं प्रणामी धर्म दोनों ही भिन्न-भिन्न काल में भिन्न-भिन्न देश में, एवं भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में विकसित हुए, परन्तु दोनों का मौलिक लक्ष्य या उद्देश्य एक ही था और वह था मनुष्य या इन्सान को उसकी सीमित दायरे (परिधि) से विकसित कर परमात्मा या खुदा के नजदीक (समीप) लाकर विराटता या असीमता प्रदान करना जिससे विश्व मानवता, विश्व धर्म एवं विश्व संस्कृति की नींव पड़ सके।

महामति प्राणनाथ ने इस्लाम धर्म, हिन्दू धर्म तथा अन्य धर्मों की मौलिक एकता को लक्ष्य में रखते हुए इस्लाम धर्म और हिन्दू धर्म की इस ढंग से युगानुकूल व्याख्या की कि उनका मौलिक तत्व सुरक्षित रहे, लेकिन जो उनमें वाह्य आडम्बर एवं रूढ़िवादिता आ गयी है, जो कर्मकाण्ड या शरीयत का स्थूल रूप आ गया है, लोग उससे ही न चिपके रहें।

महामति प्राणनाथ ने बहुत ज़ोरदार शब्दों में कहा कि शरीयत या कर्मकाण्ड को ही सब कुछ मामना धार्मिकता या आध्यात्मिकता नहीं है, कुलजम स्वरूप के माध्यम से उन्होंने इस्लाम धर्म की आत्मा कुरान शरीफ़

की अपने ढंग से विशिष्ट व्याख्या की। अल्लाह उसके रसूल, उसकी इबादत रोज़ा, नमाज़ का उन्होंने विस्तार पूर्वक वर्णन किया।

असली हिन्दू और असली मुसलमान वही है जो धर्म के शरीर या कर्म-काण्ड अथवा शरीयत से नहीं चिपकता।

महामति प्राणनाथ ने हज़रत मुहम्मद सल्ल० और उनके मुअज्ज़िज़ा की सवाँह उमरी भी लिखी है और वह अपने हर मोमिन से आशा करते थे कि जैसे वे हिन्दू धर्म के मूल तत्वों से परिचित हैं वैसे ही इस्लाम धर्म से पूर्ण परिचित हों।

१७वीं शताब्दी में शरीयत को घटा कर इस्लाम धर्म के सूक्ष्म तत्वों के आधार पर महामति प्राणनाथ ने इस्लाम धर्म को सर्वश्रेष्ठ धर्म माना, वह अपने आपको मुहम्मद सल्ल० का सच्चा अनुयायी मानते थे, इसीलिए उन्होंने सोई खुदा सोई ब्रह्म का नारा दिया। जिस प्रकार उन्होंने हिन्दू समाज के कर्मकाण्ड, कुरीतियों तथा रूढ़ियों की निन्दा करते हुए हिन्दू धर्म की नई व्याख्या की, और उसके विराट रूप का अभिवादन किया, उसी प्रकार उन्होंने इस्लाम धर्म के स्थूल शरीयत की भी आलोचना की, और कहा कि वह सच्चा मुसलमान नहीं है जो केवल शरीयत को ही सम्पूर्ण धर्म मानता है।

वह मानते थे कि इस्लाम धर्म सारी इन्सानियत को मिलाने के लिए है, उनके अनुसार हर मोमिन का कर्तव्य है कि वह सम्पूर्ण मानव जाति को अपना भाई समझे क्योंकि सभी मानव एक ही जगह की मिट्टी से बनाये गए हैं तथा जुल्म और अत्याचार खुदा को नापसंद हैं, अतएव अत्याचार के बदले सहानुभूति का परिचय देना ही सच्चे मुसलमान का वास्तविक धर्म है।

औरंगज़ेब को इस्लाम धर्म का यही विराट स्वरूप समझाने के लिए सनन्ध (सनदे कुरान) नाम के ग्रंथ को लिखा, जिसे वह औरंगज़ेब को भेंट करना चाहते थे। सम्भवतः वह अकेले हिन्दू सन्त हैं जो कुरान और इस्लाम धर्म की इतने विराट रूप में व्याख्या करते हैं।

महामति प्राणनाथ ने जागनी और कयामत को एक रूप में प्रयोग किया है तथा कमायाम के स्थूल अर्थ से ऊपर जाकर अपनी सूक्ष्म व्याख्या प्रस्तुत की है और अपनी जागनी को आन्दोलन का अंग बनाया।

यदि कुलजम स्वरूप की सूक्ष्म व्याख्या का विशिष्ट प्रकार से अवलोकन करें तो स्पष्ट होता है कि कयामत का वास्तविक अर्थ प्रलय नहीं वरन् महासबेरा है, महाक्रान्ति का प्रातःकाल है, जहाँ सभी आत्माएँ जग जाएँगी, गिरे हुए जमाने में सभी मनुष्य कब्र की तरह हो गये हैं और उनके अन्दर उनकी आत्मा मर सी गयी है, उनकी सोई हुई आत्मा को 'सोई खुदा सोई ब्रह्म' का संदेश देकर, सच्चे प्रेम या सच्ची इबादत को सिखा कर वे संसार के सभी इन्सानों को जगाना चाहते थे, यही उनके जागनी का संदेश था, और यही संदेश वे औरंगजेब तथा तात्कालीन सभी राजाओं को देना चाहते थे।

तत्कालीन हिन्दू धर्म तथा इस्लाम धर्म के लिए यही उनका महत्वपूर्ण योगदान है। इस आध्यात्मिक एवं सामाजिक समानता के साथ-साथ महामति प्राणनाथ ने अपने कुलजम स्वरूप के द्वारा सामाजिक समानता का भी संदेश दिया, तथा इसीलिए उन्होंने ऊँच-नीच छुआछूत का भेदभाव मिटाकर एक ऐसे इन्सानी समाज का सपना देखा जहाँ इन्सान-इन्सान का भेद-भाव नहीं, हिन्दू, मुसलमान, जैन, बौद्ध का भेद-भाव नहीं है।

महामति प्राणनाथ पहले मध्यकालीन सन्त हैं जो विश्व मानव समाज का सपना देखते हैं, और हिन्दू धर्म व इस्लाम धर्म के सामाजिक पक्ष को एक विराटता और महानता प्रदान करते हैं।

महामति प्राणनाथ सम्भवतः प्रथम हिन्दू सन्त है जो इस्लाम धर्म, ह० मुहम्मद सल्ल०, तथा कुरान शरीफ के प्रति ईमानदारी के साथ श्रद्धा और भक्ति से नमन करते हैं। वे इस्लाम को एक प्रगतिशील धर्म मानते थे जिन्हें खुदा का मेराज हुआ; और कुरान शरीफ़ को गीता तथा बाइबिल के समकक्ष मानकर उसके मूल तथा सैद्धान्तिक अर्थों की व्याख्या करते हैं। वे मानते थे कि जो केवल कर्मकाण्ड को धर्म समझता है, जो केवल मूर्तिपूजा, मन्दिर पूजा, छुआ-छूत आदि कर्मकाण्ड को ही हिन्दू-धर्म समझता है वह असली हिन्दू नहीं है।

इसी प्रकार जो अपनी सच्ची रूह से तरीक़त, हक़ीक़त, और मारफ़त को छोड़ कर केवल शरीयत के कर्मकाण्ड को अथवा केवल मस्जिद के अन्दर ही खुदा को मानता है वह सच्चा मुसलमान नहीं है। वह इस्लाम धर्म तथा कुरान शरीफ़ की वास्तविकता से पूर्ण परिचित नहीं है।

महामति प्राणनाथ मानते थे कि असली हिन्दू धर्म और असली इस्लाम धर्म में मूलत: विशेष अन्तर नहीं, इसमें जो अन्तर है वह बाहरी है और कर्मकाण्ड से सम्बन्धित है। वह देशकाल, परिस्थिति जन्य है और इसीलिए सत्य धर्म व दीन इलाही को समान मानते थे।

इस प्रकार सुस्पष्ट हो जाता है कि १७वीं शताब्दी में भी महामति प्राणनाथ सच्चे हिन्दू, सच्चे ईसाई और सच्चे मुसलमान थे, अथवा इन सबसे अतीत वे सच्चे विश्व मानव थे। आज भी इतना प्रगतिशील हिन्दू सन्त दुर्लभ है, अतएव अपनी उदार प्रवृति के कारण आज भी २०वीं शताब्दी में महामति प्राणनाथ विश्व धर्म संगम के प्रेरणा स्रोत हैं।

उचित ही है कि बहुचर्चित एवं सुविख्यात "गाँधी" नामक फ़िल्म के निर्माता एटनबरो ने स्वयं महात्मा गान्धी के मुख से यह कहलवाया है कि, संसार के सारे धर्मों को मिलाने की प्रेरणा मुझे "प्रणामी धर्म" अथवा महामति प्राणनाथ से मिली हैं।

इस प्रकार महामति प्राणनाथ तथा प्रणामी धर्मावलम्बी हिन्दू धर्म तथा इस्लाम धर्म को मूलत: एक समान मानते थे, उनकी यह मान्यता प्लेटफार्मी या दिखावटी नहीं थी।

अतएव हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि "महामति प्राणनाथ कृत कुलजम स्वरूप और इस्लाम धर्म" में निकटता का सम्बन्ध है।

कुलजम "कुलज़म" का तद्भव स्वरूप है। जिस प्रकार कुलज़म (दरियाएनील) से हज़रत मूसा अलै० और उनके साथी पार कर गये और कुलजम से सहायता लेकर तर गये, तथा क्रूर, पापी, बादशाह फ़िरऔन अपने सैनिक साथियों के साथ "कुलज़म" में ग़र्क, अथवा डूब गया।

ठीक इसी प्रकार कुलजम स्वरूप और इस्लाम धर्म के असली अनुयायी हैं जो अन्तरात्मा से खुदा या परब्रह्म को प्रेम करते हैं और उसकी आराधना या इबादत करते हैं, वही असली हिन्दू हैं, वही असली मुसलमान हैं, और वही भवसागर पार करेंगे, वही मोक्ष अथवा नजात पायेंगे, और वही परम-धाम या अर्शआज़म में शास्वत् और पूर्ण आनन्द को प्राप्त करेंगे।

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४६	२५	अमरान	इमरान
५३	२८	इन्लाम धर्म	इस्लाम धर्म
५७	३	कुरान	क़ुरआन
५६	१	क्षर्म	धर्म
६०	१	इश्लाम	इस्लाम
८५	१६	बर्काबिन	बरक़ह् बिन
८६	७	क्रमशः	(इसे निकालकर पढ़ा जाय)
६०	२३-२५	अबू अन्सारी	अय्यूब अन्सारी
६०	२६	सस्जिद	मस्जिद
६१	२३	(मुकद्दस)	(बैतुल मुकद्दस)
६१	२४	फ़िब्ला	क़िब्ला
६७	४	सन् १२ हिज़री	सन् ११ हिज़री
१०१	४	मुसलमा	मुसलमान
१११	२	कालम	कलाम
१११	१६	के खिलाफ़	के लिए
११४	२०	जरमस्ती	ज़रदश्ती
१३०	६	औज़ो	अऊज़ो
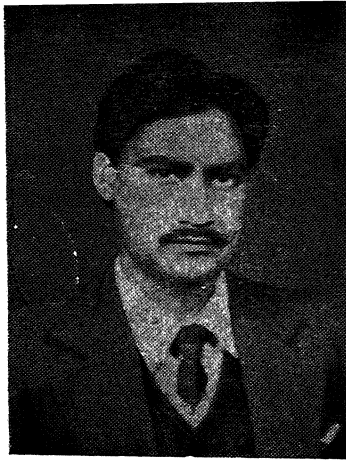
लेखक-परिचय

नाम : डॉ० अन्सारुल हक अन्सारी

उपनाम : अन्सार 'इलाहाबादी'

जन्म-तिथि : सात जनवरी, उन्नीस सौ चौवन (7-1-54)

जन्म-स्थान : ग्राम—भमई, पोस्ट—दीवानगंज, फूलपुर, इलाहाबाद

पिता : स्व० रहमत उल्ला अन्सारी

माता : स्व० बीबी आमना खातून

शिक्षा : डिप० संस्कृत, अदीब कामिल, एम०ए० द्वय —अंग्रेजी, हिन्दी, 'डी० फिल०'— इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

सेवाकार्य : सम्प्रति मण्डल रेल प्रबन्धक कार्यालय, उ० रे०, इलाहाबाद में कार्यरत

वर्तमान पता : अन्सार मंजिल, बी-1252/1, जी० टी० बी० नगर, करेली, इलाहाबाद

साहित्यिक सेवा :

1, प्रायश्चित, सच्चा प्रेम, कहानी-संगह अप्रकाशित (हिन्दी); 2. कश्मकश, गरीब नौकर, हाय मेरी उँगलियाँ अप्रका० (उर्दू); 3. अनमोल काव्य-गरिमा, कविता-संग्रह अप्रका० (हिन्दी); 4. गुले अन्सार, गजल व नज्म काव्य-संग्रह अप्रका० (उर्दू); 5. 'इन्द्रधनुष' काव्य-संग्रह में कविताएँ, गजल व नज्म प्रकाशित (हिन्दी)।

इसके अतिरिक्त अनेक पत्र-पत्रिकाओं में विविध प्रकार की रचनाएँ प्रकाशित तथा आकाशवाणी द्वारा प्रसारित एवं प्रशंसित।